Qabr Mein Aane Wala Dost (Hindi)

"क़ब्र जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है या दोज़ख़ के गढ़ों में से एक गढ़ा"

क़ब्र में आने वाला दोस्त

- वफ़ादार कौन ?
- सूदख़ोर की हलाकत
- मौत को याद करने का फ़ाएदा
- क़ब्र को जन्नत का बाग़ बनाने वाले आ'माल
- क़ब्र को जहन्नम का गढ़ा बनाने वाले आ'माल
- अ़ज़ाबे क़ब्र से महफ़ूज़ रहने वाले ख़ुश नसीब
- लूट के माल से हज करने वाले का अन्जाम

مكتبة المدينة (دعوت اسلامی)

المدينة العلمية (دعوت اسلامی)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़् : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा ।

दुआ़ येह है :

www.dawateislami.net

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले (اَلْمُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دار الفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

ता़लिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि

क़ब्र में आने वाला दोस्त

येह किताब **(क़ब्र में आने वाला दोस्त)**

मजलिसे अल मदी-नतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में पेश की है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस किताब को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है, इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

www.dawateislami.net

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,

तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद, गुजरात।

MO. 09374031409

E-mail : maktabahind@gmail.com

याद दाश्त

दौराने मुत़ा-लआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा

www.dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुत़ा-लआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा

www.dawateislami.net

''क़ब्र जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है या दोज़ख़ के गढ़ों में से एक गढ़ा।''
(اَلتَّرْغِیْب وَالتَّرْھِیْب ج٤ ص٢٠١،الحدیث٤١١٥)

क़ब्र में आने वाला दोस्त

www.dawateislami.net

पेशकश

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

(शो'बए इस्लाह़ी कुतुब, दा'वते इस्लामी)

नाशिर

मक-त-बतुल मदीना अह़मदआबाद

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم

नाम किताब : क़ब्र में आने वाला दोस्त
पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या
(शो'बए इस्लाह़ी कुतुब, दा'वते इस्लामी)
सिने त़बाअ़त : जुमादल अव्वल 1432 हि.
नाशिर : मक-त-बतुल मदीना अह़मदआबाद

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : ..... ह़वाला : .....

الحمد للّٰہ رب العلمین والصلوٰۃ والسلام علیٰ سید المرسلین وعلیٰ اٰلہ واصحابہ اجمعین

तस्दीक़ की जाती है कि किताब

''क़ब्र में आने वाला दोस्त''

(मत़्बूआ़ मक-त-बतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़रे सानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे अ़क़ाइद, कुफ़्रिय्या इ़बारात, अख़्लाक़ियात, फ़िक़्ही मसाइल और अ़-रबी इ़बारात वग़ैरा के ह़वाले से मक़्दूर भर मुला-ह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़-लतियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।

मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल (दा'वते इस्लामी)

26-11-2009

E-mail : ilmiya26@dawateislami.net
maktabahind@gmail.com
www.dawateislami.net

म-दनी इल्तिजा: किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

"अ़ज़ाबे क़ब्र बरह़क़ है" के 13 हुरूफ़ की निस्बत से **इस किताब** को पढ़ने की **"13 निय्यतें"**

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : " نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ o मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।"

(المعجم الكبير للطبراني، الحديث: ٥٩٤٢، ج٦، ص١٨٥)

दो म-दनी फूल :

﴾1﴿ बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़-मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

﴾2﴿ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

﴾1﴿ हर बार ह़म्द व ﴾2﴿ सलात और ﴾3﴿ तअ़व्वुज़ व ﴾4﴿ तस्मिय्या से आग़ाज़ करूंगा (इसी सफ़ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़-रबी इ़बारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) ﴾5﴿ ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और ﴾6﴿ क़िब्ला रू मुत़ा-लआ़ करूंगा। ﴾7﴿ क़ुरआनी आयात और ﴾8﴿ अह़ादीसे मुबा-रका की ज़ियारत करूंगा ﴾9﴿ जहां जहां "अल्लाह" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और ﴾10﴿ जहां जहां "सरकार" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा ﴾11﴿ शर-ई़ मसाइल सीखूंगा ﴾12﴿ अगर कोई बात समझ न आई तो उ़-लमा से पूछ लूंगा ﴾13﴿ किताबत वग़ैरा में शर-ई़ ग़-लती मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ करूंगा। (मुसन्निफ़ या नाशिरीन वग़ैरह को किताबों की अग़्लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़् : बानिये दा'वते इस्लामी, आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

الحمد لله على اِحْسَانِهٖ وَ بِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صلى الله تعالى عليه وسلم

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **''दा'वते इस्लामी''** नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्नो ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मु-तअ़द्दद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस **''अल मदी-नतुल इ़ल्मिय्या''** भी है जो दा'वते इस्लामी के उ़-लमा व मुफ़्तियाने किराम كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تعالٰى पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल छ शो'बे हैं :

رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه

(1) शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत
(2) शो'बए दर्सी कुतुब
(3) शो'बए इस्लाही कुतुब
(4) शो'बए तराजिमे कुतुब
(5) शो'बए तफ़्तीशे कुतुब
(6) शो'बए तख़्रीज

'' अल मदी-नतुल इ़ल्मिय्या'' की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़स्रे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती म-दनी काम में हर मुम्किन तआ़वुन फ़रमाएं और मजलिस की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ा-लआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **''दा'वते इस्लामी''** की तमाम मजालिस ब शुमूल **''अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या''** को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़-मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए। اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

र-मज़ानुल मुबारक 1425 हि.

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़ह़ा नम्बर	उ़न्वान	सफ़ह़ा नम्बर
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	9	अभी से तय्यारी कर लीजिये	33
वफ़ादार कौन ?	11	जन्नत का बाग़ या जहन्नम का गढ़ा	35
हम किस पर मेहरबान हैं ?	12	क़ब्र को जहन्नम का गढ़ा बनाने वाले आ'माल	35
पीछे क्या छोड़ा ?	13	चुग़ुल ख़ोरी	35
अहलो अ़याल को अपना सब कुछ समझने वाले	14	क़ब्र में आग भड़क रही थी	36
अपने आप को हलाकत में डालने वाला बद नसीब	14	ग़ीबत	37
क़ियामत के दिन अहलो अ़याल का दा'वा	15	ग़ीबत किसे कहते हैं ?	38
क्यूं रोते हो ?	16	अक्सरिय्यत ग़ीबत की लपेट में है	38
अ़मल ने काम आना है	18	नमाज़ न पढ़ना	39
मुर्दे की ह़सरत !	19	सियाह ख़च्चर नुमा बिच्छू	40
नेक व बद दोनों को ह़सरत होगी	20	वालिदैन की ना फ़रमानी	41
हम भी तुम्हारे पीछे आने वाले हैं	21	रैंकने वाला गधा	42
धोके में न रहिये	21	किन बातों में इ़ताअ़त की जाएगी ?	43
क़ब्र की पुकार	23	ज़कात न देने का वबाल	43
तन्हाई ही काफ़ी है	24	गन्जा सांप गले में डाल दिया जाएगा	45
दुन्या से जाने वालों को याद कीजिये	25	अ़ज़ाबात का दर्दनाक नक़्शा	45
एक दिन मरना है आख़िर मौत है	26	ज़कात किस पर फ़र्ज़ है ?	47
मौत को याद करने का फ़ाएदा	27	लूट के माल से ह़ज करने वाले का अन्जाम	47
अपनी मौत को याद कीजिये	27	शराब, ज़िना, ग़ीबत, झूटी क़समें	
हम पर क्या गुज़रेगी ?	29	खाना और रोज़ा न रखना	48
मुर्दे के सदमे	30	शराबी का अन्जाम	49
क़ब्र वाले किस पर रश्क करते हैं ?	32	ख़िन्ज़ीर नुमा मुर्दा	49

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़ह़ा नम्बर	उ़न्वान	सफ़ह़ा नम्बर
आग की कीलें	50	बद अ़क़्ली-दगी से तौबा	66
आग की लपेट में	50	मस्जिद रोशन करने की फ़ज़ीलत	69
जवानी में तौबा का इन्आ़म	50	मरीज़ की इ़यादत	70
पेशाब से न बचना	51	इ़यादत के म-दनी फूल	70
मिलावट करने की सज़ा	51	मरीज़ के लिये एक दुआ़	71
मिलावट का शर-ई हुक्म	52	म-दनी इन्आ़मात और इ़यादत	71
ग़ुस्ले जनाबत में ताख़ीर	54	सूरए मुल्क पढ़ने का इन्आ़म	73
ग़ुस्ले जनाबत में ताख़ीर कब ह़राम है	54	क़ब्र में सूरए मुल्क पढ़ी जा रही थी	73
जनाबत की ह़ालत में सोने के अह़काम	55	क़ब्र में फ़िरिश्ता क़ुरआन पढ़ाएगा	74
सूदख़ोर का अन्जाम	56	सूरए यासीन शरीफ़ की ब-र-कत	74
मुर्दा उठ बैठा	57	सूरए सज्दह शफ़ाअ़त करेगी	74
मां से ज़िना करने वाला	58	सूरए ज़िलज़ाल पढ़ने की ब-र-कतें	75
पेट में सांप	58	सूरए इख़्लास पढ़ने का फ़ाएदा	76
मस्जिद में हंसना	59	शबे जुमुआ़ का दुरूद	76
लज़्ज़त पर नहीं हलाकत पर नज़र रखिये	59	क़ब्र की ग़म गुसार	76
क़ब्र को जन्नत का बाग़ बनाने वाले आ'माल	61	तहज्जुद का नूर	77
नमाज़, रोज़ा ह़ज और ज़कात वग़ैरा	62	एक हज़ार अन्वार	78
मुझे नमाज़ पढ़ने दो	63	नेकी की दा'वत	79
क़ब्र में नमाज़ पढ़ने वाले बुज़ुर्ग	64	मुबल्लिग़ीन की क़ब्रें اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ	
दो अंधेरे दूर होंगे	64	जग-मगाएंगी	79
ख़ुश्बूदार क़ब्र	65	दुन्या में मुसीबत उठाना	80
क़ब्र में तिलावत करने वाले बुज़ुर्ग	65	लोगों तो तक्लीफ़ न पहुंचाने का इन्आ़म	80
सब्र के अन्वार	66	ईसाले सवाब	81

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़ह़ा नम्बर	उ़न्वान	सफ़ह़ा नम्बर
ज़िन्दों का तोह़फ़ा	81	क़ब्र में ख़ुश ख़बरी पाने वालों की ह़िकायात	91
''करम'' के तीन ह़ुरूफ़ की निस्बत से ईसाले सवाब की 3 ह़िकायात	82	कलिमए शहादत की तस्दीक़ करने वाले की बख़्शिश हो गई	91
बाग़ स-दक़ा कर दिया	82	अज़ान के जवाब की फ़ज़ीलत	93
फ़सादी की मग़्फ़िरत	82	3 करोड़ 24 लाख नेकियां कमाइये	93
रोज़ाना एक क़ुरआने पाक ईसाले सवाब करने वाला नौ जवान	83	अज़ान व इक़ामत के जवाब का त़रीक़ा	94
स-दक़ा देने से क़ब्र की गरमी दूर होती है	84	सूरए कह्फ़ की तिलावत की ब-र-कत	96
राहे ख़ुदा में ख़र्च कीजिये	84	क़ब्र में लाएब्रेरी	97
अपने स-दक़ात दा'वते इस्लामी को दीजिये	85	**शैख़ैन** के दीवाने की नजात	97
ख़त्म न होने वाले 7 आ़माल	86	औलिया के नाम लेवा की नजात	97
इ़ल्म क़ब्र में साथ रहेगा	86	बेशक मुझे **दो जन्नतें** अ़त़ा की गईं	98
औलाद को इ़ल्मे दीन सिखाने की ब-र-कत	86	द-रजात में फ़र्क़	100
मुसल्मान के दिल में ख़ुशी दाख़िल करने का सवाब	87	मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी की जब क़ब्र खुली	101
किसी के दिल में ख़ुशी दाख़िल करने के चन्द काम	88	क़ब्र में मय्यित के साथ तबर्रुकात रखिये	104
अ़ज़ाबे क़ब्र से मह़फ़ूज़ रहने वाले ख़ुश नसीब	89	ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की वसिय्यत	104
शहीद अ़ज़ाबे क़ब्र से मह़फ़ूज़ रहता है	89	तबर्रुकात रखने का त़रीक़ा	105
पेट के मरज़ में मरने वाला	90	क़ब्र पर तल्क़ीन का त़रीक़ा	105
जुमुआ़ के दिन फ़ौत होने वाला	90	क़ब्र पर अज़ान दीजिये	106
क़ब्र में वह्शत न होगी	91	कफ़न के लिये तीन अनमोल तोह़फ़े	107
		माख़ज़ मराजेअ़	109
		अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की कुतुब व रसाइल	111

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

क़ब्र में आने वाला दोस्त

शैत़ान आप को लाख सुस्ती दिलाए मगर आप येह किताब पढ़ लीजिये, क़ब्र व ह़श्र की तय्यारी का ज़ेह्न बनेगा, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

बेचैन दिलों के चैन, रह़मते दारैन, ताजदारे ह़-रमैन, सरवरे कौनैन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : जब जुमा'रात का दिन आता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़िरिश्तों को भेजता है जिन के पास चांदी के काग़ज़ और सोने के क़लम होते हैं वोह लिखते हैं, कौन **यौमे जुमा'रात** और **शबे जुमुआ़** मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ता है।

(کنز العمال ج۱ص۲۵۰حدیث۲۱۷۴)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि एक दिन नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से दरयाफ़्त फ़रमाया : "तुम जानते हो कि तुम्हारी, तुम्हारे अहलो अ़याल, माल और आ'माल की मिसाल कैसी है ?" अ़र्ज़ की : "اَللّٰہُ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَمُ" या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बेहतर जानते हैं।" इर्शाद फ़रमाया : "तुम्हारी, तुम्हारे

www.dawateislami.net

अहलो अ़याल, माल और आ'माल की मिसाल उस शख़्स की त़रह़ है जिस के तीन भाई हों, जब उस की मौत का वक़्त क़रीब आए तो वोह अपने तीनों भाइयों को बुलाए और एक से कहे : ''तुम मेरी ह़ालत देख रहे हो, येह बताओ कि तुम मेरे लिये क्या कर सकते हो ?'' वोह जवाब दे : ''मैं तुम्हारे लिये इतना कर सकता हूं कि **फ़िलह़ाल** तुम्हारी तीमार दारी करूं, तुम्हारे साथ रह कर तुम्हारी ह़ाजात व ज़रूरिय्यात को पूरा करूं फिर जब तुम्हारा इन्तिक़ाल हो जाए तो तुम्हें **ग़ुस्ल** दे कर कफ़न पहनाऊं और लोगों के साथ मिल कर तुम्हारा जनाज़ा उठाऊं कि कभी मैं कन्धा दूं तो कभी कोई और शख़्स, जब (तुम्हें दफ़न कर के) वापस आऊं तो जो कोई तुम्हारे बारे में पूछे उस के सामने तुम्हारी भलाई ही बयान करूं.'' येह भाई दर ह़क़ीक़त उस शख़्स के **अहलो अ़याल** हैं । येह फ़रमाने के बा'द सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से पूछा : ''इस के बारे में तुम्हारा क्या ख़याल है ?'' अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! हम इस में कोई भलाई नहीं पाते ।'' आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने कलाम जारी रखते हुए इर्शाद फ़रमाया : फिर वोह अपने दूसरे भाई से कहे : ''तुम भी मेरी ह़ालत देख रहे हो, मेरे लिये क्या कर सकते हो ?'' तो वोह जवाब में कहे : ''मैं उस वक़्त तक तुम्हारा साथ दूंगा जब तक तुम ज़िन्दा हो, जूंही तुम दुन्या से रुख़्सत होगे हमारे रास्ते जुदा हो जाएंगे क्यूं कि तुम क़ब्र में पहुंच जाओगे और मैं यहीं दुन्या में रह जाऊंगा ।'' येह भाई अस्ल में उस शख़्स का **माल** है, इस के बारे में तुम्हारा क्या ख़याल है ? सह़ाबए

किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! हम इसे भी अच्छा नहीं समझते।" म-दनी आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मज़ीद इर्शाद फ़रमाया : फिर वोह शख़्स अपने तीसरे भाई से कहे : "यक़ीनन तुम भी मेरी ह़ालत देख रहे हो और तुम ने मेरे अहलो अ़याल और माल का जवाब भी सुन लिया है, बताओ तुम मेरे लिये क्या कर सकते हो ?" वोह उसे तसल्ली देते हुए कहे : "मेरे भाई ! मैं तो **क़ब्र** में भी तुम्हारे साथ रहूंगा और तुम्हें वहूशत से बचाऊंगा और जब यौमे ह़िसाब आएगा तो मैं तेरे मीज़ान में जा बैठूंगा और उसे वज़्न दार कर दूंगा।" येह उस का **अ़मल** है, इस के बारे तुम्हारा क्या ख़याल है ? सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! येह तो बहुत अच्छा **दोस्त** है।" हुज़ूरे पुरनूर, **शाफ़ेए यौमुन्नुशूर** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "اَلْاَمْرُ هٰكَذَا या'नी येही ह़क़ीक़त है।" (کنزالعمال، کتاب الموت، ج۱۵، ص۳۱۸)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

वफ़ादार कौन ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने मुला-ह़ज़ा फ़रमाया कि हमारे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक आसान मिसाल के ज़रीए़ अ़मल की अहम्मिय्यत को बयान फ़रमाया। यक़ीनन माल, अहलो अ़याल और आ'माल में से हमारा सब से वफ़ादार दोस्त

''अ़मल'' है जो क़ब्र व ह़श्र में भी हमारा मददगार होगा।

तू अपनी मौत को मत भूल कर सामान चलने का ज़मीं की ख़ाक पर सोना है ईंटों का सिरहाना है
न बैली हो सके भाई न बेटा बाप ते माई तू क्यूं फिरता है सौदाई अ़मल ने काम आना है

हम किस पर मेहरबान हैं ?

इन्सान वफ़ादार दोस्त का क़द्रदान और उसी पर ज़ियादा मेहरबान होता है, इसी बात के पेशे नज़र हमें ज़ियादा अहम्मिय्यत ''क़ब्र व ह़श्र में काम आने वाले दोस्त'' या'नी अ़मल को देनी चाहिये थी मगर अफ़्सोस ! ऐसा नहीं है, हम में से कुछ लोग **माल** को ज़ियादा अहम समझते हैं ह़ालां कि येह उस वक़्त तक हमारा साथ देता है जब तक हमारी सांसें बह़ाल हैं, आंखें बन्द होते ही हमें छोड़ कर हमारे वारिसों के पास चला जाता है और क़ब्र में ''फूटी कोड़ी'' भी हमारे साथ नहीं जाती क्यूं कि **कफ़न** में थेली होती है न क़ब्र में तिजोरी ! ज़रूरिय्याते ज़िन्दगी की तक्मील के लिये **माल** की अहम्मिय्यत से इन्कार नहीं मगर आज हमारी ग़ालिब अक्सरिय्यत माल व दौलत की **मह़ब्बत** में ऐसी गरिफ़्तार है कि ज़ियादा से ज़ियादा **माल** कमाने की धुन में ह़राम व ना जाइज़ ज़राएअ़ बे दरेग़ इस्ति'माल किये जाते हैं म-सलन **रिश्वत** और **सूद** का लैन दैन किया जाता है, **ज़ख़ीरा अन्दोज़ी** की जाती है, ज़मीनों पर **क़ब्ज़े** किये जाते हैं, लोगों के **क़र्ज़ें** दबाए जाते हैं, अमानत में **ख़ियानत** की जाती है, **वक़्फ़** के अम्वाल में **ख़ुर्द बुर्द** की जाती है, **चोरी** की जाती है, **डाका** मारा जाता है, चिठ्ठियां भेज कर लोगों से **भत्ता** वुसूल किया जाता है, मालदारों को तावान की ख़ातिर **इग़्वा** किया जाता है, **अल ग़रज़** तिजोरी को रुपै पैसे और सोना चांदी से भरने के लिये नामए आ'माल को ख़ूब

www.dawateislami.net

गुनाहों से भरा जाता है। ऐसा करने वालों के दिल व दिमाग़ पर ह़िर्स व लालच का इतना ग़-लबा हो जाता है कि उन्हें येह एह़सास तक नहीं होता कि एक दिन सब यहीं छोड़ जाना है, जैसा कि

पीछे क्या छोड़ा ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरफ़ूअ़न मरवी है : "जब कोई शख़्स मर जाता है तो फ़िरिश्ते कहते हैं कि इस ने आगे क्या भेजा ? और लोग पूछते हैं : इस ने पीछे क्या छोड़ा ?"

(شعب الایمان، الحدیث ۱۰٤۷٥، ج۷، ص ۳۲۸)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الۡحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : "या'नी मरते वक़्त उस के वारिसीन तो छोड़े हुए माल की **फ़िक्र** में होते हैं कि क्या छोड़े जा रहा है ? और जो मलाएका (या'नी फ़िरिश्ते) उस की क़ब्ज़े रूह़ वग़ैरा के लिये आते हैं वोह उस के आ'माल व अ़क़ाइद का ह़िसाब लगाते हैं।"

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 7, स. 84)

दौलते दुन्या के पीछे तू न जा आख़िरत में माल का है काम क्या

दिल से दुन्या की महब्बत दूर कर दिल नबी के इ़श्क़ से मा'मूर कर

लन्दनो पेरिस के सपने छोड़ दे

बस मदीने ही से रिश्ता जोड़ ले

(वसाइले बख़्शिश, स. 375)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अहलो अ़याल को अपना सब कुछ समझने वाले

हम दुन्या में तन्हा आए थे और तन्हा ही लौट जाएंगे, लेकिन इस दुन्या में हम तन्हा नहीं रहते बल्कि बहुत से अफ़्राद म-सलन मां बाप, बहन भाई, बीवी बच्चे, अ़ज़ीज़ो अक़ारिब और दोस्त अह़बाब वग़ैरा हमारी ज़िन्दगी का ह़िस्सा होते हैं, वोह हमारा और हम उन का ख़याल रखते हैं और रखना भी चाहिये क्यूं कि शरीअ़त ने भी इन के ह़ुक़ूक़ बयान किये हैं। फ़ित्री तौ़र पर हमें इन से **मह़ब्बत** होती है मगर अक्सर लोग अपने अहलो अ़याल की **मह़ब्बत** में ऐसा गुम हो जाते हैं कि फिर उन्हें क़ब्र याद रहती है न मैदाने मह़शर, जिस का नतीजा येह निकलता है कि **मुअज़्ज़िन** नमाज़ के लिये बुला रहा होता है मगर येह घर वालों से ख़ुश गप्पियों में ऐसे मगन होते हैं कि भरी मह़फ़िल छोड़ कर मस्जिद का रुख़ करने को इन का जी नहीं चाहता, उन के बच्चों का किसी के बच्चों से झगड़ा हो जाए तो अपनी औलाद का क़ुसूर होने के बा वुजूद मुआ़फ़ी मांगने के बजाए तू तुकार बल्कि मारधाड़ पर उतर आते हैं, शरीअ़त औ़रत से पर्दे का तक़ाज़ा करती है मगर येह अपने शोहर को राज़ी रखने के लिये बे पर्दगी का इश्तिहार बन कर रह जाती है, इसी त़रह़ बा'ज़ नादान अपने घर वालों की फ़रमाइशें और ज़रूरतें पूरी करने के लिये माले ह़राम का वबाल भी अपने सर ले लेते हैं जो कि सरासर ख़सारे का सौदा है, चुनान्चे

अपने आप को हलाकत में डालने वाला बद नसीब

हमारे प्यारे आक़ा, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "लोगों पर एक ज़माना ऐसा आएगा कि मोमिन को अपना दीन बचाने के लिये एक पहाड़ से दूसरे

पहाड़ और एक ग़ार से दूसरी ग़ार की त़रफ़ भागना पड़ेगा तो उस वक़्त रोज़ी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी ही से ह़ासिल की जाएगी फिर जब ऐसा ज़माना आ जाएगा तो आदमी अपने बीवी बच्चों के हाथों हलाक होगा, अगर उस के बीवी बच्चे न हों तो वोह अपने वालिदैन के हाथों हलाक होगा, अगर उस के वालिदैन न हुए तो वोह रिश्तेदारों और पड़ोसियों के हाथों हलाक होगा।'' सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह कैसे ?'' फ़रमाया : ''वोह उसे माल की कमी का त़ा'ना देंगे तो आदमी अपने आप को हलाकत में डालने वाले कामों में मसरूफ़ कर देगा।'' (तो गोया इन्हीं के हाथों हलाक हुवा)

(الترغیب والترھیب ، کتاب الادب ،باب فی العزلة لمن لایا من ...الخ رقم ١٦، ج٣، ص ٢٩٩)

www.dawateislami.net

अपने घर वालों को ह़राम कमा कर खिलाने वालों को संभल जाना चाहिये कि मैदाने मह़शर में कि जहां एक एक नेकी की सख़्त ह़ाजत होगी, येही ''अपने'' इस से क्या सुलूक करेंगे ? येह जानने के लिये नीचे दी गई रिवायत बार बार पढ़िये, चुनान्चे

क़ियामत के दिन अहलो अ़याल का दा'वा

मरवी है कि ''मर्द से तअ़ल्लुक़ रखने वालों में पहले उस की **ज़ौजा** और उस की **औलाद** है, मगर येह सब (या'नी बीवी, बच्चे क़ियामत में) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ करेंगे : ''ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ ! हमें इस शख़्स से हमारा ह़क़ ले कर दे, क्यूं कि इस ने कभी हमें **दीनी उमूर** नहीं सिखाए और येह हमें ह़राम खिलाता था जिस का हमें

इ़ल्म नहीं था।'' चुनान्चे उस शख़्स से उन का बदला लिया जाएगा।'' **एक** और रिवायत में है कि ''बन्दे को **मीज़ान** के पास लाया जाएगा, फ़िरिश्ते **पहाड़** के बराबर उस की नेकियां लाएंगे तो उस से उस के **अ़याल** की ख़बर गीरी और ख़िदमत के बारे में सुवाल होगा और **माल** के बारे में पूछा जाएगा कि कहां से ह़ासिल किया ? और कहां ख़र्च किया ? ह़त्ता कि उस के तमाम **आ'माल** उन के मुत़ा-लबात में ख़र्च हो जाएंगे और उस के लिये कोई नेकी बाक़ी नहीं रहेगी, उस वक़्त **फ़िरिश्ते** आवाज़ देंगे : **''येह वोह शख़्स है जिस की नेकियां इस के अहलो अ़याल ले गए और वोह अपने आ'माल के साथ गिरवी है।''**

(قوت القلوب،باب ذکر التزویج الخ، ج ۲ ص ٤٧٨، ٤٧٩)

www.dawateislami.net

हमारी बिगड़ी हुई आ़दतें निकल जाएं मिले गुनाहों के अमराज़ से शिफ़ा या रब

रहें भलाई की राहों में गामज़न हर दम करें न रुख़ मेरे पाउं गुनाह का या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 56)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क्यूं रोते हो ?

एक शख़्स शदीद बीमार था, ऐसा लगता था कि दुन्या में कुछ ही देर का मेहमान है। उस के बच्चे, ज़ौजा और मां बाप इर्द गिर्द खड़े आंसू बहा रहे थे। उस ने अपने वालिद से पूछा : ''अब्बाजान ! आप को किस चीज़ ने रुलाया ?'' कहने लगे : ''मेरे जिगर के टुकड़े ! जुदाई का ग़म रुला रहा है, तुम्हारे मरने के बा'द हमारा क्या बनेगा ?'' उस शख़्स

ने अपनी वालिदा से पूछा : "प्यारी अम्मीजान ! आप क्यूं रो रही हैं ?" मां ने जवाब दिया : "मेरे लाल ! दुन्या से तेरी रुख़्सती का सोच कर रो रही हूं, मैं तेरे बिग़ैर कैसे रह पाऊंगी ?" फिर अपनी बीवी से पूछा : "तुम्हें किस चीज़ ने रोने पर मजबूर किया ?" उस ने भी कहा : "मेरे सरताज ! आप के बिग़ैर हमारी ज़िन्दगी **अजीरन** हो जाएगी, जुदाई का ग़म मेरे दिल को घाइल कर रहा है, आप के बा'द मेरा क्या बनेगा ?" फिर अपने रोते हुए बच्चों को क़रीब बुलाया और पूछा : "मेरे बच्चो ! तुम्हें किस चीज़ ने रुलाया है ?" बच्चे कहने लगे : "आप के विसाल के बा'द हम यतीम हो जाएंगे, हमारे सर से बाप का साया उठ जाएगा, आप के बा'द हमारा क्या बनेगा ?" उन सब की येह बातें सुन कर वोह शख़्स कहने लगा : "तुम सब अपनी दुन्या के लिये रो रहे हो, तुम में से हर शख़्स मेरे लिये नहीं बल्कि अपना नफ़्अ़ ख़त्म हो जाने के ख़ौफ़ से रो रहा है, क्या तुम में से कोई ऐसा भी है जिसे इस बात ने रुलाया हो कि मरने के बा'द क़ब्र में मेरा क्या ह़ाल होगा, अ़न्क़रीब मुझे वह़्शत नाक, तंगो तारीक क़ब्र में छोड़ दिया जाएगा, क्या तुम में से कोई इस बात पर भी रोया कि मुझे मरने के बा'द **मुन्कर नकीर** (या'नी क़ब्र में सुवालात करने वाले फ़िरिश्तों) से वासिता़ पड़ेगा ! क्या तुम में से कोई इस ख़ौफ़ से भी रोया कि मुझे मेरे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ के सामने ह़िसाबो किताब के लिये खड़ा किया जाएगा ! आह ! तुम में से कोई भी मेरी उख़्रवी परेशानियों की वजह से नहीं रोया बल्कि हर एक अपनी दुन्या की वजह से रो रहा है ।" इस गुफ़्त-गू के कुछ ही देर बा'द उस की रूह़ **क़-फ़से उ़न्सुरी** से परवाज़ कर गई ।

(عیون الحکایات ص ۸۹ ملخصًا)

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़िकायत में हमारे लिये इ़ब्रत ही इ़ब्रत है कि वोह अहलो अ़याल जिन के ऐ़शो आराम के लिये हम अपनी नींदें क़ुरबान कर देते हैं, जिन्हें आसाइशें देने के लिये हम बड़ी ख़ुशी से मशक़्क़तें बरदाश्त करते हैं, जिन की राह़तों के लिये हम ख़ुद को ग़मों के ह़वाले कर देते हैं, जूंही हमारा सफ़रे ज़िन्दगी ख़त्म होता है इन्हें हमारी नहीं अपनी फ़िक्र सताने लगती है कि इस के जाने के बा'द हमारा क्या बनेगा ? काश वोह येह भी सोचते कि मरने के बा'द इस का क्या बनेगा ? और हमारे लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत व ईसाले सवाब की कसरत करते ।

जब कि पैके अजल रूह़ ले जाएगा   जिस्मे बे जां तड़प कर ठहर जाएगा

लह़्द में कोई तेरी नहीं आएगा   तुझ को दफ़्ना के हर इक पलट जाएगा

www.dawateislami.net

(वसाइले बख़्शिश, स. 355)

अ़मल ने काम आना है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दूसरों की दुन्या रोशन करने के लिये अपनी क़ब्र में अंधेरा मत कीजिये, दौलत व माल और अहलो अ़याल की **मह़ब्बत** में नेकियां छोड़िये न गुनाहों में पड़िये कि इन सब का साथ तो आंख बन्द होते ही छूट जाएगा जब कि नेकियां اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **क़ब्र** व आख़िरत बल्कि दुन्या में भी काम आएंगी, मगर अफ़्सोस ! कि आज हमारी अक्सरिय्यत की तुवानाइयां सुब्ह़ से ले कर शाम तक अपनी दुन्यवी ज़िन्दगी को ही बेहतर से बेहतर और मज़ेदार बनाने की दौड़ धूप में सर्फ़ हो रही हैं, सामाने आख़िरत की फ़िक्र बहुत कम दिखाई देती है,

याद रखिये ! नेक आ'माल की क़द्र आज नहीं तो कल ज़रूर मा'लूम हो जाएगी मगर उस वक़्त सिवाए ह़सरत के कुछ हाथ न आएगा, जैसा कि

मुर्दे की ह़सरत !

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना के मत्बूआ़ 32 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "**क़ब्र का इम्तिह़ान**" के सफ़ह़ा 4 पर शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه नक़्ल करते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा बिन यसार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "जब मय्यित को क़ब्र में रखा जाता है तो सब से पहले उस का अ़मल आ कर उस की बाईं रान को ह़-र-कत देता और कहता है : मैं तेरा **अ़मल** हूं। वोह मुर्दा पूछता है : "मेरे **बाल बच्चे** कहां हैं ? मेरी **ने'मतें**, मेरी **दौलतें** कहां हैं ?" तो अ़मल कहता है : "येह सब तेरे पीछे रह गए और मेरे सिवा तेरी क़ब्र में कोई नहीं आया।" वोह मुर्दा ह़सरत से कहता है : "ऐ काश ! मैं ने अपने बाल बच्चों, अपनी ने'मतों और दौलतों के मुक़ाबले में तुझे तरजीह़ दी होती क्यूं कि तेरे सिवा मेरे साथ कोई नहीं आया।"

(شرح الصدور،باب ضمة القبر لكل احد، ص ۱۱۱،۱۱۲)

घुप अंधेरी क़ब्र में जब जाएगा बे अ़मल ! बे इन्तिहा घबराएगा
काम मालो ज़र वहां न आएगा ग़ाफ़िल इन्सां याद रख पछताएगा

(वसाइले बख़्शिश, स. 376)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नेक व बद दोनों को ह़सरत होगी

महबूबे रब्बे जुल जलाल, साहिबे जूदो नवाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो भी यहां से मर कर जाता है नादिम ज़रूर होता है। सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : **''या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! नदामत किस बात की ?'' फ़रमाया : अगर वोह नेक हो तो नादिम होता है कि काश कुछ और नेकी कर लेता और अगर ख़त़ाकार हो तो नदामत और ह़सरत करता है कि वोह (गुनाहों से) क्यूं बाज़ न आया।

(جامع الترمذی، کتاب الزهد، باب ما جاء فی ذهاب البصر، الحدیث ۲٤۱۱، ج٤، ص ۱۸۱)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان **''मिरआतुल मनाजीह़''** जिल्द 7 के सफ़ह़ा 378 पर इस ह़दीस के तह़्त लिखते हैं : लिहाज़ा हर शख़्स को चाहिये कि मौत से पहले ज़िन्दगी को, बीमारी से पहले तन्दुरुस्ती को, मश्ग़ूलिय्यत से पहले फ़राग़त को ग़नीमत जाने जितना मौक़अ़ मिले (नेकी) कर गुज़रे

उतरते चांद ढलती चांदनी जो हो सके कर ले अंधेरा पाख आता है येह दो दिन की उजाली है
इस दुन्या का एक ही फैरा मुड़ नहीं आना दूजी वार जो करना है कर ले यार ! हो जा समझदार

ह़त्ता कि अगर कोई शख़्स अपनी सारी ज़िन्दगी सज्दा सुजूद में गुज़ार दे वोह येह कहेगा कि मेरी उ़म्र और ज़ियादा क्यूं न हुई कि मैं सज्दे सुजूद और ज़ियादा कर लेता और आज इस से भी ऊंचा द-रजा पाता ! इस फ़रमान में कुफ़्फ़ार और गुनहगार सब दाख़िल हैं, कुफ़्फ़ार को शरमिन्दगी होगी कि हम मुसल्मान क्यूं न बने ? गुनहगारों को शरमिन्दगी होगी, हम नेकूकार परहेज़ गार क्यूं न बने ? गुनाहों से बाज़ क्यूं न आए, मगर

कुफ़्फ़ार को उस वक़्त की येह नदामत काम न देगी।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 7, स. 378)

हम भी तुम्हारे पीछे आने वाले हैं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस दुन्या में रोज़ाना मु-तअ़द्दद बच्चे पैदा होते हैं तो कुछ इन्सान यहां से रुख़्सत भी होते हैं, यूं आना जाना लगा रहता है, इस लिये येह समझना नादानी है कि हम हमेशा दूसरों के जनाज़े ही देखते रहेंगे, भूलिये मत ! एक दिन वोह भी आएगा कि हमारा भी जनाज़ा उठाया जाएगा। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जब कोई जनाज़ा देखते तो फ़रमाते : **"चलो हम भी तुम्हारे पीछे आने वाले हैं।"** (البداية والنهاية، سنة ستين من الهجرة، ج٨، ص٦١٦) वाक़ेई आए दिन उठने वाले जनाज़े हमारे लिये **ख़ामोश मुबल्लिग़** की ह़ैसिय्यत रखते हैं।

जनाज़ा आगे आगे कह रहा है ऐ जहां वालो

मेरे पीछे चले आओ तुम्हारा रहनुमा मैं हूं

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

धोके में न रहिये

जूं जूं दिन, महीने और साल गुज़रते जा रहे हैं ज़िन्दगी हम से दूर और मौत क़रीब तर होती चली जा रही है, लिहाज़ा अपनी सांसों को ग़नीमत जानिये और गुनाहों से तौबा कर के नेकियां कमाने में मसरूफ़ हो जाइये, कितने ही लोग ऐसे हैं जो आने वाले कल के **मुन्तज़िर** होते हैं कि

''येह करेंगे वोह करेंगे'' फिर वोह ''कल'' तो आता है मगर उस का इन्तिज़ार करने वाले अपनी **क़ब्र** में उतर चुके होते हैं, जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अ़म्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار ने एक नौ जवान को नसीह़त करते हुए कहा : ''ऐ नौ जवान ! तुझे तेरी जवानी धोके में न डाले, कितने ही जवान ऐसे थे जिन्हों ने तौबा में ताख़ीर की और लम्बी लम्बी उम्मीदें बांध लीं, **मौत** को भुला कर येह कहते रहे कि कल **तौबा** कर लेंगे, परसों तौबा कर लेंगे यहां तक कि इसी ग़फ़्लत की ह़ालत में उन्हें मौत आ गई और वोह अंधेरी **क़ब्र** में जा सोए, उन्हें उन के माल, ग़ुलामों, औलाद और मां बाप ने कोई फ़ाएदा न दिया, फ़रमाने इलाही है :

www.dawateislami.net

يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَّ لَا بَنُوْنَ ۙ﴿۸۸﴾ اِلَّا مَنْ اَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ؕ﴿۸۹﴾

(پ۱۹، الشعراء:۸۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जिस दिन न माल काम आएगा न बेटे मगर वोह जो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के ह़ुज़ूर ह़ाज़िर हुवा सलामत दिल ले कर ।

(مکاشفة القلوب،باب فی العشق،ص۴۳)

आह ! हर लम्ह़ा गुनह की कसरतो भरमार है ग़-ल-बए शैत़ान है और नफ़्से बद अत़्वार है
ज़िन्दगी की शाम ढलती जा रही है हाए नफ़्स ! गर्म रोज़ो शब गुनाहों का ही बस बाज़ार है

(वसाइले बख़्शिश, स. 47)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क़ब्र की पुकार

मोहतरम नबी, मक्की म-दनी, महबूबे रब्बे ग़नी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "**क़ब्र** रोज़ाना पुकार कर कहती है कि मैं मुसा-फ़रत का घर हूं, मैं तन्हाई का घर हूं, मैं मिट्टी का घर हूं और मैं कीड़ों का घर हूं।" जब मोमिन बन्दा दफ़नाया जाता है तो **क़ब्र** कहती है : "**मरहबा !** तू अपने ही घर आया ! मेरी पीठ पर चलने वालों में से तुम मुझे ज़ियादा महबूब हो, आज जब तुम मेरे हवाले कर दिये गए हो तो तुम अन्क़रीब देखोगे मैं तुम से क्या (अच्छा) सुलूक करती हूं।" चुनान्चे क़ब्र उस के लिये हद्दे निगाह तक कुशादा हो जाती है और उस के लिये जन्नत का दरवाज़ा खोल दिया जाता है। मगर जब गुनहगार या काफ़िर आदमी दफ़्न किया जाता है तो **क़ब्र** कहती है : "न तो तुझे मुबारक हो और न ही येह तेरा घर है। मेरी पीठ पर चलने वालों में से मेरे नज़्दीक तू सब से बुरा है, आज जब कि तू मेरे सिपुर्द किया गया तो अन्क़रीब तू देखेगा मैं तेरी कैसी ख़बर लेती हूं !" येह कह कर **क़ब्र** उसे इस तरह दबाती है कि मुर्दे की पस्लियां एक दूसरे में पैवस्त हो जाती हैं। रावी कहते हैं : येह बात फ़रमाते हुए **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने हाथों की उंग्लियों को एक दूसरे में डाला, फिर फ़रमाया : "उस के लिये सत्तर अज़्दहे **मुसल्लत** कर दिये जाते हैं कि अगर उन में से एक भी ज़मीन पर फूंक मार दे तो रहती दुन्या तक ज़मीन से कुछ न उगे, येह अज़्दहे उसे डसते और नोचते रहेंगे यहां तक कि उसे हिसाब के लिये ले जाया जाए।"

(جامع الترمذی، کتاب صفة القیامة، الحدیث ٢٤٦٨، ج٤، ص٨٠٢)

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हाए हमारा क्या बनेगा ! हम तो अपनी **क़ब्र** को यक्सर भूले हुए हैं । **फ़त्हुल बारी** में है **:** ''اِنَّ الْبَرْزَخَ مُقَدَّمَةُ الْاٰخِرَۃ'' या'नी बेशक बरज़ख़ आख़िरत की पेशगोई है ।'' (فتح الباری، کتاب الادب ،تحت الحدیث٦٠٥٥،ج١٠،٣٩٩) आह ! हमारी ग़फ़्लत कि नज़्अ़ की सख़्तियों, क़ब्र के अंधेरों, इस में मौजूद कीड़े मकोड़ों, मुन्कर नकीर के सख़्त लहजे में किये जाने वाले सुवालों, बोसीदा हो जाने वाली हड्डियों, अ़ज़ाबे क़ब्र की शिद्दतों से आगाह होने के बा वुजूद नेकियां कमाने की जुस्त-जू नहीं करते !

गो पेशे नज़र क़ब्र का पुरहौल गढ़ा है   अफ़्सोस मगर फिर भी येह ग़फ़्लत नहीं जाती

ऐ रह़मते कौनैन ! कमीने पे करम हो   हाए ! नहीं जाती बुरी ख़स्लत नहीं जाती

www.dawateislami.net

(वसाइले बख़्शिश, स. 135)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمّد

तन्हाई ही काफ़ी है

बिलफ़र्ज़ अगर क़ब्र में कोई **अ़ज़ाब** न भी हो तो तंगो तारीक क़ब्र में त़वील अ़र्से तक **तन्हा** रहना ही शदीद आज़्माइश है क्यूं कि हमारी नाज़ुक मिज़ाजी का तो येह आ़लम है कि अगर हमें तमाम तर सहूलियात व आसाइशात से आरास्ता व पैरास्ता आ़लीशान बंगले या कोठी में कुछ दिनों के लिये **तन्हा** क़ैद कर दिया जाए तो घबरा जाएं ।

कह रही है शाहों से क़ब्र की येह तन्हाई

ताजो तख़्त के मालिक आज क्यूं अकेले हैं

दुन्या से जाने वालों को याद कीजिये

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : "मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कभी कभी तन्हाई में दिल को हर त़रह़ के दुन्यावी ख़यालात से पाक कर के अपने उन दोस्तों, रिश्तेदारों को याद कीजिये जो वफ़ात पा चुके हैं, अपने क़ुर्बो जवार में रहने वाले फ़ौत शुदगान में से एक एक को याद कीजिये और तसव्वुर ही तसव्वुर में उन के चेहरे सामने लाइये और ख़याल कीजिये कि वोह किस त़रह़ दुन्या में अपने अपने मन्सब व काम में मश्ग़ूल थे, लम्बी लम्बी उम्मीदें बांधे दुन्यावी ता'लीम के ज़रीए मुस्तक़्बिल की बेहतरी के लिये कोशां थे और ऐसे कामों की तदबीर में लगे थे जो शायद सालहा साल तक मुकम्मल न हो सकें, दुन्यावी कारोबार के लिये वोह त़रह़ त़रह़ की तक्लीफ़ें और मशक़्क़तें बरदाश्त किया करते थे, वोह सिर्फ़ इस दुन्या ही के लिये कोशिशों में मसरूफ़ थे, इसी की आसाइशें उन्हें मह़बूब और इसी का आराम उन्हें मरग़ूब था। वोह यूं ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे गोया उन्हें कभी मरना ही नहीं, चुनान्चे वोह मौत से ग़ाफ़िल, ख़ुशियों में बद मस्त और खेल तमाशों में मगन थे। उन के **कफ़न** बाज़ार में आ चुके थे लेकिन वोह इस से बे ख़बर दुन्या की रंगीनियों में गुम थे। आह ! इसी बे ख़बरी के आ़लम में उन्हें यकायक मौत ने आ लिया और वोह क़ब्रों में पहुंचा दिये गए। उन के मां बाप ग़म से निढाल हो गए, उन की बेवाएं बे ह़ाल हो गईं, उन के बच्चे बिलक्ते रह गए, मुस्तक़्बिल के ह़सीन ख़्वाबों का आईना चक्ना चूर हो गया। उम्मीदें मलिया मैट हो गईं, उन के काम अधूरे रह गए, दुन्या के लिये उन की सब मेह़नतें राएगां गईं। वु-रसा उन के अम्वाल तक़्सीम कर के

www.dawateislami.net

मज़े से खा रहे हैं और उन को भूल चुके हैं।

जब इस बज़्म से उठ गए दोस्त अक्सर और उठते चले जा रहे हैं बराबर
येह हर वक़्त पेशे नज़र जब है मन्ज़र यहां पर तेरा दिल बहलता है क्यूंकर
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इब्रत की जा है तमाशा नहीं है (वीरान महल, स. 17)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

एक दिन मरना है आख़िर मौत है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दिन और रात गोया दो सुवारियां हैं जिन पर हम बारी बारी सुवार होते हैं, येह सुवारियां मुसल्सल अपना सफ़र जारी रखे हुए हैं और हमें मौत की मन्ज़िल पर पहुंचा कर ही दम लेंगी, क्या कभी आप ने ग़ौर किया कि हम दिन के गुज़रने और रात के कटने पर बहुत ख़ुश होते हैं ह़ालां कि हमारी ज़िन्दगी का एक दिन या एक रात कम हो जाती है और हम मौत के मज़ीद क़रीब हो जाते हैं, हमारी हैसिय्यत तो उस बल्ब की सी है जिस की सारी चकाचौंद और तुवानाई प्लास्टिक के एक बटन में छुपी होती है, उस बटन पर पड़ने वाला उंगली का हलका सा दबाव उस की रोशनियां गुल कर देता है, इसी त़रह़ मौत का वक़्त आने पर हमारा चाको चौबन्द जिस्म इतना बेबस हो जाता है कि हम अपनी मरज़ी से हाथ भी नहीं हिला सकते, अगर्चे येह तै है कि एक दिन हमें भी मरना है मगर हम नहीं जानते कि मौत में कितना वक़्त बाक़ी है ? क्या मा'लूम कि आज का दिन हमारी ज़िन्दगी का आख़िरी

www.dawateislami.net

दिन या आने वाली रात हमारी ज़िन्दगी की आख़िरी रात हो ! बल्कि हमारे पास तो इस की भी ज़मानत नहीं कि एक के बा'द दूसरा सांस ले सकेंगे या नहीं ? क्यूं कि सांस फेफड़ों में जाते और बाहर निकलते वक़्त इन्सान के इख़्तियार में नहीं होता और न ही इस पर ए'तिबार किया जा सकता है, ऐन मुम्किन है कि जो सांस हम ले रहे हैं वोही आख़िरी हो दूसरा सांस लेने की नौबत ही न आए ! क्या ख़बर येह सुतूर पढ़ने के दौरान ही म-लकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام हमारी रूह़ क़ब्ज़ फ़रमा लें ! आए दिन येह ख़बरें हमें सुनने को मिलती हैं कि फ़ुलां इस्लामी भाई अच्छे ख़ासे थे, ब ज़ाहिर उन्हें कोई मरज़ भी न था, लेकिन अचानक हार्ट फ़ेल हो जाने की वजह से चन्द मिनट के अन्दर अन्दर उन का इन्तिक़ाल हो गया, यूंही किसी भी लम्ह़े हमें इस दुन्या से रुख़्सत होना पड़ सकता है क्यूं कि जो रात **क़ब्र** में गुज़रनी है वोह बाहर नहीं गुज़र सकती ।

www.dawateislami.net

ब वक़्ते नज़्अ़ सलामत रहे मेरा ईमां

मुझे नसीब हो कलिमा है इल्तिजा या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 55)

मौत को याद करने का फ़ाएदा

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिसे मौत की याद ख़ौफ़ज़दा करती है **क़ब्र** उस के लिये जन्नत का बाग़ बन जाएगी ।" (جمع الجوامع،الحدیث ٣٥١٦،ج٢،ص١٤)

अपनी मौत को याद कीजिये

ज़रा तसव्वुर की निगाह से देखिये कि मेरी मौत का वक़्त आन

पहुंचा है, मुझ पर ग़शी त़ारी हो चुकी है, लोग बे बसी के आ़लम में मुझे मौत के मुंह में जाता हुवा देख रहे हैं मगर कुछ कर नहीं सकते, नज़्अ़ की सख़्तियां भी शुरूअ़ हो गईं मगर मैं अपनी तक्लीफ़ किसी को बता नहीं सकता क्यूं कि हर वक़्त चहक्ने वाली ज़बान अब ख़ामोश हो चुकी है, सख़्त प्यास महसूस हो रही है मगर किसी से दो घूंट पानी नहीं मांग सकता, इसी दौरान कोई मुझे तल्क़ीन करने (या'नी मेरे सामने कलिमए पाक पढ़ने) लगा, फिर रफ़्ता रफ़्ता सामने के मनाज़िर धुंदले होने लगे, गले से ख़र-ख़राहट की आवाज़ें आना शुरूअ़ हो गईं और बिल आख़िर रूह़ ने जिस्म का साथ छोड़ दिया या'नी मेरा इन्तिक़ाल हो गया। अ़ज़ीज़ो अक़ारिब पर गिर्या त़ारी हो गया। अहलो अ़याल म-सलन बीवी बच्चों, बहन भाई, मां बाप वग़ैरा की आंखें शिद्दते ग़म से नम हैं। किसी ने आगे बढ़ कर मेरी आंखें बन्द कर दीं, पाउं के दोनों अंगूठे और दोनों जबड़ों को कपड़े की पट्टी से बांध कर मुझ पर चादर उढ़ा दी गई। मेरी मौत के ए'लानात होने लगे, रिश्तादारों और दोस्तों को इत्तिलाआ़त दी जाने लगीं। कुछ लोग मेरी तक्फ़ीन व तदफ़ीन के इन्तिज़ामात में लग गए। ग़ुस्ल का इन्तिज़ाम होने पर मुझे तख़्ताए ग़ुस्ल पर लिटा कर ग़ुस्ल दिया गया और कफ़न पहना कर मेरी मय्यित आख़िरी दीदार के लिये रख दी गई। मेरे चाहने वालों ने आख़िरी मरतबा मुझे देखा कि येह चेहरा अब दुन्या में दोबारा हमें दिखाई न देगा, घर की फ़ज़ा सोग-वार है और दरो दीवार पर उदासी छाई हुई है। फिर मेरे नाज़ उठाने वालों ने मेरा जनाज़ा अपने कन्धों पर उठा लिया और जनाज़ा गाह की त़रफ़ बढ़ना शुरूअ़ हो गए। वहां पहुंच कर मेरी नमाज़े जनाज़ा अदा की गई और मेरे जनाज़े का रुख़ उस क़ब्रिस्तान की त़रफ़ कर दिया गया जहां मुझे अपनी ज़िन्दगी में रात के वक़्त तन्हा आने की हिम्मत नहीं होती थी मगर अब न जाने कितनी

www.dawateislami.net

रातें इस क़ब्रिस्तान में गुज़ारनी होंगी ! येह वोही क़ब्रिस्तान है जो अपने नए मकीनों का मुन्तज़िर होता है, जहां पर इन्सानों के साथ उन की ख़्वाहिशात भी दफ़्न हो जाती हैं। लोगों ने मेरी लाश को चारपाई से उठा कर उस **क़ब्र** में मुन्तक़िल कर दिया जिस के बारे में ह़दीसे पाक में आया कि जन्नत का एक बाग़ है... या... दोज़ख़ का गढ़ा ! (اَلتَّرْغِیْب وَالتَّرْھِیْب ج٤ ص٢٠١، الحدیث٤١١٥)

क़ब्र पर मिट्टी डाल कर जब मेरे साथ आने वाले लौट कर चले तो मैं ने उन के क़दमों की चाप सुनी, उन के जाने के बा'द **क़ब्र** मुझ से हम कलाम हुई और कहने लगी : ऐ आदमी ! क्या तूने मेरे ह़ालात न सुने थे ? क्या मेरी तंगी, बदबू, होलनाकी और कीड़ों से तुझे नहीं डराया गया था ? अगर ऐसा था तो फिर तूने क्या तय्यारी की ?

क़ब्र में मुझ को लिटा कर और मिट्टी डाल कर चल दिये साथी न पास अब कोई रिश्तेदार है
ख़्वाब में भी ऐसा अन्धेरा कभी देखा न था जैसा अन्धेरा हमारी क़ब्र में सरकार है

(वसाइले बख़्शिश, स. 74)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हम पर क्या गुज़रेगी ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इन्सान के दो घर होते हैं : एक ज़मीन के ऊपर और एक ज़मीन के अन्दर (या'नी क़ब्र), आज हम अपने घर को आराम देह व पुर सुकून बनाने के लिये कैसे कैसे जतन करते हैं, अंधेरे को दूर करने के लिये जगह जगह बल्ब रोशन करते हैं, गरमी में ठन्डक के लिये एर कन्डीश्नर (Air conditioner) और सर्दी के मौसिम में सर्दी से बचने के लिये हीटर (Heater) तक लगवाते हैं, बिजली चली

जाए तो मु–तबादिल इन्तिज़ाम के तौर पर जनरेटर और यू.पी.एस (ups) तय्यार रखते हैं, मगर एक दिन सब कुछ छोड़ छाड़ कर ख़ाली हाथ दूसरे घर या'नी **क़ब्र** में मुन्तक़िल हो जाएंगे। सोचिये तो सही उस वक़्त हम पर क्या गुज़रेगी जब **क़ब्र** की वहशतों, गहरी तारीकियों और अजनबी माहौल की उदासियों में तन्हा होंगे, कोई हमदर्द न मददगार, किसी को बुला सकें न ख़ुद कहीं जा सकें, हम पर कैसी घबराहट त़ारी होगी !

अंधेरा काट खाता है अकेले ख़ौफ़ आता है तो तन्हा क़ब्र में क्यूंकर रहूंगा या रसूलल्लाह

नकीरैन इम्तिहां लेने को जब आएंगे तुरबत में जवाबात उन को आक़ा कैसे दूंगा या रसूलल्लाह

बराए नाम दर्दे सर सहा जाता नहीं मुझ से अ़ज़ाबे क़ब्र कैसे सह सकूंगा या रसूलल्लाह

यहां च्यूंटी भी तड़पा दे मुझे तो क़ब्र के अन्दर शहा बिच्छू के डंक कैसे सहूंगा या रसूलल्लाह

www.dawateislami.net

(वसाइले बख़्शिश, स. 140)

मुर्दे के सदमे

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक–त–बतुल मदीना की मत़्बूआ़ "फ़ैज़ाने सुन्नत" जिल्द 2 के 499 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल बाब, "**ग़ीबत की तबाह कारियां**" सफ़ह़ा 67 पर है : अव्वल तो मौत के सदमे का तसव्वुर ही जान को घुलाने वाला है और ऊपर से **ख़ुदा व मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلَّم की नाराज़ी की सूरत में अ़ज़ाब हुवा तो कैसे बरदाश्त हो सकेगा ! **मुर्दे के सदमे** का नक़्शा खींचते हुए **मेरे** आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : वोह मौत का ताज़ा

सदमा उठाए हुए रूह़ (कि निकलते वक़्त) जिस का अदना झटका सो ज़र्बे शमशीर (या'नी तलवार के सो वार) के बराबर, जिस का सदमा हज़ार ज़र्बे तैग़ (या'नी तलवार के हज़ार वार) से सख़्त तर, बल्कि म-लकुल मौत (عَلَيْهِ السَّلَام) का देखना ही हज़ार तलवार के सदमे से बढ़ कर। वोह नई जगह, वोह निरी तन्हाई, वोह हर त़रफ़ भयानक बे कसी छाई, इस पर वोह नकीरैन (या'नी मुन्कर नकीर) का अचानक आना, वोह सख़्त हैबत नाक सूरतें दिखाना कि आदमी दिन को हज़ारों के मज्मअ़ में देखे तो ह़वास बजा न रहें, काला रंग, नीली आंखें देगों के बराबर बड़ी, अबरक़ (चमकीली धात) की त़रह़ शो'ला ज़न, सांस जैसे आग की लपट, बैल के सींगों की त़रह़ लम्बे नोकदार कीले (या'नी अगले दांत), ज़मीन पर घिसटते सर के पेचीदा बाल, क़दो क़ामत जिस्म व जसामत बला व क़ियामत कि एक शाने (या'नी कन्धे) से दूसरे (कन्धे) तक मन्ज़िलों (या'नी बे शुमार किलो मीटर्ज़) का फ़ासिला, हाथों में लोहे का वोह गुर्ज़ (या'नी हथोड़ा) कि अगर एक बस्ती के लोग बल्कि जिन्न व इन्स जम्अ़ हो कर उठाना चाहें न उठा सकें, वोह गरज कड़क की होलनाक आवाज़ें, वोह दांतों से ज़मीन चीरते ज़ाहिर होना, फिर इन आफ़ात पर आफ़त येह कि सीधी त़रह़ बात न करना, आते ही झन्झोड़ डालना, मोहलत न देना, कड़क्ती झिड़क्ती आवाज़ों में इम्तिह़ान लेना। وَحَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ اِرْحَمْ ضُعْفَنَا يَا كَرِيْمُ يَا جَمِيْلُ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى نَبِيِّ الرَّحْمَةِ وَاٰلِهِ الْكِرَامِ وَ سَائِرِ الْاُمَّةِ اٰمِيْنَ اٰمِيْنَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ (तरजमा : और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) हमारे लिये काफ़ी है और वोह सब से बड़ा कारसाज़ है। ऐ करम फ़रमाने वाले ! हमारी कमज़ोरी पर रह़मो करम फ़रमा, ऐ रब्बे

जमील ! दुरूदो सलाम भेज नबिय्ये रह़मत (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) पर और इन की इ़ज़्ज़त वाली आल और **बक़िय्या** तमाम उम्मत पर । क़बूल फ़रमा, क़बूल फ़रमा, ऐ सब से ज़ियादा रह़मो करम फ़रमाने वाले !)

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 9, स. 934 ता 937)

घुप अंधेरा ही क्या वहूशत का बसेरा होगा क़ब्र में कैसे अकेला मैं रहूंगा या रब !
गर कफ़न फाड़ के सांपों ने जमाया क़ब्ज़ा हाए बरबादी ! कहां जा के छुपूंगा या रब !
डंक मच्छर का भी मुझ से तो सहा जाता नहीं क़ब्र में बिच्छू के डंक कैसे सहूंगा या रब !
गर तू नाराज़ हुवा मेरी हलाकत होगी हाए ! मैं नारे जहन्नम में जलूंगा या रब !

अ़फ़्व कर और सदा के लिये राज़ी हो जा
गर करम कर दे तो जन्नत में रहूंगा या रब !

www.dawateislami.net

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 67)

क़ब्र वाले किस पर रश्क करते हैं ?

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़बदुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है : "कोई दिन ऐसा नहीं कि जिस में म-लकुल मौत (عَلَیْہِ السَّلَام) क़ब्रिस्तान में येह ए'लान न करते हों : "ऐ क़ब्र वालो ! आज तुम्हें किन लोगों पर **रश्क** है ?" तो वोह जवाब देते हुए कहते हैं : "हमें मस्जिद वालों पर रश्क है कि वोह मस्जिदों में **नमाज़** पढ़ते हैं और हम नमाज़ नहीं पढ़ सकते । वोह **रोज़े** रखते हैं और हम नहीं रख सकते । वोह **स-दक़ा** करते हैं और हम नहीं कर सकते । वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करते हैं और

हम नहीं कर सकते।'' फिर अहले क़ब्र अपने गुज़श्ता ज़माने पर नादिम (या'नी शर्म-सार) होते हैं।'' (الروض الفائق،المجلس الثالث فی ذکر الموت .....الخ،ص ۲۷)

वोह है ऐशो इ़शरत का कोई महल भी जहां ताक में हर घड़ी हो अजल भी

बस अब अपने इस जहल से तू निकल भी येह जीने का अन्दाज़ अपना बदल भी

जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है

येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

अभी से तय्यारी कर लीजिये

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ हमें क़ब्र व ह़श्र की तय्यारी का ज़ेह्न अ़ता करते हुए फ़रमाते हैं : ''**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** वाक़ेई़ **अ़क़्ल मन्द** वोही है जो मौत से क़ब्ल मौत की तय्यारी करते हुए नेकियों का ज़ख़ीरा इकठ्ठा कर ले और सुन्नतों का म-दनी चराग़ **क़ब्र** में साथ ले जाए और यूं **क़ब्र** की रोशनी का इन्तिज़ाम कर ले, वरना **क़ब्र** हरगिज़ येह लिह़ाज़ न करेगी कि मेरे अन्दर कौन आया ? **अमीर** हो या फ़क़ीर, वज़ीर हो या उस का मुशीर, ह़ाकिम हो या मह़कूम, अफ़्सर हो या चपरासी, सेठ हो या मुलाज़िम, डॉक्टर हो या मरीज़, ठेकेदार हो या मज़दूर। अगर किसी के साथ भी तोशए आख़िरत में कमी रही, **नमाज़ें** क़स्दन क़ज़ा कीं, र-मज़ान शरीफ़ के रोज़े बिला उ़ज़्रे शर-ई़ न रखे, फ़र्ज़ होते हुए भी ज़कात न दी, ह़ज फ़र्ज़ था मगर अदा न किया, बा वुजूदे क़ुदरत शर-ई़ पर्दा नाफ़िज़ न किया, मां बाप की ना फ़रमानी की,

www.dawateislami.net

झूट, ग़ीबत, चुग़ली की आ़दत रही, फ़िल्में, डिरामे देखते रहे, गाने बाजे सुनते रहे, दाढ़ी मुंडवाते या एक मुठ्ठी से घटाते रहे। अल ग़रज़ ख़ूब गुनाहों का बाज़ार गर्म रखा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ना राज़गी की सूरत में सिवाए ह़सरत व नदामत के कुछ हाथ न आएगा। **जिस** ने फ़राइज़ के साथ साथ नवाफ़िल की भी पाबन्दी की, **र-मज़ानुल मुबारक** के इ़लावा नफ़्ली रोज़े भी रखे, कूचा कूचा, गली गली नेकी की दा'वत की धूमें मचाईं, क़ुरआने पाक की ता'लीम न सिर्फ़ ख़ुद ह़ासिल की बल्कि दूसरों को भी दी, चौक दर्स देने में हिचकिचाहट महसूस न की, घर दर्स जारी किया, सुन्नतों की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िलों** में बा क़ाइ़दगी से सफ़र करने के साथ साथ दीगर मुसल्मानों को भी इस की तरग़ीब दिलाई, रोज़ाना **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर माह अपने ज़िम्मादार को **जम्अ़** करवाया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़ज़्लो करम से ईमान सलामत ले कर दुन्या से रुख़्सती हुई तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उस की **क़ब्र** में ह़श्र तक रह़मतों का दरिया मौजें मारता रहेगा और नूरे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के चश्मे लहराते रहेंगे।

क़ब्र में लहराएंगे ता ह़श्र चश्मे नूर के
जल्वा फ़रमा होगी जब त़ल्अ़त रसूलुल्लाह की (ह़दाइक़े बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(बादशाहों की हड्डियां, स. 17)

जन्नत का बाग़ या जहन्नम का गढ़ा

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : क़ब्र या तो जहन्नम का गढ़ा है या जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ ।

(اَلتَّرْغِیْب وَالتَّرْھِیْب ج ٤ ص ١١٨ دارالفکر بیروت)

क़ब्र को जहन्नम का गढ़ा बनाने वाले आ'माल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यूं तो हर गुनाह अ़ज़ाबे क़ब्र का सबब बन सकता है मगर चन्द ऐसी रिवायात व ह़िकायात मुला-ह़ज़ा कीजिये जिन में अ़ज़ाबे क़ब्र में मुब्तला करने वाले गुनाहों का ख़ुसूसिय्यत के साथ ज़िक्र है :

(1) चुग़ुल ख़ोरी

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से मरवी है कि **सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم दो क़ब्रों के पास से गुज़रे (तो ग़ैब की ख़बर देते हुए) फ़रमाया : येह दोनों **क़ब्र** वाले अ़ज़ाब दिये जा रहे हैं और किसी बड़ी चीज़ में (जिस से बचना दुश्वार हो) अ़ज़ाब नहीं दिये जा रहे बल्कि एक तो **पेशाब के छींटों** से नहीं बचता था और दूसरा **चुग़ुल ख़ोरी** किया करता था फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने खजूर की ताज़ा टहनी मंगवाई और उसे आधों आध चीरा और हर एक की **क़ब्र** पर एक एक ह़िस्सा गाड़ दिया और फ़रमाया : जब तक येह ख़ुश्क न हों तब तक इन दोनों के **अ़ज़ाब में तख़्फ़ीफ़** होगी ।

(سُنَنُ النَّسَائی ص ١٣ حدیث ٣١ صَحِیحُ البُخارِیّ ج ١ ص ٩٥ حدیث ٢١٦)

क़ब्र में आग भड़क रही थी

हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन दीनार عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡغَفَّار कहते हैं कि मदीनए त़य्यिबा में एक शख़्स रहता था जिस की बहन मदीने के नवाह़ में रहती थी। वोह बीमार हुई तो येह शख़्स उस की तीमार दारी में लगा रहा मगर वोह उसी मरज़ में इन्तिक़ाल कर गई। उस शख़्स ने अपनी बहन की तज्हीज़ व तक्फ़ीन का इन्तिज़ाम किया, जब दफ़्न कर के वापस आया तो उसे याद आया कि वोह **रक़म** की एक थेली **क़ब्र** में भूल आया है। उस ने अपने एक दोस्त से मदद त़लब की दोनों ने जा कर उस की **क़ब्र** खोद कर थेली निकाल ली। तो उस ने दोस्त से कहा : "ज़रा हटना मैं देखूं तो सही मेरी बहन किस ह़ाल में है ?" उस ने लह़द में झांक कर देखा तो वहां **आग** भड़क रही थी, वोह चुपचाप वापस चला आया और मां से पूछा : "क्या मेरी बहन में कोई ख़राब आ़दत थी ?" मां ने कहा : "तेरी बहन की आ़दत थी कि वोह **हमसायों के दरवाज़ों से कान लगा कर उन की बातें सुनती थी और चुग़ुल ख़ोरी किया करती थी।"**

(مکاشفة القلوب،ص ۷۱)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! लोगों में फ़साद करवाने के लिये उन की बातें एक दूसरे तक पहुंचाना **चुग़ली** है। (شرح مسلم للنووی ج۱،ص۳۱۱) **चुग़ुल ख़ोर मह़ब्बतों का चोर** है, आज हमारे मुआ़-शरे में मह़ब्बतों की फ़ज़ा आलूदा होने का एक बड़ा सबब चुग़ुल ख़ोरी भी है, लोगों के दरमियान चुग़लियां खा कर फ़साद बरपा कर के अपने कलेजे में ठन्डक मह़सूस करने वाले को कल जहन्नम की भड़क्ती हुई आग में जलना पड़ेगा, अगर कभी ज़िन्दगी में येह गुनाह हुवा हो तो तौबा कर के येह

www.dawateislami.net

निय्यत कर लीजिये कि हम चुग़ली खाएंगे न सुनेंगे, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

सुनूं न फ़ोहूश कलामी न ग़ीबतो चुग़ली

तेरी पसन्द की बातें फ़क़त सुना या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 54)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(2) ग़ीबत

हज़रते सय्यिदुना अबी बक्रह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं **नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम** عَلَیْہِ اَفْضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّسْلِیْم के साथ चल रहा था और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरा हाथ थामा हुवा था। एक आदमी आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के बाईं त़रफ़ था। इसी दौरान हम ने अपने सामने **दो क़ब्रें** पाईं तो **नुबुव्वत** के आफ़्ताब, जनाबे रिसालत मआब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''इन दोनों को **अ़ज़ाब** हो रहा है और किसी बड़े अम्र की वजह से नहीं हो रहा, तुम में से कौन है जो मुझे एक टहनी ला दे।'' हम ने एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश की तो मैं सब्क़त ले गया और **एक टहनी** (या'नी शाख़) ले कर ह़ाज़िरे ख़िदमत हो गया। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस के दो टुकड़े कर दिये ओर दोनों क़ब्रों पर एक एक टुकड़ा रख दिया फिर इर्शाद फ़रमाया : ''येह जब तक तर (या'नी सब्ज़ व तरो ताज़ा) रहेंगे इन पर अ़ज़ाब में कमी रहेगी और इन दोनों को **ग़ीबत** और **पेशाब** की वजह से अ़ज़ाब हो रहा है।''

(مُسند اِمام احمد ج۷ص ۳۰٤ حدیث ۲۰۳۹۵)

ग़ीबत किसे कहते हैं ?

सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने **ग़ीबत की ता'रीफ़** इस त़रह़ बयान की है : "किसी शख़्स के पोशीदा ऐ़ब को उस की बुराई करने के त़ौर पर ज़िक्र करना।" (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 175)

अक्सरिय्यत ग़ीबत की लपेट में है

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه लिखते हैं : मां बाप, भाई बहन, मियां बीवी, सास बहू, सुसर दामाद, नन्द भावज बल्कि अहले ख़ाना व ख़ानदान नीज़ उस्ताज़ व शागिर्द, सेठ व नोकर, ताजिर व गाहक, अफ़्सर व मज़दूर, मालदार व नादार, ह़ाकिम व मह़कूम, दुन्यादार व दीनदार, बूढ़ा हो या जवान **अल ग़रज़** तमाम दीनी और दुन्यवी शो'बों से तअ़ल्लुक़ रखने वाले **मुसल्मानों की भारी अक्सरिय्यत इस वक़्त ग़ीबत की ख़ौफ़नाक आफ़त की लपेट में है,** अफ़्सोस ! सद करोड़ अफ़्सोस ! बे जा बक बक की आ़दत के सबब आजकल हमारी कोई मजलिस (बैठक) उ़मूमन **ग़ीबत** से ख़ाली नहीं होती।

ग़ीबतो चुग़ली की आफ़त से बचें येह करम या मुस्त़फ़ा फ़रमाइये
ज़ाहिरो बात़िन हमारा एक हो येह करम या मुस्त़फ़ा फ़रमाइये

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تعالٰى على محمَّد تُوبُوا اِلَى اللهِ ! اَسْتَغْفِرُاللّٰه

(ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 25)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ीबत के बारे में मज़ीद मा'लूमात

और इस से बचने का ज़ेह्न बनाने के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की किताब **"ग़ीबत की तबाह कारियां"** का ज़रूर मुता-लआ़ कीजिये, ग़ीबत के ख़िलाफ़ ए'लाने जंग भी कीजिये कि **"ग़ीबत करेंगे न सुनेंगे,** اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ।"

(3) नमाज़ न पढ़ना

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे "मक-त-बतुल मदीना" की मत़्बूआ़ **853** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल"** जिल्द अव्वल के सफ़ह़ा **444** पर है **:** "बे नमाज़ी को क़ब्र में दी जाने वाली सज़ाएं येह हैं (1) उस की क़ब्र को इतना तंग कर दिया जाएगा कि उस की पस्लियां एक दूसरे में पैवस्त हो जाएंगी (2) उस की क़ब्र में आग भड़का दी जाएगी फिर वोह दिन रात अंगारों पर लोट पोट होता रहेगा और (3) क़ब्र में उस पर एक अज़्दहा मुसल्लत़ कर दिया जाएगा जिस का नाम **अश्शुजाउ़ल अक़्रअ़** है, उस की आंखें आग की होंगी जब कि नाख़ुन लोहे के होंगे, हर नाख़ुन की लम्बाई एक दिन की मसाफ़त तक होगी, वोह मय्यित से कलाम करते हुए कहेगा **:** "मैं **अश्शुजाउ़ल अक़्रअ़** या'नी गन्जा सांप हूं।" उस की आवाज़ कड़क दार बिजली की सी होगी, वोह कहेगा **:** "मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने मुझे हुक्म दिया है कि नमाज़े **फ़ज्र** ज़ाएअ़ करने पर तुलूए़ आफ़्ताब के बा'द तक मारता रहूं और नमाज़े **ज़ोहर** ज़ाएअ़ करने पर अ़स्र तक मारता रहूं और नमाज़े **अ़स्र** ज़ाएअ़ करने पर मग़रिब तक मारता रहूं और नमाज़े **मग़रिब** ज़ाएअ़ करने पर इ़शा तक मारता रहूं और नमाज़े **इ़शा** ज़ाएअ़ करने पर फ़ज्र तक मारता रहूं।" जब भी वोह उसे मारेगा तो वोह 70 हाथ तक ज़मीन में धंस

www.dawateislami.net

जाएगा और वोह क़ियामत तक इस अ़ज़ाब में मुब्तला रहेगा।

(الزواجر عن اقتراف الکبائر، ج ۱، ص ۲۹۵)

ऐ फ़ज्र के वक़्त ग़फ़्लत की चादर तान कर गहरी नींद सोने वालो ! होश में आओ, ऐ ज़ोहर के वक़्त मस्जिद का रुख़ करने बजाए अपने कारोबार और नोकरी में मगन रहने वालो ! मरने के बा'द तुम्हारे पास फ़ुरसत ही फ़ुरसत होगी मगर नेकियां करने की मोहलत ख़त्म हो चुकी होगी ! अ़स्र और मग़रिब की नमाज़ पर अपने कामकाज को तरजीह़ देने वालो ! एक दिन तुम्हारी ज़िन्दगी की शाम ढल जाएगी, घर वालों और यार दोस्तों की बैठक में दिल लगा कर इ़शा की नमाज़ छोड़ देने वालो ! गुनाहों की तारीकी तुम्हारी क़ब्र को मज़ीद तारीक कर देगी, ऐ दुन्या का हर काम पाबन्दी से करने मगर सालहा साल से नमाज़ों से मुंह मोड़ने वालो ! अपनी आख़िरत की फ़िक्र करो, इस से पहले कि मौत तुम से ज़िन्दगी छीन ले, जल्दी करो, जितनी नमाज़ें क़ज़ा हुई हैं, तौबा भी करो और इन का हिसाब लगा कर अदा कर लो।

सियाह ख़च्चर नुमा बिच्छू

मन्क़ूल है, जहन्नम में एक वादी है जिस का नाम **''लमलम''** है, उस में ऊंट की गरदन की त़रह़ **मोटे मोटे सांप** हैं, हर सांप की लम्बाई एक माह की मसाफ़त के बराबर है। जब येह सांप **बे नमाज़ी** को डसेगा तो उस का ज़ह़र उस के जिस्म में **सत्तर साल** तक जोश मारता रहेगा और **जहन्नम** में एक वादी है जिस का नाम **''जब्बुल हुज़्न''** है इस में **काले ख़च्चर** की मानिन्द **बिच्छू** हैं। इस के सत्तर डंक

हैं और हर डंक में ज़ह्र की थेली है। वोह **बिच्छू** जब **बे नमाज़ी** को डंक मारता है तो उस का ज़ह्र उस के सारे जिस्म में सरायत कर जाता है और उस ज़ह्र की गरमी **एक हज़ार साल** तक रहती है। इस के बा'द उस की हड्डियों से गोश्त झड़ता है और उस की शर्मगाह से पीप बहने लगती है और तमाम जहन्नमी उस पर ला'नत भेजते हैं।

(قُرَّةُ العُيُون معه الرَّوضُ الفائِق ص ۳۸۵، کوئٹه)

बे नमाज़ी तेरी शामत आएगी क़ब्र की दीवार बस मिल जाएगी
तोड़ देगी क़ब्र तेरी पस्लियां दोनों[2] हाथों की मिलें जूं उंग्लियां
उ़म्र में छूटी है गर कोई नमाज़ जल्द अदा कर ले तू आ ग़फ़्लत से बाज़

(वसाइले बख़्शिश, स. 377)

www.dawateislami.net

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नमाज़ के तफ़्सीली मसाइल जानने के लिये मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ़ 499 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**नमाज़ के अह़काम**" का मुत़ा-लआ़ कीजिये।

(4) वालिदैन की ना फ़रमानी

हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जिस ने **वालिदैन की ना फ़रमानी** की उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ना फ़रमानी की, और वालिदैन के ना फ़रमान को जब क़ब्र में दफ़्न कर दिया जाएगा तो क़ब्र उस को इस त़रह़ **दबाएगी** कि

उस की पस्लियां टूट फूट कर एक दूसरे में पैवस्त हो जाएंगी।"

(حاشیہ اعانة الطالبین،فصل فی الشھادات،ج ٤،٢٦٢)

रैंकने वाला गधा

हज़रते सय्यिदुना अ़वाम बिन ह़ौशब رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं एक मरतबा मैं एक क़बीले में गया, वहां पर एक त़रफ़ कुछ क़ब्रें थीं, **अ़स्र** के बा'द उस क़ब्रिस्तान की एक क़ब्र फटती और उस से एक शख़्स नुमूदार होता जिस का सर गधे और जिस्म इन्सान की त़रह़ होता था वोह तीन बार गधे की सी आवाज़ निकाल कर फिर क़ब्र में ग़ाइब हो जाता था। मैं ने उस बारे में लोगों से दरयाफ़्त किया तो उन्हों ने बताया कि येह **शराब का आ़दी** था, जब येह शराब पीता तो उस की मां कहती कि "बेटे ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डर !" तो वोह जवाब देता : "तू गधे की त़रह़ रैंकती रहती है।" फिर अ़स्र के बा'द वोह मर गया, अब हर रोज़ अ़स्र के बा'द निकलता है और तीन मरतबा **रैंकता** है और फिर ग़ाइब हो जाता है। (شرح الصدور بشرح حال الموتیٰ والقبور،باب عذاب القبر،ص ١٧٢)

अपने वालिदैन की शफ़्क़तें, मह़ब्बतें और इ़नायतें भुला कर उन के सामने ज़बान दराज़ी बल्कि दस्त दराज़ी की जुरअत करने वाले इस रिवायत से इ़ब्रत पकड़ें और क़ब्र व ह़श्र और दुन्या की परेशानियों से बचने के लिये जितनी जल्दी हो सके अपने वालिदैन से मुआ़फ़ी मांगें, हाथ जोड़ कर पाउं पकड़ कर रो रो कर उन को मना लें और अगर मां बाप दोनों या इन में से कोई एक फ़ौत हो चुका हो तो हर **जुमुआ़** को उन की क़ब्र पर ह़ाज़िरी देने की कोशिश करें, **सरकारे** नामदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने

www.dawateislami.net

ख़ुश गवार है, जो अपने मां बाप दोनों या एक की **क़ब्र** पर हर **जुमुआ** के दिन ज़ियारत को हाज़िर हो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के **गुनाह** बख़्श दे और मां बाप के साथ अच्छा बरताव करने वाला लिखा जाए।

(نوادرالاصول للترمذی، ص ٤٢ دار صادر بیروت)

किन बातों में इताअ़त की जाएगी ?

याद रहे कि इताअ़त सिर्फ़ जाइज़ बातों में की जाएगी जैसा कि आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُالرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : जाइज़ बातों में वालिदैन की इताअ़त फ़र्ज़ है और अगर वोह किसी ना जाइज़ बात का हुक्म दें तो इस में उन की इताअ़त जाइज़ नहीं। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 12, स. 751) म-सलन अगर वालिदैन नमाज़ न पढ़ने, फ़र्ज़ रोज़ा बिला उ़ज़्रे शर-ई तर्क करने या दाढ़ी मुंडाने का हुक्म दें तो अब उन की बात न मानने वाले को ना फ़रमान नहीं कहा जाएगा बल्कि ऐसी बातें मानने वाला शरीअ़त का ना फ़रमान क़रार पाएगा।

www.dawateislami.net

गुनाहों से मुझ को बचा या इलाही बुरी आ़दतें भी छुड़ा या लाही
मुत़ीअ़ अपने मां बाप का कर मैं उन का हर इक हुक्म लाऊं बजा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 47, 48)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(5) ज़कात न देने का वबाल

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन यूसुफ़ फ़रयाबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى कहते हैं : "हम ह़ज़रते सय्यिदुना अबी सिनान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के साथ उन के हमसाए की **ता'ज़िय्यत** के लिये गए तो देखा कि उस का भाई बहुत **आहो बुका** कर रहा था, हम ने उसे काफ़ी तसल्लियां दीं, **सब्र** की तल्क़ीन

की मगर उस की गिर्या व ज़ारी बराबर जारी रही।" हम ने कहा : "क्या तुम्हें मा'लूम नहीं कि हर शख़्स को आख़िर मर जाना है ?" वोह कहने लगा : "येह सहीह़ है, मगर मैं अपने भाई के **अ़ज़ाब** पर रोता हूं।" हम ने पूछा : "क्या **अल्लाह** तआ़ला ने तुम्हें ग़ैब से तुम्हारे भाई के अ़ज़ाब की ख़बर दी है ?" कहने लगा : "नहीं, बल्कि हुवा यूं कि जब सब लोग मेरे भाई को **दफ़्न** कर के चल दिये तो मैं वहीं बैठा रहा, मैं ने उस की क़ब्र से आवाज़ सुनी वोह कह रहा था **"आह ! वोह मुझे तन्हा छोड़ गए और मैं अ़ज़ाब में मुब्तला हूं, मेरी नमाज़ें और रोज़े कहां गए ?"** मुझ से बरदाश्त न हो सका, मैं ने उस की क़ब्र खोदना शुरूअ़ कर दी ताकि देखूं कि मेरा भाई किस ह़ाल में है ? जूंही क़ब्र खुली, मैं ने देखा उस की क़ब्र में **आग** दहक रही है और उस की गरदन में आग का तौ़क़ पड़ा हुवा है, मैं **महब्बत** में दीवाना वार आगे बढ़ा और उस तौ़क़ को उतारना चाहा मगर नाकाम रहा और मेरा येह हाथ उंग्लियों समेत जल गया है।" रावी का कहना है कि हम ने देखा वाक़ेई उस का हाथ बिल्कुल सियाह हो चुका था। उस ने सिल्सिलए कलाम जारी रखते हुए कहा : मैं ने उस की क़ब्र पर मिट्टी डाली और वापस लौट आया, अब अगर मैं न रोऊं तो और कौन रोएगा ? हम ने पूछा : "तेरे भाई का कोई ऐसा काम भी था जिस के बाइ़स उसे येह सज़ा मिली ?" उस ने कहा : शायद इस लिये कि वोह अपने **माल की ज़कात** नहीं देता था।

(مکاشفة القلوب،ص۷۳بتصرف)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़कात इस्लाम के पांच अरकान में से एक है, ज़कात की अदाएगी में माल की हिफ़ाज़त, नजाते आख़िरत और रिज़्क़ में ब-र-कत जैसे फ़वाइद भी पोशीदा हैं, मगर कुछ लोग ऐसे

भी होते हैं जो हर वक़्त माल, माल और माल की रट लगाने वाले फ़र्ज़ होने के बा वुजूद ज़कात अदा नहीं करते, ऐसों को ख़ूब समझ लेना चाहिये कि कल बरोज़े क़ियामत येही माल उन के लिये वबाले जान बन जाएगा, चुनान्चे

गन्जा सांप गले में डाल दिया जाएगा

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : जिस को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने माल दिया और वोह उस की ज़कात अदा न करे तो क़ियामत के दिन वोह माल **गन्जे सांप** की सूरत में कर दिया जाएगा जिस के सर पर दो चित्तियां होंगी (या'नी दो निशान होंगे), वोह सांप उस के गले में तौ़क़ बना कर डाल दिया जाएगा। फिर उस (या'नी ज़कात न देने वाले) की बाछें पकड़ेगा और कहेगा : **"मैं तेरा माल हूं, मैं तेरा ख़ज़ाना हूं।"**

www.dawateislami.net

(صحیح البخاری، کتاب الزکوٰۃ ، باب اثم مانع الزکوٰۃ،الحدیث ۱۴۰۳،ج۱،ص ۴۷۴)

अ़ज़ाबात का दर्दनाक नक़्शा

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن क़ुरआनो ह़दीस में बयान कर्दा **अ़ज़ाबात** का नक़्शा खींचते हुए फ़रमाते हैं : "ख़ुलासा येह है कि जिस **सोने चांदी** की ज़कात न दी जाए, रोज़े क़ियामत जहन्नम की आग में तपा कर उस से उन की पेशानियां, करवटें, पीठें दाग़ी जाएंगी। उन के सर, पिस्तान पर जहन्नम का गर्म पथ्थर रखेंगे कि छाती तोड़ कर शाने से निकल जाएगा और शाने की हड्डी पर रखेंगे कि हड्डियां तोड़ता सीने से निकल आएगा, पीठ तोड़ कर

करवट से निकलेगा, गुद्दी तोड़ कर पेशानी से उभरेगा। जिस **माल** की ज़कात न दी जाएगी रोज़े क़ियामत पुराना ख़बीस **ख़ूंख़ार अज़्दहा** बन कर उस के पीछे दौड़ेगा, येह हाथ से रोकेगा, वोह हाथ चबा लेगा, फिर गले में तौक़ बन कर पड़ेगा, उस का मुंह अपने मुंह में ले कर चबाएगा कि मैं हूं तेरा माल, मैं हूं तेरा ख़ज़ाना। फिर उस का सारा बदन चबा डालेगा।" والعیاذ باللّٰہ رب العٰلمین (फ़तावा र-ज़विय्या तख़रीज शुदा, जि. 10, स. 153) मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ज़कात न देने वाले को क़ियामत के अ़ज़ाब से डरा कर समझाते हुए फ़रमाते हैं : **ऐ अ़ज़ीज़ !** क्या ख़ुदा व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم के फ़रमान को यूंही हंसी ठठ्ठा समझता है या (क़ियामत के एक दिन या'नी) पचास हज़ार बरस की मुद्दत में येह जानकाह मुसीबतें झेलनी सह्ल जानता है, ज़रा यहीं की आग में एक आध रुपिया (छोटा सा सिक्का) गर्म कर के बदन पर रख कर देख, फिर कहां येह ख़फ़ीफ़ (हलकी सी) गरमी, कहां वोह क़ह्र आग, कहां **येह एक ही रुपिया** कहां वोह सारी उ़म्र का जोड़ा हुवा माल, कहां येह मिनट भर की देर कहां वोह हज़ार दिन बरस की आफ़त, कहां येह हलका सा चहका (या'नी मा'मूली सा दाग़) कहां वोह हड्डियां तोड़ कर पार होने वाला ग़ज़ब। **अल्लाह** तआ़ला मुसल्मान को हिदायत बख़्शे।

(ऐज़न, स. 175)

एक और मक़ाम पर आ'ला ह़ज़रत عَلَیْہِ رَحْمَۃُ رَبِّ الْعِزَّت लिखते हैं : ग़रज़ ज़कात न देने की जानकाह (या'नी इन्तिहाई तक्लीफ़ देह) आफ़तें वोह नहीं जिन की ताब आ सके (या'नी ताक़त रखी जा सके), न देने वाले को हज़ार साल इन सख़्त अ़ज़ाबों में गरिफ़्तारी की उम्मीद रखना चाहिये कि **ज़ईफ़ुल बुन्यान** (या'नी बहुत कमज़ोर) इन्सान की क्या जान, अगर

पहाड़ों पर डाली जाएं सुरमा हो कर ख़ाक में मिल जाएं।

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 10, स. 871)

नमाज़ो रोज़ा व ह़ज्जो ज़कात की तौफ़ीक़
अ़ता हो उम्मते महबूब को सदा या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 55)

ज़कात किस पर फ़र्ज़ है ?

ज़कात देना हर उस **आ़क़िल, बालिग़** और **आज़ाद मुसल्मान** पर **फ़र्ज़** है जिस में येह **शराइत़** पाई जाएं : (1) **निसाब** का मालिक हो। (2) येह निसाब **नामी** हो। (3) निसाब उस के **क़ब्ज़े** में हो। (4) निसाब उस की **ह़ाजते अस्लिया** (या'नी ज़रूरिय्याते ज़िन्दगी) से **ज़ाइद** हो। (5) निसाब दैन से **फ़ारिग़** हो (या'नी उस पर ऐसा क़र्ज़ न हो जिस का मुत़ा-लबा बन्दों की जानिब से हो, कि अगर वोह क़र्ज़ अदा करे तो उस का निसाब बाक़ी न रहे।) (6) उस निसाब पर **एक साल** गुज़र जाए।

(मुलख़्ख़सन, बहारे शरीअ़त, जि. 1, ह़िस्सा : 5, स. 875 ता 884)

इन शराइत़ की तफ़्सील और ज़कात के बारे में मज़ीद मा'लूमात के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की 149 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**फ़ैज़ाने ज़कात**" का ज़रूर मुत़ा-लआ़ कीजिये।

लूट के माल से ह़ज करने वाले का अन्जाम

एक क़ाफ़िला ह़ज को जा रहा था कि रास्ते में एक मुसाफ़िर चल बसा। क़ाफ़िले वालों ने किसी से एक फावड़ा उधार लिया और उस से क़ब्र खोद कर उसे वहीं दफ़्न कर दिया। जब क़ब्र बन्द कर चुके तो उन्हें

www.dawateislami.net

याद आया कि फावड़ा भी क़ब्र ही में रह गया। उन्हों ने उसे निकालने के लिये क़ब्र खोदी। अब जो अन्दर देखा तो उस शख़्स के हाथ पैर फावड़े के ह़ल्क़े में जकड़े हुए हैं। येह ख़ौफ़नाक मन्ज़र देख कर क़ब्र फ़ौरन बन्द कर दी और फावड़े वाले को कुछ पैसे दे कर जान छुड़ाई। ह़ज से वापसी पर उस की बीवी से उस के आ'माल के बारे में सुवाल किया तो उस ने बताया कि "एक मरतबा इस के हमराह एक मालदार शख़्स ने सफ़र किया। रास्ते में इस ने उस को मार डाला, अब तक येह ह़ज और जिहाद सब कुछ उसी के माल से करता रहा है।" (شرح الصدور،ص ۱۷٤)

मिटा दे सारी ख़ताएं मेरी मिटा या रब बना दे नेक बना नेक दे बना या रब
अंधेरी क़ब्र का दिल से नहीं निकलता डर करूंगा क्या जो तू नाराज़ हो गया या रब
गुनाहगार हूं मैं लाइक़े जहन्नम हूं करम से बख़्श दे मुझ को न दे सज़ा या रब

www.dawateislami.net

(वसाइले बख़्शिश, स. 54)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(6 ता 10) शराब, ज़िना, ग़ीबत, झूटी क़समें खाना और रोज़ा न रखना

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना के मत़्बूआ़ 32 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "**कफ़न चोरों के इन्किशाफ़ात**" में है : **एक** बार ख़लीफ़ा अ़ब्दुल मलिक के पास एक शख़्स घबराया हुवा ह़ाज़िर हुवा और कहने लगा : **आ़लीजाह !** मैं बेह़द गुनहगार हूं और जानना चाहता हूं कि मेरे लिये मुआ़फ़ी भी है या नहीं ? **ख़लीफ़ा** ने कहा : क्या तेरा गुनाह ज़मीन व आस्मान से भी बड़ा है ? उस ने कहा : बड़ा है। **ख़लीफ़ा** ने पूछा : क्या तेरा गुनाह लौह़ो क़लम से

भी बड़ा है ? जवाब दिया : बड़ा है। पूछा : क्या तेरा गुनाह अ़र्श व कुर्सी से भी बड़ा है ? जवाब दिया : बड़ा है। **ख़लीफ़ा** ने कहा : भाई यक़ीनन तेरा गुनाह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से तो बड़ा नहीं हो सकता। येह सुन कर उस के सीने में थमा हुवा तूफ़ान आंखों के ज़रीए उमंड आया और वोह दहाड़ें मार मार कर रोने लगा। **ख़लीफ़ा** ने कहा : भई आख़िर मुझे पता भी तो चले कि तुम्हारा गुनाह क्या है ? इस पर उस ने कहा : **हुज़ूर !** मुझे आप को बताते हुए बेह़द नदामत हो रही है ताहम अ़र्ज़ किये देता हूं, शायद मेरी तौबा की कोई सूरत निकल आए। येह कह कर उस ने अपनी **दास्ताने दह्शत निशान** सुनानी शुरूअ़ की। कहने लगा : आ़लीजाह ! मैं एक **कफ़न चोर** हूं। आज रात मैं ने **पांच क़ब्रों** से इ़ब्रत ह़ासिल की और तौबा पर आमादा हुवा।

www.dawateislami.net

शराबी का अन्जाम

कफ़न चुराने की ग़रज़ से मैं ने जब **पहली क़ब्र** खोदी तो मुर्दे का मुंह क़िब्ले से फिरा हुवा था। मैं ख़ौफ़ज़दा हो कर जूं ही पलटा कि एक ग़ैबी आवाज़ ने मुझे चौंका दिया। कोई कह रहा था : "इस मुर्दे से अ़ज़ाब का सबब तो दरयाफ़्त कर ले।" मैं ने घबरा कर कहा : मुझ में हिम्मत नहीं, तुम ही बताओ ! आवाज़ आई : येह शख़्स **शराबी** और **ज़ानी** था।

ख़िन्ज़ीर नुमा मुर्दा

दूसरी क़ब्र खोदी तो एक दिल हिला देने वाला मन्ज़र मेरी आंखों के सामने था। क्या देखता हूं कि **मुर्दे का मुंह ख़िन्ज़ीर जैसा हो चुका है और तौक़ व ज़न्जीर में जकड़ा हुवा है।** ग़ैब से आवाज़ आई : येह **झूटी क़समें** खाता और **ह़राम रोज़ी** कमाता था।

आग की कीलें

तीसरी क़ब्र खोदी तो उस में भी एक भयानक मन्ज़र था। **मुर्दा गुद्दी की त़रफ़ ज़बान निकाले हुए था और उस के जिस्म में आग की कीलें ठुकी हुई थीं।** ग़ैबी आवाज़ ने बताया : येह **ग़ीबत** करता, **चुग़ली** खाता और लोगों को आपस में **लड़वाता** था।

आग की लपेट में

चौथी क़ब्र खोदी तो मेरी निगाहों के सामने एक बेह़द सन्सनी ख़ेज़ मन्ज़र था ! **मुर्दा आग में उलट पलट हो रहा था और फ़िरिश्ते उस को आग के गुर्ज़ों** (या'नी आ-तशीं हथोड़ों) **से मार रहे थे।** मुझ पर एक दम दह्शत त़ारी हो गई और मैं भाग खड़ा हुवा मगर मेरे कानों में एक ग़ैबी आवाज़ गूंज रही थी कि येह बद नसीब **नमाज़** और **रोज़ए र-मज़ान** में सुस्ती किया करता था।

जवानी में तौबा का इन्आ़म

पांचवीं क़ब्र जब खोदी तो उस की ह़ालत गुज़श्ता चारों क़ब्रों से बिल्कुल बर अ़क्स थी। **क़ब्र ह़द्दे नज़र तक वसीअ़ थी, अन्दर एक तख़्त पर ख़ूबरू नौ जवान बैठा हुवा था।** ग़ैबी आवाज़ ने बताया : इस ने जवानी में तौबा कर ली थी और नमाज़ व रोज़े का सख़्ती से पाबन्द था।

(ماخوذ از تذکرۃ الواعظین ص۲۱۶ کوئٹہ) (कफ़न चोरों के इन्किशाफ़ात, स. 23)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(11) पेशाब से न बचना

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **नबिय्ये मुअ़ज़्ज़म, रसूले मोह़तरम** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अ़ज़ाबे क़ब्र** उ़मूमन पेशाब से (न बचने की वजह से) होता है।"

(ابن ماجه،کتاب الطهارت، باب التشديد فی البول،الحديث ٣٤٨،ج١،ص ٢١٩)

(12) मिलावट करने की सज़ा

एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की ख़िदमत में एक शख़्स ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! हम बहुत से लोग ह़ज करने आए हैं। सफ़ा व मर्वह की सअ़्य के दौरान हमारे एक दोस्त का इन्तिक़ाल हो गया। ग़ुस्ल व तक्फ़ीन वग़ैरा के बा'द उसे क़ब्रिस्तान ले जाया गया। जब उस के लिये **क़ब्र** खोदी तो हम येह देख कर ह़ैरान रह गए कि एक बहुत बड़ा **अज़्दहा** क़ब्र में मौजूद है। हम ने उसे छोड़ कर दूसरी **क़ब्र** खोदी। वहां भी वोही अज़्दहा मौजूद था। फिर तीसरी **क़ब्र** खोदी तो उस में भी वोही ख़ौफ़नाक सांप कुंडली मारे बैठा था। हमें बड़ी परेशानी लाह़िक़ हुई। अब मैं उस मय्यित को वहीं छोड़ कर आप की बारगाह में मस्अला दरयाफ़्त करने आया हूं कि इस ख़ौफ़नाक सूरते ह़ाल में क्या करें ?" ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : "वोह अज़्दहा उस का बुरा अ़मल है जो वोह दुन्या में किया करता था, तुम जाओ और उन तीन क़ब्रों में से किसी एक में उसे दफ़्न कर दो, अगर तुम शख़्स उस के लिये सारी ज़मीन भी खोद डालो तब भी वहां

www.dawateislami.net

उस अज़्दहे को ज़रूर पाओगे।" वोह शख़्स वापस चला गया और उस फ़ौत शुदा शख़्स को उन खोदी हुई क़ब्रों में से एक **क़ब्र** में दफ़्न कर दिया गया और अज़्दहा ब दस्तूर उस **क़ब्र** में मौजूद था। फिर जब हमारा क़ाफ़िला ह़ज के बा'द अपने अ़लाक़े में पहुंचा तो लोगों ने उस शख़्स की ज़ौजा से पूछा : "तुम्हारा शोहर ऐसा कौन सा गुनाह करता था जिस की वजह से उस को ऐसी दर्दनाक सज़ा मिली ?" उस औ़रत ने अफ़्सोस करते हुए कहा : "मेरा शोहर ग़ल्ले का ताजिर था और वोह ग़ल्ले में मिलावट किया करता था। रोज़ाना घर वालों की ज़रूरत के मुत़ाबिक़ गन्दुम निकाल लेता और इतनी मिक़्दार में जव का भूसा गन्दुम में मिला देता, येह उस का रोज़ का मा'मूल था, लगता है उसे इसी (या'नी मिलावट के) गुनाह की सज़ा दी गई है।"

(عیون الحکایات:الحکایۃ الرابعۃ عشرۃ بعد المأۃ،ص ۱۳۲)

www.dawateislami.net

मिलावट का शर-ई हुक्म

मिलावट वाला माल बेचने की जाइज़ सूरतें भी हैं और ना जाइज़ भी, चुनान्चे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن से मिलावट वाले घी की ख़रीदो फ़रोख़्त के बारे में सुवाल हुवा तो फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 17 सफ़ह़ा 150 पर फ़रमाया : "अगर येह मस्नूअ़ जा'ली (या'नी नक़्ली) घी वहां आ़म त़ौर पर बिकता है कि हर शख़्स उस के जा'ल (या'नी नक़्ली) होने पर मुत्त़लअ़ है और बा वुजूदे इत्ति़लाअ़ ख़रीदता है तो बशर्ते कि ख़रीदार उसी बलद (या'नी बस्ती) का हो, न ग़रीबुल वत़न ताज़ा वारिद ना वाक़िफ़ (या'नी मुसाफ़िर, नया आने वाला और अनजान न हो) और घी में इस क़दर मेल (या'नी मिलावट) से जितना वहां आ़म त़ौर पर लोगों के

ज़ेह्न में है अपनी त़रफ़ से और ज़ाइद न किया जाए न किसी त़रह़ उस का जा'ली (या'नी नक़्ली) होना छुपाया जाए। ख़ुलासा येह कि जब ख़रीदारों पर उस की ह़ालत **मक्शूफ़** (या'नी ज़ाहिर) हो और फ़रेब व मुग़ा-लत़ा राह न पाए (या'नी धोका देने की कोई सूरत न पाई जाए) तो उस (या'नी मिलावट वाले घी) की तिजारत जाइज़ है, घी बेचना भी जाइज़ और जो चीज़ उस में मिलाई गई उस का बेचना भी, जैसे **बाज़ारी दूध** कि सब जानते हैं कि इस में पानी है और बा वस्फ़े इ़ल्म (या'नी जानने के बा वुजूद) ख़रीदते हैं, **येह** (या'नी ना जाइज़ होना तो) इस सूरत में है जब कि बाएअ़ (या'नी बेचने वाला) वक़्ते बैअ़ (या'नी बेचते वक़्त) अस्ली ह़ालत ख़रीदार पर ज़ाहिर न कर दे और अगर ख़ुद बता दे तो ज़ाहिरुर्रिवायह[1] व मज़हबे इमामे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ में मुत्लक़न जाइज़ है ख़्वाह (घी में) कितना ही मेल (या'नी मिलावट) हो, अगर्चे ख़रीदार ग़रीबुल वत़न (या'नी परदेसी) हो कि बा'दे बयान फ़रेब (या'नी धोका) न रहा। बिल जुम्ला मदारे कार जुहूरे अम्र (या'नी हर चीज़ का दारो मदार ज़ाहिर) पर है ख़्वाह ख़ुद ज़ाहिर हो जैसे गेहूं में जव (नज़र आ रहे हों), या ब जिह्ते उ़र्फ़ व इश्तिहार (या'नी उ़र्फ़ व शोहरत के ए'तिबार से) मुश्तरी (या'नी ख़रीदार) पर वाज़ेह़ हो जैसे (कि) दूध का मा'मूली पानी, ख़्वाह येह (बेचने वाला) ख़ुद ह़ालते वाक़ेई़ (या'नी ह़क़ीक़ते ह़ाल) तमाम व कमाल (या'नी अच्छी त़रह़) बयान करे।"

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 17, स. 150)

मदीना

1 : फ़िक़्हे ह़-नफ़ी में ज़ाहिरुर्रिवायह उन मसाइल को कहा जाता है जो ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम **मुह़म्मद बिन ह़सन शैबानी** قُدِّسَ سِرُّہُ الرَّبَّانِی की छ किताबों (1) जामेअ़ सग़ीर (2) जामेअ़ कबीर (3) सियर कबीर (4) सियर सग़ीर (5) ज़ियादात (6) मब्सूत़ में मज़्कूर हों।

(13) ग़ुस्ले जनाबत में ताख़ीर

हज़रते सय्यिदुना अबान बिन **अ़ब्दुल्लाह बजली** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं : हमारा एक पड़ोसी मर गया तो हम कफ़न व दफ़्न में शरीक हुए। जब **क़ब्र** खोदी गई तो उस में **बिल्ले** की मिस्ल एक जानवर था, हम ने उस को मारा मगर वोह न हटा। चुनान्चे **दूसरी क़ब्र** खोदी गई तो उस में भी वोही **बिल्ला** मौजूद था ! उस के साथ भी वोही किया गया जो पहले के साथ किया गया था लेकिन वोह अपनी जगह से न हिला। इस के बा'द **तीसरी क़ब्र** खोदी गई तो उस में भी येही मुआ़-मला हुवा, आख़िर लोगों ने मश्वरा दिया कि अब इस को इसी **क़ब्र** में **दफ़्न** कर दो, जब उस को **दफ़्न** कर दिया गया तो **क़ब्र** में से एक **ख़ौफ़नाक आवाज़** सुनी गई ! तो हम उस शख़्स की बेवा के पास गए और उस से मरने वाले के बारे में दरयाफ़्त किया कि उस का **अ़मल** क्या था ? बेवा ने बताया : **''वोह ग़ुस्ले जनाबत** (या'नी फ़र्ज़ ग़ुस्ल) **नहीं करता था।''**

www.dawateislami.net

(شرح الصدوربشرح حال الموتى والقبور،ص ۱۷۹)

ग़ुस्ले जनाबत में ताख़ीर कब ह़राम है

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी किताब ''इस्लामी बहनों की नमाज़'' के सफ़ह़ा 48 पर इस रिवायत को नक़्ल करने के बा'द लिखते हैं : देखा आप ने ! वोह बद नसीब ग़ुस्ले जनाबत करता ही नहीं था। ग़ुस्ले जनाबत में देर कर देना गुनाह नहीं अलबत्ता इतनी ताख़ीर ह़राम है कि नमाज़ का वक़्त निकल जाए। चुनान्चे **बहारे शरीअ़त** में है : ''जिस पर ग़ुस्ल वाजिब है वोह अगर इतनी देर कर चुका कि नमाज़ का आख़िर वक़्त आ गया तो अब फ़ौरन

नहाना फ़र्ज़ है, अब ताख़ीर करेगा गुनहगार होगा।"

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, हिस्सा : 2, स. 521)

जनाबत की ह़ालत में सोने के अह़काम

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू स–लमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं : **उम्मुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यि–दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से पूछा गया, क्या नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जनाबत की ह़ालत में सोते थे ? उन्हों ने बताया : "हां और वुज़ू फ़रमा लेते थे।" (صَحِیحُ البُخارِی ج ۱ ص۱۱۷ حدیث۲۸۶)

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने **रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से तज़्किरा किया : रात में कभी जनाबत हो जाती है (तो क्या किया जाए ?) **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : वुज़ू कर के उ़ज़्वे ख़ास को धो कर सो जाया करो। (ایضاً ص۱۱۸ حدیث ۲۹۰)

शारेह़ बुख़ारी ह़ज़रत अ़ल्लामा मुफ़्ती मुह़म्मद शरीफ़ुल ह़क़ अम्जदी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی मज़्कूरा अह़ादीसे मुबा–रका के तह़्त फ़रमाते हैं : जुनुबी होने (या'नी ग़ुस्ल फ़र्ज़ होने) के बा'द अगर सोना चाहे तो **मुस्तह़ब** है कि वुज़ू करे, फ़ौरन ग़ुस्ल करना वाजिब नहीं अलबत्ता इतनी ताख़ीर न करे कि नमाज़ का वक़्त निकल जाए। येही इस ह़दीस का **मह़मल** (या'नी मा'ना) है। ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से अबू दावूद व नसाई वग़ैरा में मरवी है कि फ़रमाया : उस घर में फ़िरिश्ते नहीं जाते जिस में तस्वीर या कुत्ता या जुनुबी (या'नी बे ग़ुस्ला) हो। (سُنَنُ اَبِی دَاوٗد، ج۱ص۱۰۹ حدیث ۲۲۷)

इस ह़दीस से मुराद येही है कि इतनी देर तक ग़ुस्ल न करे कि नमाज़ का वक़्त निकल जाए और वोह जुनुबी (या'नी बे ग़ुस्ला) रहने का आ़दी हो

और येही मत्लब बुज़ुर्गों के इस इर्शाद का है कि हालते जनाबत में खाने पीने से रिज़्क़ में तंगी होती है। (नुज़्हतुल क़ारी, जि. 1, स. 770, 771)

(14) सूदख़ोर का अन्जाम

हज़रते अ़ल्लामा इब्ने ह़जर मक्की عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं कि जब मैं छोटा था तो पाबन्दी से अपने वालिदे माजिद رَحۡمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيۡه की **क़ब्र** पर हाज़िरी देता और क़ुरआने पाक की तिलावत किया करता था। एक मरतबा र-मज़ानुल मुबारक में नमाज़े फ़ज्र के फ़ौरन बा'द क़ब्रिस्तान गया। उस वक़्त क़ब्रिस्तान में मेरे इ़लावा कोई न था। मैं ने अपने वालिद साहिब رَحۡمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيۡه की **क़ब्र** के क़रीब बैठ कर क़ुरआने पाक की तिलावत शुरूअ़ कर दी, कुछ ही देर गुज़री थी कि अचानक मुझे किसी के ज़ोर ज़ोर से रोने की आवाज़ सुनाई दी। येह आवाज़ एक **क़ब्र** से आ रही थी। मैं घबरा गया और तिलावत छोड़ कर **क़ब्र** की त़रफ़ देखने लगा, ऐसा लगता था जैसे **क़ब्र** के अन्दर किसी को अ़ज़ाब दिया जा रहा हो, **क़ब्र** में दफ़्न मुर्दे की आहो ज़ारी सुन कर मुझे ख़ौफ़ मह़सूस होने लगा। जब दिन ख़ूब चढ़ गया तो वोह आवाज़ सुनाई देना बन्द हो गई। एक शख़्स मेरे क़रीब से गुज़रा तो मैं ने उस से **क़ब्र** के बारे में पूछा, उस ने मुझे बताया कि येह फ़ुलां की **क़ब्र** है। मैं उस शख़्स को पहचान गया, येह बड़ा पक्का नमाज़ी था और बे जा गुफ़्त-गू से परहेज़ किया करता था। ऐसे नेक शख़्स की **क़ब्र** से रोने पीटने की आवाज़ें सुन कर मैं बड़ा ह़ैरान था। मैं ने मा'लूमात कीं तो पता चला कि वोह सूदख़ोर था, शायद इसी वजह से उसे **क़ब्र** में अ़ज़ाब हो रहा था।

(الزواجر عن اقتراف الکبائر، ج ۱:ص ۲۳،۱۳)

www.dawateislami.net

इस हि़कायत से चन्द सिक्कों की ख़ातिर अपने आप को जहन्नम के शो'लों की नज़्र करने की जिसारत करने वाले सूदख़ोरों को इ़ब्रत पकड़नी चाहिये कि कहीं मरने के बा'द इन का भी येही अन्जाम न हो !

मुर्दा उठ बैठा

जौहरआबाद (टन्डो आदम) के एक कपड़े के ताजिर की लर्ज़ा ख़ैज़ दास्तान सुनिये और कांपिये ! अख़्बारी इत्तिलाअ़ के मुताबिक़ क़ब्रिस्तान में एक जनाज़ा लाया गया । इमाम साहि़ब ने जूं ही नमाज़े जनाज़ा की निय्यत बांधी मुर्दा उठ कर बैठ गया ! लोगों में भगदड़ मच गई । इमाम साहि़ब ने भी निय्यत तोड़ दी और कुछ लोगों की मदद से उस को फिर लिटा दिया । **तीन मरतबा मुर्दा उठ कर बैठा ।** इमाम साहि़ब ने मर्हूम के रिश्तेदारों से पूछा **:** क्या मरने वाला **सूदख़ोर** था ? उन्हों ने इस्बात (या'नी तस्दीक़न हां) में जवाब दिया । इस पर इमाम साहि़ब ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाने से इन्कार कर दिया ! लोगों ने जब लाश **क़ब्र** में रखी तो **क़ब्र** ज़मीन के अन्दर धंस गई । इस पर लोगों ने लाश को मिट्टी वग़ैरा से दबा कर बिग़ैर फ़ातिहा ही घर की राह ली । **हम क़हरे क़ह्हार और ग़-ज़बे जब्बार से उसी की पनाह के त़लब गार हैं ।**

सूदो रिश्वत में नुहूसत है बड़ी

और दोज़ख़ में सज़ा होगी कड़ी

(पुर असरार भिकारी, स. 12)

मां से ज़िना करने वाला

नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : **सूद** तहत्तर गुनाहों का मज्मूआ़ है, इन सब में हलका येह है कि आदमी अपनी मां से ज़िना करे।

(سنن ابن ماجه ج٣ ص٢٧ حديث ٥٧٢٢،٤٧٢٢ مُلْتَقَطاً مِنَ الْحَدِيْثَيْن)

पेट में सांप

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, जनाबे अह़मदे मुख़्तार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मे'राज की रात मेरा गुज़र कुछ ऐसे लोगों पर हुवा, जिन के पेट मकानों की त़रह़ थे, उन में सांप थे, जो पेटों के बाहर से भी नज़र आते थे। मैं ने पूछा कि ऐ जिब्रईल ! (عَلَيْهِ السَّلَام) येह कौन लोग हैं ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : **"सूद खाने वाले।"**

(سنن ابن ماجه ج٣ ص ٧١،٧٢ حديث٧٣ ٢٢)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : आज अगर एक मा'मूली कीड़ा पेट में पैदा हो जाए, तो तन्दुरुस्ती बिगड़ जाती है, आदमी बे क़रार हो जाता है, तो समझ लो ! कि जब उस का पेट सांपों बिच्छूओं से भर जाए, तो उस की तक्लीफ़ व बे क़रारी का क्या ह़ाल होगा, रब (عَزَّ وَجَلَّ) की पनाह। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 4, स. 952, ज़ियाउल क़ुरआन पब्लीकेशन्ज़ मर्कज़ुल औलिया लाहोर)

(15) मस्जिद में हंसना

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **ख़ा-तमुन्नबिय्यीन, साहिबे क़ुरआने मुबीन** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मस्जिद में हंसना **क़ब्र** में तारीकी का बाइ़स है।

(مسند الفردوس،الحدیث٣٧٠٦،ج٢،ص٤١)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मस्जिद में सन्जीदा रहने के लिये मस्जिद से बाहर भी बे जा हंसी मज़ाक़ और फ़ुज़ूल गोई की आ़दत तर्क कर दीजिये।

मस्जिदों का कुछ अदब हाए ! न मुझ से हो सका

दर गुज़र फ़रमा इलाही बहरे शाहे बहरो बर

www.dawateislami.net

(वसाइले बख़्शिश, स. 743)

लज़्ज़त पर नहीं हलाकत पर नज़र रखिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज गुनाहों में लज़्ज़त ज़रूर महसूस होती है मगर इन की हलाकत ख़ैज़ियां हमें उस जहान में भुगतनी होंगी जहां से वापसी की कोई सूरत नहीं है ! इन गुनाहों को छोड़ना कड़वी गोली की मिस्ल सही मगर सिह़्ह़त का ख़्वाहिश मन्द दवा की कड़वाहट की परवाह नहीं करता बल्कि शिफ़ा को अपना मक़्सूद जानता है। इस बात को एक ह़िकायत से समझने की कोशिश कीजिये, चुनान्चे

एक शख़्स जिसे दाल बड़ी पसन्द थी और वोह किसी दूसरे खाने ह़त्ता कि गोश्त को भी ख़ातिर में न लाता था। उस का दोस्त उसे मुर्ग़ी खाने

की दा'वत देता लेकिन वोह येह कह कर उस दा'वत को ठुकरा देता कि इस दाल में जो लज़्ज़त है किसी और खाने में कहां ? आख़िर कार एक दिन जब उस के दोस्त ने उसे मुर्ग़ी खाने की दा'वत दी तो उस ने सोचा कि आज मुर्ग़ी भी खा कर देख लेते हैं कि इस का ज़ाएक़ा कैसा है और मुर्ग़ी खाने लगा । जब उस ने पहला लुक़्मा मुंह में रखा तो उसे इतनी लज़्ज़त महसूस हुई कि अपनी मन पसन्द दाल को भूल गया और कहने लगा : ''हटाओ इस दाल को, अब मैं मुर्ग़ी ही खाया करूंगा ।'' बिला तश्बीह जब तक कोई शख़्स महज़ गुनाहों की लज़्ज़त में मुब्तला और नेकियों के सुकून से ना आशना होता है, उसे येह गुनाह ही रौनक़े ज़िन्दगी महसूस होते हैं लेकिन जब उसे नेकियों का नूर हासिल हो जाता है तो वोह गुनाहों की लज़्ज़त को भूल जाता है और नेकियों के ज़रीए सुकूने क़ल्ब का मु-तलाशी हो जाता है ।

www.dawateislami.net

नेकियों में या रसूलल्लाह दील लग जाए काश ! और गुनाहों से मुझे हो जाए नफ़रत या रसूल
लम्हा लम्हा बढ़ रही हैं हाए ! ना फ़रमानियां और गुनाहों की नहीं जाती है आदत या रसूल

(वसाइले बख़्शिश, स. 77)

تُوْبُوْا اِلَى اللّٰهِ (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा करो)

اَسْتَغْفِرُ اللّٰه (मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा करता हूं ।)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क़ब्र को जन्नत का बाग़ बनाने वाले आ'माल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह दुन्या **दारुल अ़मल** (या'नी अ़मल करने की जगह) और आख़िरत **दारुल जज़ा** (या'नी बदला मिलने की जगह) है, जो हम यहां बोएंगे वोही आख़िरत में काटेंगे, गन्दुम बो कर चावल की फ़स्ल ह़ासिल करने की चाहत को दीवाने का ख़्वाब ही कहा जा सकता है। इस लिये समझदारी का तक़ाज़ा येही है कि जो आप काटना चाहते हैं उसी का बीज बोइये। लिहाज़ा जन्नत में जाने के लिये जन्नत में ले जाने वाले आ'माल करने होंगे, वोह जन्नत जहां एक इन्तिहाई ख़ूब सूरत जहान आबाद है, जिस में मौत का आज़ार नहीं, बीमारियां और क़र्ज़ दारियां नहीं, जिस में बुढ़ापे की कमज़ोरी नहीं, ग़रीबी, नादारी, मा'ज़ूरी और मजबूरी नहीं बल्कि येह वोह मक़ाम है जहां ज़िन्दगी की सारी रा'नाइयां जम्अ़ कर दी गई हैं। ह़सीन ह़ूरें, मज़ेदार खाने और फल ऐसे कि लोग तसव्वुर नहीं कर सकते, बिस्तर और लिबास ऐसे उ़म्दा कि आज बादशाहों को नसीब नहीं, कमरे और मह़ल ऐसे शानदार कि दुन्या के बड़े बड़े मह़ल्लात उन के सामने छोटे दिखाई दें। फिर येह सब कुछ हमेशा के लिये मिलेगा, इस में कमी का अन्देशा है न छिन जाने का खटका, लेकिन नेकियां कमाने के लिये कुछ तो मेह़नत करनी पड़ेगी, इन्सान रोज़गार में भी तो मशक़्क़त उठाता है कि इस के नतीजे में रोज़ी मिलती है। आज हम माल को बहुत अहम समझते हैं मगर याद रखिये कि बिलफ़र्ज़ हमारी **क़ब्र** सोने से भर दी जाए, हमारा सारा सरमाया उस में मुन्तक़िल कर दिया जाए तो भी हमें राह़त का एक लम्ह़ा नहीं दिलवा सकता, येह ज़मीन येह प्लॉट भी हमारे किसी काम न आएंगे, हम समझते हैं कि येह ज़मीन

www.dawateislami.net

हमारी है ? नहीं ! बल्कि हम इस के हैं कि एक दिन इसी में समा जाएंगे। औलाद व अह़बाब और रिश्तेदार सिर्फ़ ख़ाक में लिटाना जानते हैं, फिर सिर्फ़ आ'माल ही हमारे रफ़ीक़े क़ब्र होंगे। दुन्या वालों की अश्क बारियां और उदासियां बरज़ख़ में हमारे क्या काम आएंगी, सोग-वारों की कसरत क्या फ़ाएदा देगी ! कभी आप ने सोचा ? ऐ काश ! फ़िक्रे आख़िरत हम पर ऐसी ग़ालिब हो जाए कि जब तारीकी देखें तो **क़ब्र** का अंधेरा याद आ जाए, कोई तक्लीफ़ पहुंचे तो क़ब्र व ह़श्र की परेशानियां सामने आ जाएं, सोने लगें तो मौत और **क़ब्र** में लैटना याद आ जाए, ऐ काश ! हमारा दिल नेकियों में ऐसा लग जाए कि गुनाह के ख़याल से भी दूर भागें ! आइये ! **क़ब्र** को रौनक़ बख़्शने और इसे आराम देह बनाने वाले चन्द आ'माल के बारे में जानते हैं : चुनान्चे

www.dawateislami.net

﴾1 ता 5﴿ नमाज़, रोज़ा ह़ज और ज़कात वग़ैरा

ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि जब नेक आदमी को **क़ब्र** में रखा जाता है तो उस के आ'माले सालिह़ा, नमाज़, रोज़ा, ह़ज, जिहाद और स-दक़ा वग़ैरा उस के पास जम्अ़ हो जाते हैं, जब अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते उस के पैरों की त़रफ़ से आते हैं तो **नमाज़** कहती है : इस से दूर रहो, तुम्हारा यहां कोई काम नहीं, येह इन पैरों पर खड़ा हो कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत किया करता था। फिर वोह फ़िरिश्ते सर की त़रफ़ से आते हैं तो **रोज़ा** कहता है : तुम्हारे लिये इस त़रफ़ कोई राह नहीं है क्यूं कि दुन्या में **अल्लाह** तआ़ला की ख़ुश्नूदी के लिये इस ने बहुत रोज़े रखे और त़वील भूक प्यास बरदाश्त की, फ़िरिश्ते उस के

जिस्म के दूसरे हिस्सों की तरफ़ से आते हैं तो **हज** और **जिहाद** कहते हैं कि हट जाओ, इस ने अपने जिस्म को तक्लीफ़ में डाल कर **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा के लिये ह़ज और जिहाद किया था लिहाज़ा तुम्हारे लिये यहां कोई जगह नहीं है। फिर वोह हाथों की त़रफ़ से आते हैं तो **स-दक़ा** कहता है : मेरे दोस्त से हट जाओ, इन हाथों से कितने स-दक़ात निकले हैं जो महज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये दिये गए और इन हाथों से निकल कर वोह बारगाहे इलाही में मक़्बूलिय्यत के द-रजे पर फ़ाइज़ हुए लिहाज़ा यहां तुम्हारा कोई काम नहीं है। फिर उस मय्यित को कहा जाता है कि तेरी ज़िन्दगी और मौत दोनों बेहतरीन हैं और रह़मत के फ़िरिश्ते उस की **क़ब्र** में जन्नत का फ़र्श बिछाते हैं, उस के लिये जन्नती लिबास लाते हैं, ह़द्दे निगाह तक उस की **क़ब्र** को फ़राख़ कर दिया जाता है और जन्नत की एक क़िन्दील उस की **क़ब्र** में रोशन कर दी जाती है जिस से वोह क़ियामत के दिन तक रोशनी ह़ासिल करता रहेगा।

(مکاشفة القلوب،باب فی بیان القبر و سؤاله،ص ۱۷۱)

मुझे नमाज़ पढ़ने दो

ह़दीसे मुबा-रका में है कि जब मय्यित **क़ब्र** में दाख़िल की जाती है तो उसे (या'नी मय्यित को) सूरज डूबता (या'नी ग़ुरूब होता) हुवा मा'लूम होता है तो वोह आंखें मलता हुवा बैठता है और कहता है : मुझे छोड़ो मैं नमाज़ पढ़ लूं। (سنن ابن ماجه، کتاب الزهد،الحدیث ٤٢٧٢،ج٤،ص٥٠٣)

ह़ज़रते मुल्ला अ़ली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى लिखते हैं : "गोया वोह उस वक़्त अपने आप को दुन्या ही में तसव्वुर करता है कि सुवाल व जवाब रहने दो मुझे फ़र्ज़ अदा करने दो, वक़्त ख़त्म हुवा जा रहा है, मेरी

नमाज़ जाती रहेगी।" फिर लिखते हैं : "येह बात वोही कहेगा जो दुन्या में नमाज़ का पाबन्द था और उस को हर वक़्त नमाज़ का ख़याल लगा रहता था।" (مرقاۃ المفاتیح،تحت الحدیث: ۱۳۸،ج۱،ص ۳۶۱)

क़ब्र में नमाज़ पढ़ने वाले बुज़ुर्ग

हज़रते सय्यिदुना साबित बुनानी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی ने एक मरतबा दुआ मांगी : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अगर तू किसी को **क़ब्र** में नमाज़ पढ़ने की इजाज़त दे तो मुझे ज़रूर देना।" जब उन का इन्तिक़ाल हुवा तो **क़ब्र** में उतारने वालों का बयान है कि जब हम ईंटें रख चुके तो अचानक एक ईंट गिर पड़ी, हम ने देखा कि हज़रते साबित बुनानी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی अपनी **क़ब्र** में नमाज़ पढ़ रहे थे। हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन सम्मा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मुझे आप के मज़ार के क़रीब से गुज़रने वाले कई लोगों ने बताया कि जब हम हज़रते साबित बुनानी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی की **क़ब्र** के पास से गुज़रते हैं तो कुरआन पढ़ने की आवाज़ सुनाई देती है।

(شرح الصدور، ص۱۸۸)

www.dawateislami.net

दो अंधेरे दूर होंगे

शैखे़ तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" जिल्द 1 के सफ़हा 872 पर लिखते हैं : मन्क़ूल है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना मूसा **कलीमुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से फ़रमाया कि मैं ने **उम्मते मुहम्मदिय्यह** عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को **दो नूर** अ़ता किये हैं ताकि वोह **दो अंधेरों** के ज़रर (या'नी नुक़्सान) से महफ़ूज़ रहें।

सय्यिदुना मूसा **कलीमुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! वोह **दो नूर** कौन कौन से हैं ? इर्शाद हुवा : "**नूरे र-मज़ान** और **नूरे कुरआन** ।" अ़र्ज़ की : **दो अंधेरे** कौन कौन से हैं ? फ़रमाया, "एक **क़ब्र** का और दूसरा क़ियामत का ।" (دُرَّۃُ النَّاصِحِین ص۹)

ख़ुश्बूदार क़ब्र

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन ग़ालिब हद्दानी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی को जब दफ़्न किया गया तो उन की **क़ब्र** से मुश्क की महक आने लगी । एक मरतबा किसी ने उन को ख़्वाब में देखा तो पूछा : "आप की **क़ब्र** से ख़ुश्बू कैसी आती है ?" फ़रमाया : "تِلْكَ رَائِحَةُ التِّلَاوَةِ وَالظَّمَاءِ या'नी **येह तिलावत और रोज़े की ब-र-कत है** ।"

(حلیۃ الاولیاء ،الحدیث۸۵۵۳، ج۶، ص۲۶۶)

www.dawateislami.net

नमाज़ो रोज़ा व हज्जो ज़कात की तौफ़ीक़

अ़ता हो उम्मते महबूब को सदा या रब

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

क़ब्र में तिलावत करने वाले बुज़ुर्ग

हज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़िश्शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی नक़्ल करते हैं कि किसी ने हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र बिन मुजाहिद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَاحِد को ख़्वाब में देखा कि वोह कुरआन पढ़ रहे हैं । पूछा : आप तो इन्तिक़ाल फ़रमा चुके हैं, कैसे पढ़ रहे हैं ? जवाब दिया : "इस लिये कि मैं हर नमाज़ और ख़त्मे कुरआन के बा'द दुआ़ किया करता था : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू मुझे **क़ब्र** में तिलावते कुरआन की तौफ़ीक़ देना ।" (شرح الصدور ،ص۱۹۰)

﴾6﴿ सब्र के अन्वार

एक त़वील ह़दीसे पाक में येह भी है कि जब मरने वाले को **क़ब्र** में रखा जाता है तो **नमाज़** उस की दाईं त़रफ़ आती है और **रोज़े** बाईं त़रफ़ और **क़ुरआन व ज़िक्रो अज़्कार** उस के सर के पास और उस का नमाजों की त़रफ़ चलना क़दमों की त़रफ़ और **सब्र क़ब्र** के एक गोशे में आता है। फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अ़ज़ाब भेजता है तो **नमाज़** कहती है : ''पीछे हट कि येह तमाम ज़िन्दगी तकालीफ़ बरदाश्त करता रहा, अब आराम से लैटा है।'' फिर अ़ज़ाब बाईं त़रफ़ से आता है तो **रोज़े** येही जवाब देते हैं, सर की जानिब से आता है तो येही जवाब मिलता है। पस अ़ज़ाब किसी जानिब से भी उस के पास नहीं पहुंचता। जिस राह से जाना चाहता है उसी त़रफ़ से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दोस्त को मह़फ़ूज़ पाता है लिहाज़ा वोह वहां से चला जाता है। उस वक़्त **सब्र** तमाम आ'माल से कहता है कि मैं इस लिये न बोला कि अगर तुम सब आ़जिज़ हो जाते तो मैं बोलता, लेकिन मैं अब पुल सिरात़ और मीज़ान पर काम आऊंगा।

(الموسوعة لابن ابی الدنیا ،الحدیث٢٥٤، ج٥، ص٤٧٢)

बद अ़क़्ली-दगी से तौबा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कामिल मुसल्मान बनने, **ग़ीबत** करने सुनने की आ़दत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों की आ़दत डालने के लिये **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये **म-दनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये **म-दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए रिसाला पुर कीजिये और हर म-दनी

माह की 10 तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाइये और हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में अव्वल ता आख़िर शिर्कत कीजिये। आप की तरग़ीब के लिये ईमान अफ़रोज़ **म-दनी बहार** पेश की जाती है चुनान्चे **लतीफ़आबाद** हैदरआबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के एक इस्लामी भाई ने कुछ इस त़रह़ बताया : बा'ज़ लोगों की सोह़बत में बैठने की बिना पर मेरा ज़ेह्न ख़राब हो गया और मैं तीन साल तक **नियाज़ शरीफ़** और **मीलाद शरीफ़** वग़ैरा पर घर में ए'तिराज़ करता रहा मुझे पहले **दुरूद शरीफ़** से बहुत **शग़फ़** था (या'नी बेह़द दिलचस्पी व रग़बत थी) मगर ग़लत़ सोह़बत के सबब **दुरूदे पाक** पढ़ने का जज़्बा ही दम तोड़ गया। इत्तिफ़ाक़ से एक बार मैं ने **दुरूद शरीफ़** की फ़ज़ीलत पढ़ी तो वोह जज़्बा दोबारा जागा और मैं ने कसरत के साथ **दुरूदे पाक** पढ़ने का मा'मूल बना लिया। एक रात जब **दुरूद शरीफ़** पढ़ते पढ़ते सो गया तो اَلْحَمْدُ لِلّٰه मुझे ख़्वाब में **सब्ज़ गुम्बद** का दीदार हो गया और बे साख़्ता मेरी ज़बान से اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عليكَ يا رسولَ الله जारी हो गया। सुब्ह़ जब उठा तो मेरे दिल के अन्दर हलचल मची हुई थी, मैं इस सोच में पड़ गया कि आख़िर ह़क़ का रास्ता कौन सा है ? हुस्ने इत्तिफ़ाक़ से **दा'वते इस्लामी** वाले आ़शिक़ाने रसूल का सुन्नतों की तरबिय्यत का **म-दनी क़ाफ़िला** हमारे घर की क़रीबी मस्जिद में आया तो किसी ने मुझे **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की दा'वत दी, मैं चूंके **मु-तज़ब-ज़िब** (Confuse) था इस लिये तलाशे ह़क़ के जज़्बे के तह़त **म-दनी क़ाफ़िले** का मुसाफ़िर बन गया। मैं ने सफ़ेद इ़मामा बांधा था मगर सब्ज़ **इ़मामे वाले म-दनी क़ाफ़िले** वालों ने सफ़र के दौरान मुझ पर न किसी क़िस्म की तन्क़ीद की न ही **त़न्ज़** किया बल्कि अज्नबिय्यत ही मह़सूस न होने दी। **अमीरे क़ाफ़िला** ने **म-दनी इन्आ़मात** का तआ़रुफ़ करवाया और उस के मुत़ाबिक़ मा'मूल रखने का मश्वरा दिया। मैं ने **म-दनी इन्आ़मात** का बग़ौर मुत़ा-लआ़ किया तो

चौंक उठा क्यूं कि मैं ने इतने ज़बर दस्त तरबिय्यती **म-दनी फूल** ज़िन्दगी में पहली ही बार पढ़े थे। **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत और **म-दनी इन्आ़मात** की ब-र-कत से मुझ पर **रब्बे लम यज़ल** عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्ल हो गया। मैं ने म-दनी क़ाफ़िले के तमाम मुसाफ़िरों को जम्अ़ कर के ए'लान किया कि कल तक मैं बद अ़क़ीदा था आप सब गवाह हो जाइये कि आज से **तौबा** करता हूं और **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता रहने की निय्यत करता हूं। इस्लामी भाइयों ने इस पर फ़रह़त व मुसर्रत का इज़्हार किया। दूसरे दिन **30** रुपै की **नुक्ती** (बेसन की मिठाई जो मोती के दानों की त़रह़ बनी होती है) मंगवा कर मैं ने सरकारे बग़्दाद हुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म शैख़ **अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी** قُدِّسَ سِرُّہُ الرَّبَّانِی की नियाज़ दिलवाई और अपने हाथों से तक़्सीम की। मैं 35 साल से **सांस के मरज़** में मुब्तला था, कोई रात बिग़ैर तक्लीफ़ के न गुज़रती थी, नीज़ मेरी सीधी **दाढ़ में तक्लीफ़** थी जिस के बाइ़स सह़ीह़ त़रह़ खा भी नहीं सकता था। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! **म-दनी क़ाफ़िले** की ब-र-कत से दौराने सफ़र मुझे सांस की कोई तक्लीफ़ न हुई और اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! मैं सीधी दाढ़ से बिग़ैर किसी तक्लीफ़ के खाना भी खा रहा हूं। मेरा दिल गवाही देता है कि **अ़क़ाइदे अहले सुन्नत** ह़क़ हैं और मेरा हुस्ने ज़न है कि **दा'वते इस्लामी** का म-दनी माह़ोल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के **प्यारे रसूल** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में मक़्बूल है

छाए गर शैत़नत, तो करें देर मत क़ाफ़िले में चलें, क़ाफ़िले में चलो
सोह़बते बद में पड़, कर अ़क़ीदा बिगड़ गर गया हो चलें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 60)

﴾7﴿ मस्जिद रोशन करने की ब-र-कत

हज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मरफ़ूअ़न रिवायत की, कि "जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की **मसाजिद** को रोशन किया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की **क़ब्र** को रोशन फ़रमाएगा और जिस ने इस में **ख़ुश्बूएं** रखीं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जन्नत में उस के लिये खुश्बू मुहय्या करेगा।"

(شرح الصدور بشرح حال الموتی والقبور،ص۱۵۹)

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ इस रिवायत को नक़्ल करने के बा'द लिखते हैं : मा'लूम हुवा मस्जिदें बनाना और इन्हें ऊ़द, लूबान और अगरबत्ती वग़ैरा से खुश्बूदार रखना कारे सवाब है। मगर मस्जिद में दिया सलाई (या'नी माचिस की तीली) न जलाइये कि इस से बारूद की **बदबू** निकलती है और मस्जिद को **बदबू** से बचाना वाजिब है। बारूद का **बदबूदार** धुवां अन्दर न आने पाए इतनी दूर बाहर से लूबान या अगरबत्ती वग़ैरा सुलगा कर मस्जिद में लाइये। अगरबत्तियों को किसी बड़े त़श्त वग़ैरा में रखना ज़रूरी है ताकि इस की राख मस्जिद के फ़र्श वग़ैरा पर न गिरे। अगरबत्ती के **पेकिट** पर अगर जानदार की तस्वीर बनी हुई हो तो उस को खुरच डालिये। मस्जिद (नीज़ घरों और कारों वग़ैरा) में "एर फ्रेशनर" (AIR FRESHNER) से खुश्बू का छिड़काव मत कीजिये कि उस के कीमियावी माद्दे फ़ज़ा में फैल जाते और सांस के ज़रीए **फेफड़ों** में पहुंच कर नुक़्सान पहुंचाते हैं। एक तिब्बी तह़क़ीक़ के मुताबिक़ एर फ्रेशनर के इस्ति'माल से जिल्द का सरत़ान या'नी (SKIN CANCER) हो सकता है। (मस्जिदें खुश्बूदार रखिये, स. 2,3)

मज़ीद मा'लूमात के लिये मक-त-बतुल मदीना के मत्बूआ़ रिसाले "**मस्जिदें ख़ुश्बूदार रखिये**" का मुता-लआ़ कीजिये।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾8﴿ मरीज़ की इ़यादत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अ़र्ज़ की, कि "मरीज़ की **इ़यादत** करने वाले को क्या अज्र मिलेगा ?" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : "उस के लिये दो फ़िरिश्ते मुक़र्रर किये जाएंगे जो क़ियामत तक उस की **क़ब्र** में रोज़ाना उस की इ़यादत करेंगे।" (شرح الصدور بشرح حال الموتی والقبور،ص۱۵۹)

www.dawateislami.net

इ़यादत के म-दनी फूल

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ़ 310 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" के ह़िस्सा 16 सफ़ह़ा 148 पर **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ❁ मरीज़ की इ़यादत करना सुन्नत है ❁ अगर मा'लूम है कि इ़यादत को जाएगा तो उस बीमार पर गिरां गुज़रेगा ऐसी ह़ालत में इ़यादत न करे ❁ इ़यादत को जाए और मरज़ की सख़्ती देखे तो मरीज़ के सामने येह ज़ाहिर न करे कि तुम्हारी ह़ालत ख़राब है और न सर हिलाए जिस से ह़ालत का ख़राब होना समझा जाता है ❁ उस के सामने ऐसी बातें करनी

चाहिएं जो उस के दिल को भली मा'लूम हों ❁ उस की मिज़ाज पुर्सी करे ❁ उस के सर पर हाथ न रखे मगर जब कि वोह ख़ुद इस की ख़्वाहिश करे । ❁ फ़ासिक़ की इ़यादत भी जाइज़ है क्यूं कि इ़यादत हुक़ूक़े इस्लाम से है और फ़ासिक़ भी मुस्लिम है । (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 16, स. 148)

मरीज़ के लिये एक दुआ़

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जिस ने किसी ऐसे मरीज़ की इ़यादत की जिस की मौत का वक़्त क़रीब न आया हो और सात मरतबा येह अल्फ़ाज़ कहे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे उस मरज़ से शिफ़ा अ़त़ा फ़रमाएगा : اَسْئَلُ اللّٰہَ الْعَظِیْمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِیْمِ اَنْ یَّشْفِیَکَ या'नी मैं अ़-ज़मत वाले, अ़र्शे अ़ज़ीम के मालिक या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से तेरे लिये शिफ़ा का सुवाल करता हूं।"

(سنن ابی داوٗد ، کتاب الجنائز ، باب الدعاء للمریض عند العیادۃ ، الحدیث٦٠١٣، ج٣ ، ص ١٥٢)

म-दनी इन्आ़मात और इ़यादत

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने इस पुर फ़ितन दौर में आसानी से नेकियां करने और गुनाहों से बचने के त़रीक़ए कार पर मुश्तमिल शरीअ़त व त़रीक़त का जामेअ़ मज्मूआ़ बनाम "**म-दनी इन्आ़मात**" ब सूरते सुवालात मुरत्तब किया है । इस्लामी भाइयों के लिये **72**, इस्लामी बहनों के लिये **63**, त़-ल-बए इ़ल्मे दीन के लिये **92**, दीनी त़ालिबात के लिये **83**, म-दनी मुन्नों और म-दनी मुन्नियों के लिये **40** जब कि ख़ुसूसी

इस्लामी भाइयों (या'नी गूंगे बहरों) के लिये **27 म-दनी इन्आ़मात** हैं। बे शुमार इस्लामी भाई, इस्लामी बहनें और त़-लबा **म-दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना सोने से क़ब्ल **''फ़िक्रे मदीना करते हुए''** या'नी अपने आ'माल का जाएज़ा ले कर **म-दनी इन्आ़मात** के जेबी साइज़ रिसाले में दिये गए ख़ाने पुर करते हैं। इन म-दनी इन्आ़मात को इख़्लास के साथ अपना लेने के बा'द नेक बनने और गुनाहों से बचने की राह में ह़ाइल रुकावटें **अल्लाह** तआ़ला के फ़ज़्लो करम से अक्सर दूर हो जाती हैं और इस की ब-र-कत से اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न भी बनता है। इन म-दनी इन्आ़मात में से एक म-दनी इन्आ़म मरीज़ की इ़यादत भी है, चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना के मत़्बूआ़ 23 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले **''म-दनी इन्आ़मात''** के सफ़ह़ा 17 पर म-दनी इन्आ़म नम्बर 53 है **:** क्या आप ने इस हफ़्ते कम अज़् कम एक मरीज़ या दुखी की घर या अस्पताल जा कर सुन्नत के मुत़ाबिक़ **ग़म ख़्वारी** की और उस को तोह़फ़ा (ख़्वाह मक-त-बतुल मदीना का शाएअ़ कर्दा रिसाला या पेम्फ़लेट) पेश करने के साथ साथ **ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या** के इस्ति'माल का मश्वरा दिया ?

उतार दे मेरी नस नस में ''म-दनी इन्आ़मात''
नसीब होता रहे ''म-दनी क़ाफ़िला'' या रब

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾9﴿ सूरए मुल्क पढ़ने का इन्आ़म

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि "जब बन्दा **क़ब्र** में जाएगा तो **अ़ज़ाब** उस के क़दमों की जानिब से आएगा तो उस के क़दम कहेंगे : "तेरे लिये मेरी त़रफ़ से कोई रास्ता नहीं, क्यूं कि येह रात में **सूरए मुल्क** पढ़ा करता था।" फिर अ़ज़ाब उस के सीने या पेट की त़रफ़ से आएगा तो वोह कहेगा कि "तुम्हारे लिये मेरी जानिब से कोई रास्ता नहीं, क्यूं कि येह रात में **सूरए मुल्क** पढ़ा करता था।" फिर वोह उस के सर की त़रफ़ से आएगा तो सर कहेगा कि "तुम्हारे लिये मेरी तरफ़ से कोई रास्ता नहीं, क्यूं कि येह रात में **सूरए मुल्क** पढ़ा करता था।" तो येह सूरत रोकने वाली है, अ़ज़ाबे क़ब्र से रोकती है, **तौरात** में इस का नाम **सूरए मुल्क** है। जो इसे रात में पढ़ता है बहुत ज़ियादा और अच्छा अ़मल करता है।

(المستدرك ،کتاب التفسیر ، باب المانعة من عذاب القبر ، الحدیث ۳۸۹۲، ج۳ ،ص ۳۲۲)

क़ब्र में सूरए मुल्क पढ़ी जा रही थी

ख़त़ीबे सामरा ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ह़सन सामरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی बहुत परहेज़ गार बुज़ुर्ग थे, उन्हों ने लोगों को सामरा के क़ब्रिस्तान में एक **क़ब्र** दिखाई कि मुझे यहां से मुसल्सल **सूरए मुल्क** पढ़ने की आवाज़ सुनाई दी थी। (شرح الصدور،ص۱۹۰)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सूरए मुल्क की तिलावत करना एक म-दनी इन्आ़म भी है चुनान्चे म-दनी इन्आ़म नम्बर 3 है : क्या आज आप ने नमाज़े पन्जगाना के बा'द नीज़ सोते वक़्त कम अज़ कम

एक एक बार **आ-यतुल कुर्सी, सू-रतुल इख़्लास** और **तस्बीहे फ़ातिमा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا पढ़ी ? नीज़ रोज़ाना रात में **सू-रतुल मुल्क** पढ़ या सुन ली ?

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

क़ब्र में फ़िरिश्ता क़ुरआन पढ़ाएगा

रसूले स-क़लैन, सुल्ताने कौनैन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो शख़्स क़ुरआन पढ़ना शुरूअ़ करे और उसे अज़्बर करने से पहले ही मर जाए तो उस की **क़ब्र** में एक फ़िरिश्ता उसे क़ुरआन शरीफ़ सिखाता है तो इस ह़ाल में वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात करेगा कि उसे पूरा क़ुरआन ह़िफ़्ज़ होगा।"

(کنز العمال،الحدیث ٦٤٤٢،ج١،ص٣٧٢)

﴾10﴿ सूरए यासीन शरीफ़ की ब-र-कत

मुल्के यमन में जब लोग एक मुर्दे को दफ़्न कर के वापस होने लगे तो उन्हों ने **क़ब्र** में मारने पीटने की आवाज़ सुनी। फिर अचानक **क़ब्र** से एक काला कुत्ता नुमूदार हुवा। एक शख़्स ने पूछा : "तू कौन है ?" उस ने जवाब दिया : "मैं मय्यित का बुरा अ़मल हूं।" पूछा : "पिटाई तुम्हारी हो रही थी या उस मुर्दे की ?" उस ने कहा : "मेरी ही हो रही थी, **सूरए यासीन** और दूसरी सूरतें इस के पास थीं, वोह मेरे और इस के दरमियान ह़ाइल हो गईं और मुझ को मार भगाया।"

(شرح الصدور ص١٨٦)

﴾11﴿ सूरए सज्दह शफ़ाअ़त करेगी

ह़ज़रते ख़ालिद बिन मा'दान ताबेई़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है

कि **सूरए सज्दह** क़ब्र में अपने पढ़ने वाले के बारे में झगड़ा करेगी और अ़र्ज़ करेगी : "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अगर मैं तेरी किताब में से हूं तो इस के बारे में मेरी सिफ़ारिश क़बूल फ़रमा ले और अगर मैं तेरी किताब में से नहीं हूं तो मुझे अपनी किताब से मिटा दे ।" **सूरए सज्दह** परिन्दे की मानिन्द होगी और अपने परों को पढ़ने वाले पर फैला देगी, उस के हक़ में शफ़ाअ़त करेगी और उसे क़ब्र के अ़ज़ाब से बचाएगी । (درمنثور ج٦ ص٥٣٥)

﴾12﴿ सूरए ज़िलज़ाल पढ़ने की ब-र-कतें

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है : जिस ने जुमुआ़ के दिन मग़रिब के बा'द दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ी और हर रक्अ़त में सूरए फ़ातिहा के बा'द "اِذَا زُلْزِلَت" (या'नी **सूरए ज़िलज़ाल**) पन्दरह मरतबा पढ़ी तो **अल्लाह** तआ़ला उस पर सक्राते मौत की सख़्ती नर्म कर देगा, उसे अ़ज़ाबे क़ब्र से महफ़ूज़ फ़रमा देगा और पुल सिरात़ पर साबित क़दमी अ़ता फ़रमाएगा । (شرح الصدور ص١٨٦)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब मय्यित क़ब्र में दफ़्न की जाती है तो क़ब्र उसे दबाती है, क़ब्र के दबाने से न मोमिन बचता है न काफ़िर, न नेक न बद, बच्चा न जवान, फ़र्क़ सिर्फ़ येह है कि काफ़िर सख़्त दबाव में पकड़ा जाता है उस की पस्लियां इधर उधर हो जाती हैं और मोमिन के लिये दबाव ऐसा होता है जिस त़रह़ मां अपने बच्चे को प्यार से दबाती है, बिल्ली अपने बच्चे को भी मुंह में दबाती है और चूहे को भी मगर दोनों में फ़र्क़ है ।

(माख़ूज़ अज़ मिरआतुल मनाजीह, जि. 1, स. 141 व जि. 2, स. 456, 457)

﴾13﴿ सूरए इख़्लास पढ़ने का फ़ाएदा

हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जिस ने म-रज़ुल मौत में **सूरए इख़्लास** पढ़ी तो वोह क़ब्र के फ़ितने और इस के दबाने से महफ़ूज़ रहेगा।

(المعجم الاوسط ج٤ ص٢٢٢ حديث ٥٧٨٥)

﴾14﴿ शबे जुमुआ़ का दुरूद

बुज़ुर्गाने दीन علیہم رحمۃُ اللّٰہِ الْمُبِین ने फ़रमाया कि जो शख़्स हर शबे जुमुआ़ (जुमुआ़ और जुमा'रात की दरमियानी रात) इस दुरूद शरीफ़ को पाबन्दी से कम अज़ कम एक मरतबा पढ़ेगा :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَ بَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الْحَبِيْبِ الْعَالِى الْقَدْرِ الْعَظِيْمِ الْجَاهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ

www.dawateislami.net

वोह मौत के वक़्त सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत करेगा और **क़ब्र** में दाख़िल होते वक़्त भी, यहां तक कि वोह देखेगा कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उसे **क़ब्र** में अपने रह़मत भरे हाथों से उतार रहे हैं। (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السّادات ص ١٥١ ملخصًا)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تعالٰى على محمَّد

﴾15﴿ क़ब्र की ग़म गुसार

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم फ़रमाते हैं कि मैं ने एक जनाज़े को कन्धा देने के बा'द कहा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरे लिये मौत में ब-र-कत दे। तो एक ग़ैबी आवाज़ सुनाई दी : "और मौत के बा'द भी।" येह सुन कर मुझ पर बहुत ख़ौफ़ त़ारी हुवा। जब

लोग उसे दफ़्न कर चुके तो मैं **क़ब्र** के पास बैठ कर अह़वाले आख़िरत पर ग़ौरो फ़िक्र करने लगा। अचानक **क़ब्र** से एक ह़सीनो जमील शख़्स बाहर निकला, उस ने साफ़ सुथरे कपड़े पहन रखे थे जिन से ख़ुश्बू महक रही थी। उस ने मुझ से कहा कि : "ऐ इब्राहीम !" मैं ने कहा : "**लब्बैक।**" फिर मैं ने उन से पूछा : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए, आप कौन हैं ?" उन्हों ने जवाब दिया : तख़्त पर से "मौत के बा'द भी" कहने वाला मैं ही हूं। मैं ने कहा कि आख़िर आप का नाम क्या है ? तो उन्हों ने कहा कि मेरा नाम **सुन्नत** है मैं दुन्या में इन्सान की हमदर्द होती हूं और **क़ब्र** में नूर व मूनिस व ग़म गुसार और क़ियामत में जन्नत की त़रफ़ रहनुमा और क़ाइद बनती हूं। (شرح الصدور، ص٢٠٤)

www.dawateislami.net

﴾16﴿ तहज्जुद का नूर

ताजदारे ह़रम, सरापा जूदो करम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक मरतबा ह़ज़रते अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से फ़रमाया : "जब तुम कहीं सफ़र पर रवाना होते हो तो कितनी तय्यारी करते हो ! क़ियामत की तय्यारी का आ़लम क्या होगा ! ऐ अबू ज़र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ! क्या मैं तुम को ऐसी शै की ख़बर न दूं जो तुम्हें क़ियामत के दिन नफ़्अ़ दे ?" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : मेरे मां बाप आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर क़ुरबान ज़रूर इर्शाद फ़रमाइये तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "सख़्त गरमी के मौसिम में **ह़श्र** के लिये रोज़ा रखो और रात की तारीकी में दो रक्अ़तें पढ़ो ताकि **क़ब्र**

में रोशनी हो।''

(موسوعة لابن ابی الدنیا، کتاب التهجد وقیام اللیل، الحدیث ۱۰، ج ۱، ص ۲٤۷)

ह़ज़रते सय्यिदुना शफ़ीक़ बल्ख़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی फ़रमाते हैं : हम ने पांच चीज़ों को पांच में पाया (1) गुनाहों के इ़लाज को नमाज़े चाश्त में (2) क़ब्रों की रोशनी को **तहज्जुद** में (3) मुन्कर नकीर के जवाबात को तिलावते क़ुरआन में (4) पुल सिरात़ पर से सलामत गुज़रने को रोज़ा और स-दक़ा व ख़ैरात में (5) ह़श्र में सायए अ़र्श पाने को गोशा नशीनी में।

(مُلَخَّصاً مِنْ شَرْحِ الصُّدُور، ص۱٤٦)

नमाज़े **तहज्जुद** अदा करना एक म-दनी इन्आ़म भी है चुनान्चे म-दनी इन्आ़म नम्बर 19 है : क्या आज आप ने नमाज़े **तहज्जुद, इशराक़ व चाश्त** और **अव्वाबीन** अदा फ़रमाए ?

www.dawateislami.net

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾17﴿ एक हज़ार अन्वार

सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं कि ''जिस शख़्स ने **ईद** के दिन तीन सो मरतबा **سُبْحٰنَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ** पढ़ा और फ़ौत हो जाने वाले मुसल्मानों की रूह़ों को इस का **सवाब** हदिय्या किया तो हर मुसल्मान की **क़ब्र** में **एक हज़ार अन्वार** दाख़िल होते हैं और जब वोह मरेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की **क़ब्र** में एक हज़ार अन्वार दाख़िल फ़रमाएगा।''

(مکاشفة القلوب، ص۳۰۸)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾18﴿ नेकी की दा'वत

अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा **कलीमुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह्य फ़रमाई : **''भलाई की बातें ख़ुद भी सीखो और दूसरों को भी सिखाओ, मैं भलाई सीखने और सिखाने वालों की क़ब्रों को रोशन फ़रमाऊंगा ताकि उन को किसी क़िस्म की वह्शत न हो।''** (حلیۃ الاولیاء ج٦،ص٥،رقم٧٦٢٢)

मुबल्लिग़ीन की क़ब्रें اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जग-मगाएंगी

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ इस रिवायत को नक़्ल करने के बा'द लिखते हैं : **इस** रिवायत से नेकी की बात सीखने सिखाने का अज्रो सवाब मा'लूम हुवा। **सुन्नतों भरा बयान** करने या **दर्स** देने और सुनने वालों के तो वारे ही न्यारे हो जाएंगे, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन की क़ब्रें अन्दर से जगमग जगमग कर रही होंगी और उन्हें किसी क़िस्म का ख़ौफ़ महसूस नहीं होगा। **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए **नेकी की दा'वत** देने वालों, **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र और **फ़िक्रे मदीना** कर के **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला रोज़ाना पुर करने की तरग़ीब दिलाने वालों और **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** की दा'वत पेश करने वालों नीज़ **मुबल्लिग़ीन** की **नेकी की दा'वत** को सुनने वालों की क़ुबूर भी اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **हुज़ूर मुफ़ीज़ुन्नूर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के नूर के सदक़े **नूरुन अ़ला नूर** होंगी।

अ़त़ा हो ''नेकी की दा'वत'' का ख़ूब जज़्बा कि
दूं धूम सुन्नते महबूब की मचा या रब

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾19﴿ दुन्या में मुसीबत उठाना

किसी बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन ज़कवान عَلَيْهِ رَحْمَةُالرَّحْمٰن को उन की वफ़ात के एक साल बा'द ख़्वाब में देखा तो इस्तिफ़्सार किया : कौन सी क़ब्रें ज़ियादा रोशन हैं ? फ़रमाया, दुन्या में मुसीबतें उठाने वालों की। (تنبیہ المغترین،الباب الثالث، ص١٦٦)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! वोह घुप अंधेरी क़ब्र जिसे दुन्या का कोई बर्क़ी बल्ब रोशन नहीं कर सकता اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के नूर के सदक़े परेशान ह़ालों के लिये नूर नूर हो कर जग-मगा उठेगी।

www.dawateislami.net

ख़्वाब में भी ऐसा अन्धेरा कभी देखा न था जैसा अन्धेरा हमारी क़ब्र में सरकार है

या रसूलल्लाह आ कर क़ब्र रोशन कीजिये ज़ात बेशक आप की तो मम्बए अन्वार है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾20﴿ लोगों को तक्लीफ़ न पहुंचाने का इन्आ़म

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू काहिल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि जो लोगों को तक्लीफ़ पहुंचाने से बाज़ रहा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे **क़ब्र** की तक्लीफ़ से बचाएगा। (المعجم الکبیر،الحدیث ٩٢٨، ج ١٨، ص ٣٦١)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किसी मुसल्मान की बिला वज्हे शर-ई दिल आज़ारी कबीरा गुनाह, ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला

काम है। सुल्ताने दो जहान صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''مَنْ اٰذٰى مُسْلِمًا فَقَدْ اٰذَانِىْ وَمَنْ اٰذَانِىْ فَقَدْ اٰذَى اللّٰه'' या'नी जिस ने (बिला वज्हे शर-ई) किसी मुसल्मान को ईज़ा दी उस ने मुझे ईज़ा दी और जिस ने मुझे ईज़ा दी उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ईज़ा दी।''

(المعجم الاوسط ،ج ٢ ص ٣٨٦ الحديث ٣٦٠٧)

﴾21﴿ ईसाले सवाब

शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि **क़ब्र** में मय्यित डूबते हुए फ़रियादी की त़रह़ होती है कि मां बाप भाई या दोस्त की दुआ़ए ख़ैर के पहुंचने की मुन्तज़िर रहती है, फिर जब उसे दुआ़ पहुंच जाती है तो येह उसे दुन्या की तमाम ने'मतों से ज़ियादा प्यारी होती है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ज़मीन वालों की दुआ़ से **क़ब्र** वालों को सवाब के पहाड़ देता है और यक़ीनन ज़िन्दा का मुर्दों के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करना उन के लिये तोह़फ़ा है।

(شعب الايمان،باب فی برالوالدين،الحديث٧٩٠٥،ج٦،ص٢٠٣)

ज़िन्दों का तोह़फ़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं ने सरकारे मदीना, सुल्ताने बा क़रीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से सुना कि ''जब कोई मय्यित को ईसाले सवाब करता है तो जिब्राईल (عَلَيْهِ السَّلَام) उसे एक नूरानी त़बाक़ में रख कर **क़ब्र** के कनारे खड़े हो जाते हैं और कहते हैं : ''ऐ गहरी **क़ब्र** के साथी ! येह तोह़फ़ा तेरे घर वालों ने भेजा है, इसे क़बूल कर ले।'' फिर जब वोह सवाब उस की क़ब्र में दाख़िल होता है तो वोह मुर्दा उस से

बेहद ख़ुशी महसूस करता है और उस के वोह पड़ोसी ग़मगीन हो जाते हैं जिन की त़रफ़ कोई शै हदिय्या नहीं की गई होती।''

(المعجم الاوسط للطبرانی،باب من اسمه محمد،الحدیث ٦٥٠٤،ج٥،ص٣٧)

''करम'' के तीन हुरूफ़ की निस्बत से ईसाले सवाब की 3 ह़िकायात

(1) बाग़ स-दक़ा कर दिया

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से रिवायत है कि एक सह़ाबी ने अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरी मां फ़ौत हो चुकी है अगर मैं उस की त़रफ़ से स-दक़ा दूं तो क्या वोह उसे **नफ़्अ़** पहुंचाएगा ?'' रह़मते दारैन, ताजदारे ह़-रमैन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''हां।'' उन्हों ने अ़र्ज़ की : ''मेरे पास एक बाग़ है, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم गवाह रहिये मैं ने येह **बाग़** उस की त़रफ़ से स-दक़ा कर दिया।''

(الترمذی،کتاب الزکوۃ، باب ماجاء فی الصدقة، الحدیث ٦٦٩ ج٢،ص١٤٨)

(2) फ़सादी की मग़्फ़िरत

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन सालेह़ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं कि मैं ने अबू नवास को (उस के मरने के बा'द) ख़्वाब में देखा कि वोह बड़ी ने'मतों में है। मैं ने उस से कहा कि ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तेरे साथ क्या मुआ़-मला किया ?'' उस ने जवाब दिया कि ''**अल्लाह** तआ़ला ने मेरी बख़्शिश फ़रमाने के साथ साथ येह ने'मतें भी अ़त़ा फ़रमाई हैं।''

मैं ने दरयाफ़्त किया कि "तेरी मग़्फ़िरत का सबब क्या चीज़ बनी ह़ालां कि तू तो फ़सादी था ?" उस ने कहा कि "दर अस्ल एक नेक शख़्स रात को क़ब्रिस्तान में आया और अपनी चादर बिछा कर उस पर दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ी और इन दोनों रक्अ़तों में दो हज़ार मरतबा सूरए इख़्लास या'नी قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَد पढ़ कर उस का सवाब तमाम क़ब्रिस्तान वालों को बख़्श दिया। चुनान्चे इस की ब-र-कत से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तमाम क़ब्रिस्तान वालों की मग़्फ़िरत फ़रमा दी और चूंकि मैं भी उन तमाम में शामिल था लिहाज़ा मुझे भी बख़्श दिया।" (شرح الصدور، ص۲۹۲)

(3) रोज़ाना एक क़ुरआने पाक ईसाले सवाब करने वाला नौ जवान

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه इर्शाद फ़रमाते हैं कि किसी शख़्स ने ख़्वाब में देखा कि क़ब्रिस्तान की तमाम क़ब्रें फट गई हैं और मुर्दे उन से बाहर निकल कर जल्दी जल्दी ज़मीन से कोई चीज़ समेट रहे हैं, लेकिन मुर्दों में से एक शख़्स फ़ारिग़ बैठा हुवा है, वोह कुछ नहीं चुनता। इस शख़्स ने उसे जा कर सलाम किया और पूछा : "येह लोग क्या चुन रहे हैं ?" उस ने जवाब दिया : "ज़िन्दा लोग जो कुछ स-दक़ा, दुआ़ या दुरूद वग़ैरा इस क़ब्रिस्तान वालों को भेजते हैं, उस की ब-रकात समेट रहे हैं।" इस ने कहा : "तुम क्यूं नहीं चुनते ?" जवाब दिया : "मुझे इस वजह से फ़राग़त है कि मेरा एक बेटा ह़ाफ़िज़े क़ुरआन है जो फ़ुलां बाज़ार में ह़ल्वा बेचता है, वोह रोज़ाना एक क़ुरआने पाक पढ़ कर मुझे बख़्शता (या'नी ईसाले सवाब करता) है।" येह शख़्स सुब्ह़ उसी बाज़ार में गया, देखा कि एक नौ जवान ह़ल्वा बेच रहा है और उस के होंट हिल रहे हैं। इस शख़्स ने जब नौ जवान से पूछा "तुम क्या पढ़ रहे हो ?" तो उस ने जवाब

दिया कि मैं रोज़ाना एक कुरआने पाक पढ़ कर अपने वालिदैन को बख़्शता (या'नी ईसाले सवाब करता) हूं, उसी की तिलावत कर रहा हूं। कुछ अ़र्से बा'द उस ने ख़्वाब में दोबारा उसी क़ब्रिस्तान के मुर्दों को कुछ चुनते हुए देखा, इस मरतबा वोह शख़्स भी चुनने में मसरूफ़ था कि जिस का बेटा उसे कुरआने पाक पढ़ कर बख़्शा (या'नी ईसाले सवाब) करता था, उसे चुनते देख कर इसे बहुत तअ़ज्जुब हुवा, इतने में उस की आंख खुल गई। सुब्ह उठ कर उसी बाज़ार में गया और तह़क़ीक़ की तो मा'लूम हुवा कि ह़ल्वा बेचने वाले नौ जवान का भी इन्तिक़ाल हो चुका है।

(روض الرياحين، الحكاية السابعة والخمسون بعد المائة،ص١٧٧)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾22﴿ स-दक़ा देने से क़ब्र की गरमी दूर होती है

ह़ज़रते सय्यिदुना **उ़क़्बा** رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है कि **सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "बेशक किसी शख़्स का **स-दक़ा** उस की **क़ब्र** से **गरमी** को दूर कर देता है और क़ियामत के दिन मोमिन अपने **सदक़े के साए** में होगा।"

(المعجم الكبير،الحديث٧٨٨،ج١٧، ص٢٨٦)

राहे ख़ुदा में ख़र्च कीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! राहे ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ में ख़र्च करने में फ़ाएदा ही फ़ाएदा है, आख़िरत में अज्रो सवाब की ह़क़दारी तो है ही, बा'ज़ अवक़ात दुन्या में भी इज़ाफ़े के साथ हाथों हाथ इस का **ने'मल बदल** अ़त़ा किया जाता है और येह यक़ीनी बात है कि

राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में देने से बढ़ता है घटता नहीं जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की म-दनी सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : स-दक़ा माल में कमी नहीं करता और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुआ़फ़ करने की वजह से बन्दे की इ़ज़्ज़त ही बढ़ाता है और जो **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा की ख़ातिर इन्किसारी करता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे बुलन्दी अ़ता फ़रमाता है।

(صحیح مسلم ص ۱۳۹۷ حدیث ۲۵۸۸)

अपने स-दक़ात दा'वते इस्लामी को दीजिये

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर तह़रीक दा'वते इस्लामी 41 से ज़ियादा शो'बाजात में म-दनी काम कर रही है। बराए करम ! अपनी ज़कात व उ़श्र और स-दक़ात व ख़ैरात दा'वते इस्लामी को देने के साथ साथ अपने रिश्तेदारों, पड़ोसियों और दोस्तों पर भी इन्फ़िरादी कोशिश फ़रमा कर उन के ज़कात व उ़श्र और दीगर अ़तिय्यात **दा'वते इस्लामी के म-दनी मर्कज़** पर पहुंचा कर या किसी ज़िम्मादार इस्लामी भाई को दे कर या म-दनी मर्कज़ पर फ़ोन कर के किसी इस्लामी भाई को त़लब फ़रमा कर उन्हें इ़नायत फ़रमा दीजिये। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप का सीना मदीना बनाए। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास,
मिरज़ा पूर, अह़मदआबाद, गुजरात
फ़ोन : 09327126325

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾23 ता 29﴿ ख़त्म न होने वाले 7 अ़मल

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''मोमिन के इन्तिक़ाल के बा'द उस के अ़मल और नेकियों में से जो कुछ उसे **मिलता** रहेगा, वोह येह है : (1) इस का वोह इ़ल्म जिसे इस ने सिखाया और फैलाया और (2) नेक बेटा जिसे इस ने छोड़ा, या (3) वोह क़ुरआने पाक जिसे विरसे में छोड़ा, या (4) वोह मस्जिद जिसे इस ने बनाया, या (5) मुसाफ़िर ख़ाना बनाया, या (6) किसी नह्र को जारी किया, या (7) वोह स-द-क़ए जारिया जिसे इस ने ह़ालते सिह़्ह़त और ज़िन्दगी में अपने माल से दिया, इन का **सवाब** इसे मौत के बा'द भी मिलता रहेगा।'' (ابن ماجه ، كتاب السنة ،باب ثواب معلم الناس الخير،الحديث٢٤٢،ج ١، ص ١٥٨)

www.dawateislami.net

इ़ल्म क़ब्र में साथ रहेगा

सय्यिदुल मुर-सलीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जब आ़लिम फ़ौत होता है तो उस का इ़ल्म क़ियामत तक **क़ब्र** में उस को मानूस करने के लिये मु-तशक्किल हो कर (या'नी शक्ल इख़्तियार कर के) रहता है और ज़मीन के कीड़ों को दूर करता है। (شرح الصدور للسيوطی،باب احاديث الرسول ﷺ فی عدة امور،ص ١٥٨)

औलाद को इ़ल्मे दीन सिखाने की ब-र-कत

ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा **रूहुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام एक **क़ब्र** के पास से गुज़रे तो देखा कि **क़ब्र** में मुर्दे को अ़ज़ाब हो रहा था। कुछ देर बा'द फिर गुज़रे तो देखा कि **क़ब्र** में नूर ही नूर है और वहां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की **रह़मत** बरस रही है। आप عَلَیْہِ السَّلَام बहुत ह़ैरान हुए

और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ की : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे इस का राज़ बता दे कि पहले इस पर अ़ज़ाब क्यूं हो रहा था और अब इसे जन्नत की ने'मतें कैसे मिल गईं ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ ईसा ! येह सख़्त गुनहगार और बदकार था, इस वजह से अ़ज़ाब में गरिफ़्तार था, मरने के बा'द इस के घर **लड़का** पैदा हुवा और आज इस को मद्रसे भेजा गया, उस्ताज़ ने इसे **बिस्मिल्लाह** पढ़ाई, मुझे ह़या आई कि मैं ज़मीन के अन्दर उस शख़्स को **अ़ज़ाब** दूं जिस का बच्चा ज़मीन पर मेरा नाम ले रहा है।"

(التفسیر الکبیر، الباب الحادی عشر، ج ۱، ص ۱۵۵)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इल्मे दीन सिखाने का एक ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के मदारिसुल मदीना और जामिआ़तुल मदीना भी हैं जहां पर हज़ारहा त़-लबा व त़ालिबात अलग अलग इल्मे दीन ह़ासिल करते हैं।

www.dawateislami.net

मेरी आने वाली नस्लें तेरे इ़श्क़ ही में मचलें
उन्हें नेक तू बनाना म-दनी मदीने वाले

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾30﴿ मुसल्मान के दिल में ख़ुशी दाख़िल करने का सवाब

नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, क़ासिमे ने'मत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स किसी मोमिन के दिल में **ख़ुशी** दाख़िल करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस ख़ुशी से एक फ़िरिश्ता पैदा फ़रमाता है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत और ज़िक्र में मसरूफ़ रहता है। जब वोह बन्दा अपनी **क़ब्र** में चला जाता है तो वोह फ़िरिश्ता उस के पास आ कर पूछता है : "क्या तू मुझे नहीं पहचानता ?" वोह कहता है कि "तू कौन है ?"

तो वोह फ़िरिश्ता कहता है कि ''मैं वोह **ख़ुशी** हूं जिसे तूने फ़ुलां के दिल में दाख़िल किया था, आज मैं तेरी **वहूशत** में तुझे उन्स पहुंचाऊंगा और सुवालात के जवाबात में साबित क़दम रखूंगा और तुझे रोज़े क़ियामत के मनाज़िर दिखाऊंगा और तेरे लिये तेरे रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सिफ़ारिश करूंगा और तुझे **जन्नत** में तेरा ठिकाना दिखाऊंगा।''

(الترغیب والترھیب ، کتاب البر والصلة ،باب الترغیب فی قضاء حوائج المسلین ، الحدیث ۲۳ ، ج ۳ ، ص ۲۶۶)

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! किसी के दिल में ख़ुशी दाख़िल करना कितना आसान मगर इस का इन्आ़म कितना शानदार है, मगर येह फ़ज़ीलत उसी वक़्त ह़ासिल हो सकेगी जब वोह ख़ुशी ऐन शरीअ़त के मुत़ाबिक़ हो चुनान्चे अगर औ़रत ने शोहर को ख़ुश करने के लिये बे पर्दगी की या बेटे ने बाप को ख़ुश करने के लिये दाढ़ी मुंडा दी या एक मुठ्ठी से घटा दी तो वोह इस फ़ज़ीलत का हरगिज़ ह़क़दार नहीं होगा बल्कि मुब्तलाए अ़ज़ाबे नार होगा। हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ग़ज़ब से पनाह मांगते हैं और उस से रह़मत का सुवाल करते हैं।

किसी के दिल में ख़ुशी दाख़िल करने के चन्द काम

❁ किसी प्यासे को पानी पिला देना ❁ किसी भूके को खाना खिला देना ❁ कोई दुआ़ के लिये कहे तो फ़ौरन उस के लिये दुआ़ कर देना ❁ ज़रूरत मन्द की मदद करना ❁ ह़ाजत मन्द को क़र्ज़ देना ❁ तंगदस्त मक़रूज़ को क़र्ज़ अदा करने में मोहलत देना ❁ ग़रीब मरीज़ की इ़यादत को जाना ❁ मुस्करा कर बात करना ❁ कोई ग़-लत़ी कर बैठे तो

उस से दर गुज़र करना ❁ पसन्दीदा चीज़ खिलाना ❁ अहम मवाक़ेअ़ पर तोह़फ़ा देना ❁ वालिदैन की ख़िदमत करना ❁ मज़्लूम की मदद करना ❁ दौराने सफ़र बैठने के लिये जगह दे देना।

रहें भलाई की राहों में गामज़न हर दम

करें न रुख़ मेरे पाउं गुनाह का या रब

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صلَّى اللهُ تعالٰى على محمّد

अ़ज़ाबे क़ब्र से मह़फ़ूज़ रहने वाले ख़ुश नसीब

(1) शहीद अ़ज़ाबे क़ब्र से मह़फ़ूज़ रहता है

ह़ज़रते सय्यिदुना मिक्दाम बिन मा'दी करि-ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि "शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे ह़ुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "बेशक **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ शहीद को छ इन्आ़म अ़ता फ़रमाता है : (1) उस के ख़ून का पहला क़त़रा गिरते ही उस की मग़्फ़िरत फ़रमा देता है और जन्नत में उसे उस का ठिकाना दिखा देता है (2) उसे **अ़ज़ाबे क़ब्र** से मह़फ़ूज़ फ़रमाता है (3) क़ियामत के दिन उसे **बड़ी घबराहट** से अम्न अ़ता फ़रमाएगा (4) उस के सर पर **वक़ार** का ताज रखेगा जिस का याक़ूत दुन्या और इस की हर चीज़ से बेहतर होगा (5) उस का हूरों में से 72 हूरों के साथ निकाह़ कराएगा (6) उस की सत्तर रिश्तेदारों के ह़क़ में **शफ़ाअ़त** क़बूल फ़रमाएगा।"

(ابن ماجه، كتاب الجهاد، باب فضل الشهادة فی سبيل الله، الحديث٢٧٩٩ ،ج٣ ،ص ٣٦٠)

www.dawateislami.net

(2) पेट के मरज़ में मरने वाला

सय्यिदुस्सालिहीन, सय्यिदुल मुर-सलीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जिसे उस के पेट ने मारा (या'नी जिसे पेट की तक्लीफ़ की वजह से मौत आई) तो उसे अ़ज़ाबे क़ब्र न होगा।

(جامع الترمذی، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی الشهداء من هم، الحدیث ١٠٦٦، ج٢، ص ٣٣٤)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : पेट की बीमारी से मरने वाला अ़ज़ाबे क़ब्र से मह़फ़ूज़ है क्यूं कि उसे दुन्या में इस मरज़ की वजह से बहुत तक्लीफ़ पहुंच चुकी है, येह तक्लीफ़े **क़ब्र** का दफ़्इ़य्या बन गई।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2, स. 425, 426)

www.dawateislami.net

(3) जुमुआ़ के दिन फ़ौत होने वाला

मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो मुसल्मान जुमुआ़ के दिन या जुमुआ़ की रात फ़ौत हो जाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को अ़ज़ाबे क़ब्र से मह़फ़ूज़ रखता है।"

(جامع الترمذی، کتاب الجنائز، باب فیمن مات یوم الجمعة، الحدیث ١٠٧٦، ج٢، ص ٣٣٩)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : या'नी जुमुआ़ की शब या जुमुआ़ के दिन मरने वाले मोमिन से न ह़िसाबे क़ब्र हो न अ़ज़ाबे क़ब्र क्यूं कि इस दिन की मौत शहादत की मौत है और शहीद ह़िसाब व अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़ है

जैसा कि दीगर रिवायात में है हम पहले बता चुके हैं कि आठ शख़्सों से ह़िसाबे क़ब्र नहीं होता जिन में से एक येह भी है।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2, स. 328, 329)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صلَّى اللّٰهُ تعالٰى على محمَّد

(4) क़ब्र में वह़्शत न होगी

शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने दिन में सो मरतबा "لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ الْمُبِيْنُ" पढ़ा तो वोह **फ़क़्र** से मह़फ़ूज़ रहेगा, उसे **क़ब्र** में वह़्शत न होगी और जन्नत के दरवाज़े उस के लिये खुल जाएंगे।

(كنز العمال، الحديث ٣٨٩٣، ج٢، ص١٠٣)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صلَّى اللّٰهُ تعالٰى على محمَّد

क़ब्र में ख़ुश ख़बरी पाने वालों की ह़िकायात

www.dawateislami.net

(1) कलिमए शहादत की तस्दीक़ करने वाले की बख़्शिश हो गई

एक बसरी बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का भतीजा ग़लत़ सोह़बत में पड़ गया और त़वाइफ़ों के पास आने जाने लगा। वोह जब भी अपने भतीजे को नसीह़त करते वोह सुनी अनसुनी कर देता। बा'दे इन्तिक़ाल जब उस लड़के को **क़ब्र** में उतार दिया गया तो लोगों को कुछ शुबा हुवा, चुनान्चे एक ईंट हटा कर अन्दर देखा गया तो मा'लूम हुवा कि उस की **क़ब्र** बसरा के घुड़दौड़ के मैदान से भी वसीअ़ है और वोह दरमियान में खड़ा है। ईंट को उसी जगह वापस लगा दिया गया और घर आ कर जब उस की बीवी से उस के आ'माल के बारे में दरयाफ़्त किया गया तो उस ने कहा कि येह जब मुअज़्ज़िन को येह कहते सुनता : " اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ (या'नी मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के सिवा कोई

मा'बूद नहीं, और मैं गवाही देता हूं कि मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के रसूल हैं)'' तो कहा करता : ''وَاَنَا اَشْهَدُ بِمَا شَهِدْتَ بِهٖ'' या'नी जिस की तू गवाही देता है उसी की गवाही मैं भी देता हूं।'' और दूसरों से भी कहता था कि येही कहो।

(الموسوعة لابن ابی الدنیا ،الحدیث ۳۱۹، ج ۵، ص ۵۰۰)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिस त़रह़ हर बुराई से बचना ज़रूरी है इसी त़रह़ छोटी से छोटी नेकी छोड़नी नहीं चाहिये क्या मा'लूम कि वोह नेकी जो ब ज़ाहिर बहुत आसान नज़र आती है हमारी बख़्शिश का वसीला बन जाए। इस ह़िकायत से किसी को येह ग़लत़ फ़हमी न हो जाए कि مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ख़ूब जी भर के गुनाह करते रहेंगे, थोड़ी बहुत नेकियां कर लिया करेंगे कोई न कोई नेकी बख़्शिश का सबब बन ही जाएगी, ऐसा सोचना नादानी है क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला बे नियाज़ है वोह चाहे तो नेकियों के पहाड़ खड़े करने वाले को सिर्फ़ एक गुनाह की वजह से जहन्नम में भेज दे और अगर चाहे तो गुनाहों के दफ़्तर भरे होने के बा वुजूद किसी को मह़ज़ एक नेकी की वजह से बख़्श दे, बहर ह़ाल येह सब उस की मरज़ी पर मौक़ूफ़ है, हमें ख़ूब ख़ूब नेकियां करने और गुनाहों से बचने की सअ़्य करनी चाहिये। नीज़ इस ह़िकायत से ज़िम्नन अज़ान का जवाब देने का फ़ाएदा भी मा'लूम हुवा, जवाबे अज़ान की अह़ादीसे मुबा-रका में बड़ी फ़ज़ीलत आई है चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना के मत़्बूआ़ रिसाले ''फ़ैज़ाने अज़ान'' में है :

अज़ान के जवाब की फ़ज़ीलत

मदीने के ताजदार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक बार फ़रमाया : ऐ औ़रतो ! जब तुम बिलाल को अज़ान व इक़ामत कहते सुनो तो जिस त़रह़ वोह कहता है तुम भी कहो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे लिये हर **कलिमे** के बदले **एक लाख** नेकियां लिखेगा और **एक हज़ार** द-रजात बुलन्द फ़रमाएगा और **एक हज़ार** गुनाह मिटाएगा । ख़वातीन ने येह सुन कर अ़र्ज़ की, येह तो औ़रतों के लिये है मर्दों के लिये क्या है ? फ़रमाया मर्दों के लिये दुगना । (تاریخ دِمشق لابنِ عَساکِر ج۵۵ص۷۵)

3 करोड़ 24 लाख नेकियां कमाइये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत पर क़ुरबान ! उस ने हमारे लिये नेकियां कमाना, अपने द-रजात बढ़वाना और गुनाह बख़्शवाना किस क़दर आसान फ़रमा दिया है मगर अफ़्सोस ! इतनी आसानियों के बा वुजूद भी हम ग़फ़्लत का शिकार रहते हैं । पेश कर्दा ह़दीसे मुबारक में **जवाबे अज़ान** की जो फ़ज़ीलत बयान हुई है उस की तफ़्सील मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये :

"اَللّٰہُ اَکْبَر اَللّٰہُ اَکْبَر" येह दो कलिमात हैं इस त़रह़ पूरी अज़ान में **15 कलिमात** हैं । अगर कोई इस्लामी बहन एक अज़ान का जवाब दे या'नी **मुअज़्ज़िन** जो कहता जाए इस्लामी बहन भी दोहराती जाए तो उस को **15 लाख** नेकियां मिलेंगी । **15 हज़ार** द-रजात बुलन्द होंगे और **15 हज़ार** गुनाह मुआ़फ़ होंगे । और इस्लामी भाइयों के लिये येह सब

www.dawateislami.net

दुगना है । **फ़ज्र** की अज़ान में दो मरतबा اَلصَّلٰوةُ خَيْرٌ مِّنَ النَّوْم है तो फ़ज्र की अज़ान में **17 कलिमात** हो गए और यूं फ़ज्र की अज़ान के जवाब में **17 लाख** नेकियां, 17 हज़ार द-रजात की बुलन्दी और 17 हज़ार गुनाहों की मुआफ़ी मिली और इस्लामी भाइयों के लिये दुगना । इक़ामत में दो मरतबा قَدْ قَامَتِ الصَّلٰوة भी है यूं इक़ामत में भी 17 कलिमात हुए तो इक़ामत के जवाब का सवाब भी फ़ज्र की अज़ान के जवाब जितना हुवा । **अल ह़ासिल अगर कोई इस्लामी बहन एहतिमाम के साथ रोज़ाना पांचों नमाज़ों की अज़ानों और पांचों इक़ामतों का जवाब देने में काम्याब हो जाए तो उसे रोज़ाना एक करोड़ बासठ लाख नेकियां मिलेंगी, एक लाख बासठ हज़ार द-रजात बुलन्द होंगे और एक लाख बासठ हज़ार गुनाह मुआफ़ होंगे और इस्लामी भाई को दुगना या'नी 3 करोड़ 24 लाख नेकियां मिलेंगी, 3 लाख 24 हज़ार द-रजात बुलन्द होंगे और 3 लाख 24 हज़ार गुनाह मुआफ़ होंगे ।**

www.dawateislami.net

अज़ान व इक़ामत के जवाब का त़रीक़ा

मुअज़्ज़िन साहिब को चाहिये कि अज़ान के कलिमात ठहर ठहर कर कहें । اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَر दोनों मिल कर (बिग़ैर सक्ता किये एक साथ पढ़ने के ए'तिबार से) एक **कलिमा** हैं दोनों के बा'द सक्ता करे (या'नी चुप हो जाए) और सक्ता की मिक़्दार येह है कि जवाब देने वाला जवाब दे ले, सक्ता का तर्क मक्रूह है और ऐसी अज़ान का इआदा **मुस्तह़ब** है । (دُرِّمُختار وردُّالمُحتار ج٢ص٦٦) जवाब देने वाले को चाहिये कि जब **मुअज़्ज़िन** साहिब اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَر कह कर सक्ता करें या'नी

ख़ामोश हों उस वक़्त اَللّٰہُ اَکْبَر اَللّٰہُ اَکْبَر कहे। इसी तरह दीगर कलिमात का जवाब दे। जब **मुअज़्ज़िन** पहली बार اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰه कहे येह कहे : صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْكَ يَارَسُوْلَ اللّٰه तरजमा : आप पर दुरूद हो **या रसूलल्लाह** (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) (رَدُّالْمُحتار ج۲ ص۸٤)

जब दोबारा कहे, येह कहे :

قُرَّةُ عَيْنِيْ بِكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه **या रसूलल्लाह !** आप से मेरी आंखों की ठन्डक है

और हर बार अंगूठों के नाख़ुन आंखों से लगा ले, आख़िर में कहे :

اَللّٰهُمَّ مَتِّعْنِيْ بِالسَّمْعِ وَالْبَصَرِ (اَیضاً) ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरी सुनने और देखने की क़ुव्वत से मुझे नफ़्अ़ अ़ता फ़रमा।

जो ऐसा करे सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم उसे अपने पीछे पीछे जन्नत में ले जाएंगे। (اَیضاً)

حَیَّ عَلَی الْفَلَاح और **حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃ** के जवाब में (चारों बार) **لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰه** कहे और बेहतर येह है कि दोनों कहे (या'नी **मुअज़्ज़िन** ने जो कहा वोह भी कहे और **लाहौल** भी) बल्कि मज़ीद येह भी मिला ले :

مَاشَاءَ اللّٰهُ كَانَ وَمَالَمْ يَشَأْ لَمْ يَكُنْ तरजमा : जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने चाहा हुवा, जो नहीं चाहा न हुवा

(دُرِّمُختار ورَدُّالْمُحتار ج۲ ص۸۲، عالمگیری ج۱ ص۵۷)

اَلصَّلٰوةُ خَيْرٌ مِّنَ النَّوْم के जवाब में कहे :

صَدَقْتَ وَبَرَرْتَ وَبِالْحَقِّ نَطَقْتَ तरजमा : तू सच्चा और नेकूकार है और तूने हक़ कहा है।

(دُرِّمُختار ورَدُّالْمُحتار ج۲ ص۸۳)

इक़ामत का जवाब **मुस्तह़ब** है। इस का जवाब भी इसी त़रह़ है फ़र्क़ इतना है कि قَدْ قَامَتِ الصَّلٰوۃ के जवाब में कहे :

اَقَامَهَا اللّٰهُ وَاَدَامَهَا مَادَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ

तरजमा : **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) इस को क़ाइम रखे जब तक आस्मान और ज़मीन हैं।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 473, عالمگیری ج۱ ص ۵۷) (नमाज़ के अह़काम, स. 4 ता 9)

(2) सूरए कह्फ़ की तिलावत की ब-र-कत

सैफ़ुद्दीन बलबान का बयान है कि मैं ने क़ब्रिस्तान में एक शख़्स को देखा कि वोह एक क़ब्र के पास रोते हुए तिलावत कर रहा है और दुआ़एं मांग रहा है, मेरे पूछने पर उस ने बताया : येह मेरे दोस्त की क़ब्र है, इस ने तिलावत करते हुए मेरी निगाहों के सामने दम तोड़ा, तदफ़ीन के बा'द मैं ने इसे ख़्वाब में देखा तो ह़ाल दरयाफ़्त किया, इस ने बताया : जब तुम लोग मुझे क़ब्र में रख कर चले गए तो एक ग़ज़ब नाक कुत्ता मेरी त़रफ़ बढ़ा, क़रीब था कि वोह मुझ पर ह़म्ला कर देता मगर एक इन्तिहाई ख़ूब सूरत व पाकीज़ा बुज़ुर्ग वहां तशरीफ़ ले आए और कुत्ते को वहां से भगा दिया और मेरे पास बैठ गए, उन की सोह़बत से मुझे बहुत सुकून मिला, मैं ने उन से पूछा : आप कौन हैं ? फ़रमाया : तुम जुमुआ़ के दिन **सूरए कह्फ़** पढ़ा करते थे मैं उसी का सवाब हूं।

(الدرالکامنة فی اعیان المائة لابن حجر عسقلانی ج۵ ص۳۵۲)

(3) क़ब्र में लाएब्रेरी

ह़ाफ़िज़ अबुल उ़ला हमदानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى को उन की वफ़ात के बा'द किसी ने एक ऐसे शहरे इ़ल्म में देखा कि जिस के दरो दीवार सब किताबों के बने हुए थे। उन से इस का सबब पूछा गया तो बताया कि मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ की थी कि जिस त़रह़ मैं दुन्या में इ़ल्म में मसरूफ़ हूं इसी त़रह़ आख़िरत में भी मसरूफ़ रहूं। लिहाज़ा यहां पर भी मुझे येही मसरूफ़िय्यत नसीब हुई है। (شرح الصدور ص ١٩٠)

(4) शैख़ैन के दीवाने की नजात

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले "**मुर्दे के सदमे**" सफ़ह़ा 38 पर लिखते हैं : "**एक** शख़्स को इन्तिक़ाल के बा'द ख़्वाब में देख कर पूछा गया : مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِكَ ؟ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़-मला फ़रमाया ? जवाब दिया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा दी। पूछा : मुन्कर नकीर के साथ कैसी गुज़री ? जवाब दिया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के करम से मैं ने उन से अ़र्ज़ की, ह़ज़राते **अबू बक्र सिद्दीक़ व उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म** رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا के वसीले से मुझे छोड़ दीजिये। तो उन में से एक ने दूसरे से कहा : इस ने बहुत ही बुज़ुर्ग हस्तियों का वसीला पेश किया है लिहाज़ा इस को छोड़ दो। चुनान्चे वोह मुझे छोड़ कर तशरीफ़ ले गए।"

(مُلَخَّصاً مِنْ شَرْحِ الصُّدُور،باب فتنة القبر الخ، ص ١٤١)

(5) औलिया के नाम लेवा की नजात

एक नेक शख़्स जो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू **यज़ीद** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيْد के दीवाने और आप के ग़ाशिया बरदार या'नी फ़रमां बरदार ख़ादिम थे,

उन की वफ़ात हो गई, तदफ़ीन के बा'द **क़ब्र** शरीफ़ के पास मौजूद बा'ज़ अफ़राद ने सुना वोह मुन्कर नकीर से कह रहे थे : "मुझ से क्यूं सुवालात करते हो मैं तो अबू **यज़ीद** के ग़ाशिया बरदारों में से हूं।" चुनान्चे मुन्कर नकीर उन्हें छोड़ कर तशरीफ़ ले गए। (مُلَخَّصاً مِنْ شَرْحِ الصُّدُور، باب فتنة القبر الخ، ص ١٤٢)

दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए **म-दनी इन्आमात** का रिसाला पुर कर के हर माह अपने यहां के ज़ैली निगरान को जम्अ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से ईमान की हिफ़ाज़त और सुन्नतों पर अमल का ज़ेहन बनेगा नीज़ अज़ाबे क़ब्र से नजात का सामान होगा।" (मुर्दे के सदमे, स. 93)

(6) बेशक मुझे दो जन्नतें अ़ता की गईं

अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ-मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ज़मानए मुबारक में एक नौ जवान बहुत मुत्तक़ी व परहेज़ गार व इबादत गुज़ार था। हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ भी उस की इबादत पर तअ़ज्जुब किया करते थे। वोह नौ जवान नमाज़े इ़शा मस्जिद में अदा करने के बा'द अपने बूढ़े बाप की ख़िदमत करने के लिये जाया करता था। रास्ते में एक ख़ूबरू औ़रत उसे अपनी त़रफ़ बुलाती और छेड़ती थी, लेकिन येह नौ जवान उस पर तवज्जोह दिये बिग़ैर निगाहें झुकाए जाया करता था। आख़िर कार एक दिन वोह नौ जवान शैत़ान के वरग़लाने और उस औ़रत की दा'वत पर बुराई के इरादे से उस की जानिब बढ़ा, लेकिन जब दरवाज़े पर पहुंचा तो उसे **अल्लाह** तआ़ला का येह

फ़रमाने आ़लीशान याद आ गया :

اِنَّ الَّذِیْنَ اتَّقَوْا اِذَا مَسَّهُمْ طٰٓىٕفٌ مِّنَ الشَّیْطٰنِ تَذَكَّرُوْا فَاِذَا هُمْ مُّبْصِرُوْنَ

(پ ۹، الاعراف ۲۰۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह जो डर वाले हैं जब उन्हें किसी शैता़नी ख़याल की ठेस लगती है होशियार हो जाते हैं उसी वक़्त उन की आंखें खुल जाती हैं।

इस आयते पाक के याद आते ही उस के दिल पर **अल्लाह** तआ़ला का ख़ौफ़ इस क़दर ग़ालिब हुवा कि वोह बेहोश हो कर ज़मीन पर गिर गया। जब येह बहुत देर तक घर न पहुंचा तो उस का बूढ़ा बाप उसे तलाश करता हुवा वहां पहुंचा और लोगों की मदद से उसे उठवा कर घर ले आया। होश आने पर बाप ने तमाम वाक़िआ़ दरयाफ़्त किया, नौ जवान ने पूरा वाक़िआ़ बयान कर के जब इस आयते पाक का ज़िक्र किया तो एक मरतबा फिर उस पर **अल्लाह** तआ़ला का शदीद ख़ौफ़ ग़ालिब हुवा, उस ने एक ज़ोरदार चीख़ मारी और उस का दम निकल गया। रातों रात ही उस के ग़ुस्ल व कफ़न व दफ़्न का इन्तिज़ाम कर दिया गया। सुब्ह़ जब येह वाक़िआ़ ह़ज़रते सय्यिदुना उ़-मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की ख़िदमत में पेश किया गया तो आप उस के बाप के पास ता'ज़िय्यत के लिये तशरीफ़ ले गए। आप ने उस से फ़रमाया कि "हमें रात को ही इत्तिलाअ़ क्यूं नहीं दी, हम भी जनाज़े में शरीक हो जाते ?" उस ने अ़र्ज़ की, "अमीरुल मुअमिनीन ! आप के आराम का ख़याल करते हुए मुनासिब मा'लूम न हुवा।" आप ने फ़रमाया कि "मुझे उस की **क़ब्र** पर ले चलो।" वहां पहुंच कर आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने येह आयते मुबा-रका पढ़ी :

www.dawateislami.net

وَلِمَنۡ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ﴿۴۶﴾ (پ ۲۷، الرحمن: ٤٦)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डरे उस के लिये दो जन्नतें हैं।

तो **क़ब्र** में से उस नौ जवान ने बुलन्द आवाज़ के साथ पुकार कर कहा : "या अमीरल मुअमिनीन ! बेशक मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने मुझे दो जन्नतें अ़ता फ़रमाई हैं।" (شرح الصدور ص۲۱۳)

(7) द-रजात में फ़र्क़

एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि मैं ने ख़ुदा तआ़ला से दुआ़ की, कि वोह मुझे अहले कुबूर के मक़ामात दिखा दे। एक रोज़ क्या देखता हूं कि क़ब्रें फट गईं। अब उन में से कुछ मुर्दे तो "रेशम" पर सो रहे हैं और कुछ "दीबाज" पर, कुछ "फूलों की सेज" पर और कुछ "तख़्तों" पर, कुछ हंस रहे हैं तो कुछ रो रहे हैं। येह देख कर मैं ने अ़र्ज़ की : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अगर तू चाहता तो इन सब को एक ही मक़ाम अ़ता फ़रमा देता ! तो **क़ब्र** वालों ही में से किसी ने पुकारा कि ऐ फ़ुलां ! येह क़ब्रें आ'माल की मनाज़िल हैं, जो "सुन्दुस नशीन" हैं वोह **ख़ुश ख़ुल्क़** थे, जो "ह़रीर व दीबाज नशीन" हैं वोह **शु-हदा** हैं, जो "फूलों की सेज" पर सोने वाले हैं वोह **रोज़ादार** हैं और "तख़्त वाले" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये आपस में **मह़ब्बत** करने वाले हैं, जब कि **रोने वाले** गुनहगार और **हंसने वाले** तौबा शिआ़र हैं। (شرح الصدور، ص۱۸۷)

(8) मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी की जब क़ब्र खुली

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी किताब **''ग़ीबत की तबाह कारियां''** सफ़ह़ा 466 पर लिखते हैं : तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, दा'वते इस्लामी की ''मर्कज़ी मजलिसे शूरा'' के रुक्न मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती **मुह़म्मद फ़ारूक़ अल अ़त्तारिय्युल म-दनी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى के बारे में मेरा हुस्ने ज़न है कि वोह दा'वते इस्लामी के मुख़्लिस मुबल्लिग़ और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरने वाले बुज़ुर्ग थे और गोया इस ह़दीसे पाक के मिस्दाक़ थे : ''كُنْ فِى الدُّنْيَا كَاَنَّكَ غَرِيْبٌ या'नी दुन्या में इस त़रह़ रहो कि गोया तुम मुसाफ़िर हो।'' (صحيح البخارى ج٤ ص٢٢٣ حديث٦٤١٦) 18 **मुह़र्रमुल ह़राम** 1427 हि. ब मुत़ाबिक़ 17-2-2006 बरोज़ जुमुआ़ नमाज़े जुमुआ़ की अदाएगी के बा'द अपनी क़ियाम गाह (वाक़ेअ़ गुलशने इक़्बाल, बाबुल मदीना कराची) में अचानक ह़-र-कते क़ल्ब बन्द होने के सबब ब उ़म्र तक़रीबन 30 बरस जवानी के आ़लम में इन्तिक़ाल फ़रमा गए थे। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को **सह़राए मदीना**, बाबुल मदीना कराची में दफ़्न किया गया। विसाल शरीफ़ के तक़रीबन 3 साल 7 महीने 10 दिन बा'द या'नी 25 र-जबुल मुरज्जब सि. 1430 हि. ब मुत़ाबिक़ 18-7-2009 हफ़्ता और इतवार की दरमियानी रात बाबुल मदीना कराची में कई घन्टे तक मूसलाधार बरसात हुई जिस की वजह से मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी ह़ाफ़िज़ मुह़म्मद फ़ारूक़ अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى की **क़ब्र** दरमियान से खुल गई। जो इस्लामी भाई **सह़राए** मदीना में ह़िफ़ाज़ती उमूर पर **मु-तअ़य्यन** हैं उन्हों ने सुब्ह़ के वक़्त देखा कि **क़ब्र से सब्ज़ रंग की रोशनी निकल रही है।** आ़रिज़ी त़ौर पर **क़ब्र** दुरुस्त करने वाले इस्लामी भाइयों का ह़लफ़िया (या'नी क़सम

www.dawateislami.net

खा कर) कुछ यूं बयान है कि हम ने देखा कि **तदफ़ीन के तक़रीबन साढ़े तीन साल बा'द भी मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी** قُدِّسَ سِرُّہُ السّامی **की मुबारक लाश और कफ़न इस त़रह़ सलामत थे कि गोया अभी अभी इन्तिक़ाल हुवा हो,** तक्फ़ीन के वक़्त सर पर रखा जाने वाला सब्ज़ सब्ज़ इ़मामा शरीफ़ आप के सरे मुबारक पर अपने जल्वे लुटा रहा था, इ़मामे शरीफ़ की सीधी जानिब कान के नज़्दीक आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ज़ुल्फ़ों का कुछ ह़िस्सा अपनी बहारें दिखा रहा था, पेशानी नूरानी थी और चेहरा मुबारक भी क़िब्ला रुख़ था। मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी की **क़ब्र** मुबारक से ख़ुश्बू की ऐसी लपटें आ रही थीं कि हमारे मशामे जां मुअ़त्त़र हो गए। **क़ब्र** में बारिश का पानी उतर जाने की वजह से येह इम्कान था कि **क़ब्र** मज़ीद धंस जाए और सिलें मर्ह़ूम के वुजूदे मस्ऊ़द को सदमा पहुंचाएं लिहाज़ा इस वाक़िए़ के तक़रीबन दस रोज़ बा'द या'नी शबे बुध 6 **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** 1430 हि. (28-7-2009) ब शुमूल मुफ़्तियाने किराम व उ़-लमाए इ़ज़ाम हज़ारहा इस्लामी भाइयों का कसीर मज्मअ़ हुवा, ग़ुलाम ज़ादा अबू उसैद ह़ाजी उ़बैद रज़ा इब्ने अ़त्त़ार म-दनी سَلَّمَہُ اللّٰہ الغنی पहले से मौजूद शिगाफ़ के ज़रीएअ़ **क़ब्र** के अन्दर उतरे ताकि येह अन्दाज़ा लगाएं कि आया मुन्तक़िली के लिये जिस्मे मुबारक बाहर निकालने की ह़ाजत है या अन्दर रहते हुए भी **क़ब्र** शरीफ़ की ता'मीरे नौ मुम्किन है। उन्हों ने अन्दर का जाएज़ा लिया और अन्दर ही से दा'वते इस्लामी के दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत के मुफ़्ती साह़िब को सूरते ह़ाल बयान की उन्हों ने बदन मुबारक बाहर न निकालने का हुक्म फ़रमाया, ग़ुलाम ज़ादा ह़ाजी उ़बैद रज़ा को मूवी केमेरा दिया गया चुनान्चे पुरानी **क़ब्र** के अन्दरूनी माह़ोल और ऊपर से मिट्टी वग़ैरा गिरने के बा वुजूद اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन्हों ने **इमामा शरीफ़, पेशानी मुबारक और ज़ुल्फ़ों के बा'ज़ ह़िस्से की काम्याब मूवी बना ली** जो कि कुछ ही देर बा'द

''सह्राए मदीना'' में लगाई गई मुख़्तलिफ़ स्क्रीनों पर हज़ारों इस्लामी भाइयों को दिखा दी गई, उस वक़्त लोगों के जज़्बात दी-दनी थे, येह रूह परवर मन्ज़र देख कर बे शुमार इस्लामी भाई अश्कबार हो गए। इस के बा'द आने वाली रात या'नी बुध और जुमा'रात की दरमियानी शब 7 **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** 1430 हि. (29-7-2009) को दा'वते इस्लामी के **म-दनी चेनल** पर बराहे रास्त ''ख़ुसूसी म-दनी मुका-लमा'' नश्र किया गया जिस में दुन्या के मुख़्तलिफ़ मुमालिक के लाखों नाज़िरीन को केमेरे के अन्दर मह्फ़ूज़ कर्दा **क़ब्र** का अन्दरूनी मन्ज़र और मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी قُدِّسَ سِرُّہُ السّامی की तक़रीबन साढ़े तीन साल पुरानी सह़ीह़ सलामत लाश मुबारक के इ़मामा शरीफ़, पेशानी मुबारक और गेसू मुबारक के कुछ बालों की ज़ियारत करवाई गई। चूंकि येह ख़बर हर त़रफ़ जंगल की आग की त़रह़ फैल चुकी थी लिहाज़ा मुख़्तलिफ़ शहरों के जुदा जुदा अ़लाक़ों के इस्लामी भाइयों के बयानात का लुब्बे लुबाब है कि **ख़ुसूसी म-दनी मुका-लमे** के दौरान कई गलियां और बाज़ार इस त़रह़ सूने हो गए थे जिस त़रह़ मुसल्मानों के अ़लाक़ों में **र-मज़ानुल मुबारक** में इफ़्त़ार के वक़्त होते हैं और T.V. पर घर घर से ''ख़ुसूसी म-दनी मुका-लमे'' की आवाज़ सुनाई दे रही थी। होटलों, नाई की दुकानों वग़ैरा में जहां जहां T.V. सेट मौजूद थे वहां अ़वाम हुजूम दर हुजूम जम्अ़ हो कर **म-दनी चेनल** पर मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी قُدِّسَ سِرُّہُ السّامی की म-दनी बहारों के नज़्ज़ारे कर रहे थे। एक इत्तिलाअ़ के मुत़ाबिक़ म-दनी चेनल पर ''ख़ुसूसी म-दनी मुका-लमा'' सुन कर और मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी قُدِّسَ سِرُّہُ السّامی की तक़रीबन साढ़े तीन साल पुरानी मुबारक लाश की रूह परवर झल्कियां देख कर एक ग़ैर मुस्लिम मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना ने इस सिल्सिले में शबे बराअत 1430 हि. के मुबारक मौक़अ़ पर एक तारीख़ी V.C.D बनाम

''मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी की जब **क़ब्र** खुली'' जारी कर दी चन्द ही रोज़ में बहुत बड़ी ता'दाद में V.C.Ds फ़रोख़्त हो गईं।

जबीं मैली नहीं होती दहन मैला नहीं होता

ग़ुलामाने मुहम्मद का कफ़न मैला नहीं होता

अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

क़ब्र में मय्यित के साथ तबर्रुकात रखिये

जब किसी इस्लामी भाई या इस्लामी बहन का इन्तिक़ाल हो जाए तो तदफ़ीन के वक़्त कुछ न कुछ तबर्रुकात मय्यित के साथ रख दीजिये, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ येह अ़मल मय्यित के लिये सुकून व इत्मीनान और नकीरैन के सुवालात के जवाब देने में मददगार साबित होगा।

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की वसिय्यत

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने इन्तिक़ाल के वक़्त वसिय्यत फ़रमाई : ''एक दिन हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ाजत के लिये तशरीफ़ ले गए। मैं लोटा ले कर हमराहे रिकाब सआ़दत मआब हुवा। हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना पहना हुवा एक कुरता मुझे बत़ौरे इन्आ़म अ़त़ा फ़रमाया, वोह कुरता मैं ने आज के लिये संभाल रखा था। और एक रोज़ हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने नाख़ुन व मूए मुबारक तराशे, वोह मैं ने ले कर

इस दिन के लिये संभाल रखे थे, जब मैं मर जाऊं तो क़मीसे सरापा तक़्दीस को मेरे कफ़न में रखना और मूए मुबारक व नाख़ुनहाए मुक़द्दसा को मेरे मुंह और आंखों और पेशानी वग़ैरा मवाज़ेए सुजूद पर रख देना।"

(الاستعیاب فی معرفة الاصحاب،ترجمہ معاویہ بن سفیان،ج۳،ص ۳۷٤)

तबर्रुकात रखने का त़रीक़ा

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "**श-ज-रए त़य्यिबा** (और दीगर तबर्रुकात) **क़ब्र** में त़ाक़ बना कर रखें ख़्वाह सिरहाने कि नकीरैन पाइंती की त़रफ़ से आते हैं उन के पेशे नज़र हो, ख़्वाह जानिबे क़िब्ला कि मय्यित के पेश रू (या'नी सामने) रहे और उस के सुकून व इत़्मीनान व इआ़नते जवाब का बाइ़स हो।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 9, स. 134)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللهُ تعالىٰ على محمَّد

क़ब्र पर तल्क़ीन का त़रीक़ा

ह़दीस में है हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : जब तुम्हारे किसी मुसल्मान भाई का इन्तिक़ाल हो और उस की **क़ब्र** पर मिट्टी बराबर कर चुको तो तुम में से एक शख़्स उस की **क़ब्र** के सिरहाने खड़ा हो कर कहे يَا فُلَانَ ابْنَ فُلَانَةٍ कि वोह सुनेगा और जवाब न देगा। फिर कहे : يَا فُلَانَ ابْنَ فُلَانَةٍ वोह सीधा हो कर बैठ जाएगा, फिर कहे : يَا فُلَانَ ابْنَ فُلَانَةٍ वोह कहेगा : हमें इर्शाद कर, अल्लाह तआ़ला तुझ पर रह़्म फ़रमाए। मगर

तुम्हें उस के कहने की ख़बर नहीं होती। फिर कहे : اُذْکُرْ (اُذْکُرِی) مَاخَرَجْتَ(خَرَجْتِ) عَلَیْہِ مِنَ الدُّنْیَا شَھَادَۃَ اَنْ لَّآ اِلٰہَ اِلَّااللّٰہُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ، صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّمْ وَاَنَّکَ رَضِیْتَ(اَنَّکِ رَضِیْتِ) بِاللّٰہِ رَبًّا وَبِالْاِسْلَامِ دِیْنًا وَبِمُحَمَّدٍ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّمَ نَبِیًّاوَبِالْقُرْاٰنِ اِمَامًا'' नकीरैन एक दूसरे का हाथ पकड़ कर कहेंगे : चलो हम उस के पास क्या बैठें जिसे लोग उस की हुज्जत सिखा चुके। इस पर किसी ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! अगर उस की मां का नाम मा'लूम न हो, फ़रमाया : ''तो ह़व्वा की त़रफ़ निस्बत करे।''

(المعجم الکبیر للطبرانی ج۸،حدیث۷۹۷۹،ص۲۵۰)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

क़ब्र पर अज़ान दीजिये

मीट्टी बराबर करने के बा'द **क़ब्र** पर अज़ान दीजिये, मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : ''येह वक़्त इम्तिह़ाने क़ब्र का है, अज़ान में नकीरैन के सारे सुवालात के जवाबात की तल्क़ीन भी है और इस से मय्यित के दिल को तस्कीन भी होगी और शयात़ीन का दफ़्ऱय्या भी होगा और अगर **क़ब्र** में आग है तो इस की ब-र-कत से बुझा दी जाएगी, इसी लिये पैदाइश के वक़्त बच्चे के कान में, दिल की घबराहट, आग लगने, जिन्नात के ग़-लबे वग़ैरा पर अज़ान सुन्नत है।'' (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2, स. 444)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

कफ़न के लिये तीन अनमोल तोहफ़े

(1) जो हर नमाज़ (या'नी फ़र्ज़ सुन्नतें वग़ैरा पढ़ने) के बा'द अ़हद नामा पढ़े, फ़िरिश्ता उसे लिख कर मोहर लगा कर क़ियामत के लिये उठा रखे, जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस बन्दे को **क़ब्र** से उठाए, फ़िरिश्ता वोह नविश्ता (या'नी दस्तावेज़) साथ लाए और निदा की जाए : **अ़हद** वाले कहां हैं ? उन्हें वोह अ़हद नामा दिया जाए । इमाम ह़कीम तिरमिज़ी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इसे रिवायत कर के फ़रमाया : "इमाम त़ाऊस رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की वसिय्यत से येह अ़हद नामा उन के कफ़न में लिखा गया।" (الدر المنثور،ج ٥،ص ٥٤٢ دارُ الفكر بيروت) इमाम फ़क़ीह इब्ने अ़जील رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इसी दुआ़ए अ़हद नामा की निस्बत फ़रमाया, जब येह अ़हद नामा लिख कर मय्यित के साथ **क़ब्र** में रख दें तो **अल्लाह** तआ़ला उसे सुवाले नकीरैन व अ़ज़ाबे क़ब्र से अमान दे, अ़हद नामा येह है

"اَللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ، اَلرَّحْمٰنَ الرَّحِيْمَ اِنِّیْ اَعْهَدُ اِلَيْكَ فِیْ هٰذِهِ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا بِاَنَّكَ اَنْتَ اللّٰهُ الَّذِیْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ وَحْدَكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ وَ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَرَسُوْلُكَ فَلَا تُكِلْنِیْ اِلٰی نَفْسِیْ فَاِنَّكَ اِنْ تُكِلْنِیْ اِلٰی نَفْسِیْ تُقَرِّبْنِیْ مِنَ الشَّرِّ وَتُبَاعِدْنِیْ مِنَ الْخَيْرِ وَاِنِّیْ لَا اَثِقُ اِلَّا بِرَحْمَتِكَ فَاجْعَلْ رَحْمَتَكَ لِیْ عَهْدًا عِنْدَكَ تُؤَدِّيْهِ اِلٰی يَوْمِ الْقِيٰمَةِ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ" (الدر المنثور،ج٥،ص٥٤٢ دارُ الفكر بيروت)

(2) जो येह दुआ़ मय्यित के कफ़न में लिखे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत तक उस से अ़ज़ाब उठा ले । वोह दुआ़ येह है :

www.dawateislami.net

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْأَلُکَ یَاعَالِمَ السِّرِّ یَا عَظِیْمَ الْخَطَرِ یَاخَالِقَ الْبَشَرِ یَامُوْقِعَ الظَّفَرِ یَامَعْرُوْفَ الْاَثَرِ یَا ذَاالطَّوْلِ وَالْمَنِّ یَا کَاشِفَ الضُّرِّ وَالْمِحْنِ یَااِلٰہَ الْاَوَّلِیْنَ وَالْاٰخِرِیْنَ فَرِّجْ عَنِّیْ ھُمُوْمِیْ وَاکْشِفْ عَنِّیْ غُمُوْمِیْ وَصَلِّ اللّٰھُمَّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَسَلِّمْ“

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, ब ह़वाला फ़तावा कुब्रा, जि. 9, स. 110, मर्कजुल औलिया लाहोर)

(3) जो येह दुआ़ किसी परचे पर लिख कर सीने पर कफ़न के नीचे रख दे उसे अ़ज़ाबे क़ब्र न हो न मुन्कर नकीर नज़र आएं, और वोह दुआ़ येह है ”لَااِلٰہَ اِلَّااللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ لَااِلٰہَ اِلَّااللّٰہُ وَحْدَہٗ لَاشَرِیْکَ لَہٗ لَااِلٰہَ اِلَّااللّٰہُ لَہُ الْمُلْکُ وَلَہُ الْحَمْدُ لَااِلٰہَ اِلَّااللّٰہُ وَلَاحَوْلَ وَلَاقُوَّۃَ اِلَّابِاللّٰہِ الْعَلِیِّ الْعَظِیْمِ“ (फ़तावा र-ज़विय्या जदीद, ब ह़वाला फ़तावा कुब्रा, जि. 9, स. 108, मर्कजुल औलिया लाहोर)

www.dawateislami.net

म-दनी फूल : बेहतर येह है कि अ़ह्द नामा (बल्कि येह परचा और श-जरा वग़ैरा) मय्यित के मुंह के सामने क़िब्ला की जानिब (क़ब्र की अन्दरूनी दीवार में) त़ाक़ खोद कर उस में रखें।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 4, स.164 मक-त-बए र-ज़विय्या बाबुल मदीना कराची)

म-दनी मश्वरा : दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना और इस की तमाम शाख़ों से **“कफ़न के तीन अनमोल तोह़फ़े”** के परचे हदिय्यतन त़लब कीजिये, कुछ परचे अपने पास रख लीजिये और मुसल्मानों की फ़ौतगी के मवाक़ेअ़ पर पेश कर के सवाब कमाइये नीज़ कफ़न फ़रोशों और तज्हीज़ व तक्फ़ीन करने वाले समाजी इदारों को भी पेश कीजिये कि वोह हर मुसल्मान के लिये कफ़न के साथ एक परचा **फ़ी सबीलिल्लाह** दे दिया करें।

ماخذ ومراجع

(۱)	قران مجید	کلامِ باری تعالیٰ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
(۲)	کَنْزُالْاِیْمَانِ فِیْ تَرجَمَۃِالْقُرْان	اعلیٰحضرت امام احمد رضا خان متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
(۳)	اَلْجَامِعُ لِاَحْکَامِ الْقُرآن	ابوعبداللہ محمد بن احمد الانصاری قرطبی متوفّٰی ۶۷۱ھ	دارالفکر بیروت
(۴)	روح البیان	امام إسماعیل حقّی الحنفی متوفّٰی ۱۱۳۷ھ	کوئٹہ
(۵)	خزائن العرفان	سید نعیم الدین مرادآبادی متوفّٰی ۱۳۲۷ھ	ضیاء القرآن کراچی
(۶)	صَحِیْحُ الْبُخَارِی	امام محمد بن اسماعیل بخاری متوفّٰی ۲۵۶ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
(۷)	صحیح مسلم	امام مسلم بن حجاج بن مسلم القشیری متوفّٰی ۲۶۱ھ	دارابن حزم بیروت
(۸)	جامع الترمذی	امام ابوعیسیٰ محمد بن عیسیٰ الترمذی متوفّٰی ۲۸۹ھ	دارالفکر بیروت
(۹)	سُنَنُ اَبِیْ دَاوٗد	امام ابوداؤد سلیمان بن اشعث متوفّٰی ۲۷۵ھ	داراحیاء التراث العربی
(۱۰)	اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیر	امام سلیمان بن احمد طبرانی متوفّٰی ۳۶۰ھ	داراحیاء التراث العربی
(۱۱)	اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط	امام سلیمان بن احمد طبرانی متوفّٰی ۳۶۰ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
(۱۲)	شُعَبُ الْاِیْمَان	امام احمد بن حسین بیہقی متوفّٰی ۴۵۸ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
(۱۳)	الجامع الصغیر	امام عبدالرحمٰن جلال الدین السیوطی متوفّٰی ۹۱۱ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
(۱۴)	کَنْزُ الْعُمَّال	علامہ علاء الدین علی المتقی الھندی متوفّٰی ۹۷۵ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
(۱۵)	اَلْمُسْنَدُ للامام احمد	امام احمد بن حنبل متوفّٰی ۲۴۱ھ	دارالفکر بیروت
(۱۶)	اَلْمُسْنَدُ لِاَبِیْ یَعْلٰی الْمُوْصِلِی	شیخ الاسلام ابویعلیٰ احمد الموصلی متوفّٰی ۳۰۷ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت
(۱۷)	المستدرك عَلَى الصَّحِيحَيْن	امام ابوعبداللہ محمد بن عبداللہ نیشاپوری متوفّٰی ۴۰۵ھ	دارالمعرفہ بیروت
(۱۸)	مُصَنَّف ابن ابی شَیبۃ	ابوبکر عبداللہ بن محمد بن اَبی شیبۃ الکوفی متوفّٰی ۲۳۵ھ	دارالفکر بیروت
(۱۹)	مَجْمَعُ الزَّوَائِد	حافظ نورالدین علی بن ابوبکر ھیثمی متوفّٰی ۸۰۷ھ	دارالفکر بیروت
(۲۰)	الزُّھد	امام احمد بن حنبل متوفّٰی ۲۴۱ھ	دارالغد الجدید مصر
(۲۱)	حِلْیَۃُ الْاَوْلِیَاءِ	امام ابونعیم احمد بن عبداللہ اصفہانی متوفّٰی ۴۳۰ھ	المکتبۃ العصریہ بیروت
(۲۲)	اَلزَّوَاجِر عن اقتراف الکبائر	امام الشیخ ابن حجر مکی متوفّیٰ ۹۷۴ھ	دارالحدیث قاھرہ
(۲۳)	شرح صحیح البخاری لابن بطّال	ابوالحسن علی بن خلف بن بطال القرطبی متوفّٰی ۸۵۵ھ	مکتبۃ الرشد عرب شریف
(۲۴)	فیض القدیر	علامہ عبدالرؤف المناوی متوفّیٰ ۱۰۳۱ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
(۲۵)	مِرقَاۃ المفاتیح	علامہ ملا علی قاری متوفّٰی ۱۰۱۴ھ	دارالفکر بیروت
(۲۶)	مِرْاٰۃُ الْمَنَاجِیْح	مفتی احمد یار خان نعیمی متوفّٰی ۱۳۹۱ھ	ضیاء القرآن مرکز الاولیاء لاہور
(۲۷)	تاریخ بغداد	الحافظ احمد بن علی الخطیب متوفّٰی ۴۶۳ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت

www.dawateislami.net

(۲۸)	تاریخ دمشق	امام أبی القاسم علی ابن عساکر متوفّٰی ۵۷۱ھ	دارالفکر بیروت
(۲۹)	تاریخ الخُلَفَا	امام عبدالرحمٰن جلال الدین السیوطی متوفّٰی ۹۱۱ھ	باب المدینہ کراچی
(۳۰)	احیاء العلوم	امام محمد غزالی متوفّٰی ۵۰۵ھ	دارصادر بیروت
(۳۱)	اَلْحَدِیْقَۃُ النَّدِیۃ	علامہ عبدالغنی نابلسی متوفّٰی ۱۱۴۳ھ	پشاور
(۳۲)	تَذْکِرَۃُ الْاَوْلِیَاء	شیخ فریدالدین عطار متوفّٰی ۶۰۶/ ۶۱۶ھ	انتشارات گنجینہ ایران
(۳۳)	مثنوی مولانا روم	مولانا جلال الدین رومی متوفّٰی ۶۷۲ھ	خدیجہ پبلی کیشنز مرکز الاولیاء لاہور
(۳۴)	حیاتِ اعلیٰ حضرت	مولانا ظفرالدین قادری متوفّٰی ۱۳۸۲ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
(۳۵)	حیاتِ محدّث اعظم	حافظ محمد عطاء الرحمٰن قادری	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور
(۳۶)	جامع العلوم والحکم	ڈاکٹر محمد بکر اسماعیل متوفّٰی ۷۹۵ھ	الفیصلیۃ مکہ مکرمہ
(۳۷)	روحانی حکایات	علاّمہ عبدالمصطفی اعظمی متوفّٰی ۱۴۰۶ھ	مکتبہ غوثیہ باب المدینہ کراچی
(۳۸)	منہاج العابدین	امام محمد غزالی متوفّٰی ۵۰۵ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
(۳۹)	الرسالۃ القشیریۃ	امام ابوالقاسم عبدالکریم القشیری متوفی ۴۶۵ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
(۴۰)	الابریز	علاّمہ عبدالعزیز الدباغ متوفّٰی ۱۱۳۲ھ	.....
(۴۱)	اَلْقَوْلُ الْبَدِیع	علامہ امام حافظ محمد بن عبدالرحمٰن السخاوی متوفّٰی ۹۰۲ھ	مؤسسۃ الریان بیروت
(۴۲)	رُدُّالْمُحتَار	علامہ سید محمد امین بن علی متوفّٰی ۱۲۵۲ھ	دارالمعرفہ بیروت
(۴۳)	فَتَاوٰی ھِنْدِیہ	علامہ ملا نظام الدین متوفّٰی ۱۱۶۱ھ	کوئٹہ
(۴۴)	فَتَاوٰی رَضَوِیہ	اعلیٰحضرت امام احمد رضا متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور
(۴۵)	بَہارِشَرِیعَت	صدرالشریعہ مفتی امجد علی اعظمی متوفّٰی ۱۳۷۶ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
(۴۶)	ملفوظات اعلیٰحضرت	اعلیٰحضرت امام احمد رضا	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
(۴۷)	کفریہ کلمات کے بارے میں سوال جواب	علاّمہ محمد الیاس عطار قادری دامت برکاتہم العالیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
(۴۸)	غیبت کی تباہ کاریاں	علاّمہ محمد الیاس عطار قادری دامت برکاتہم العالیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
(۴۹)	101 مدنی پھول	علاّمہ محمد الیاس عطار قادری دامت برکاتہم العالیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
(۵۰)	وَظیفۃ الکریمۃ	اعلیٰحضرت امام احمد رضا خان	ادارہ تحقیقات باب المدینہ کراچی
(۵۱)	فیضان سنت	علاّمہ محمد الیاس عطار قادری دامت برکاتہم العالیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
(۵۲)	ماہنامہ اشرفیہ	علمائے اہلسنّت	مبارک پور یوپی انڈیا
(۵۳)	المُفرَدات للرّاغب	علامہ راغب الاصفہانی متوفّٰی ۲۰۵ھ	دارالشامیۃ بیروت

www.dawateislami.net

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की त़रफ़ से पेश कर्दा क़ाबिले मुत़ा-लआ़ कुतुब

(शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ)

(1) करन्सी नोट के शर-ई अह़कामात : (अल किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिम फ़ी क़िरत़ासिद्राहिम) (कुल सफ़ह़ात : 199)

(2) विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़) (अल याक़ूतितुल वासित़ह)

(कुल सफ़ह़ात : 60)

(3) ईमान की पहचान (ह़ाशिया तम्हीदे ईमान) (कुल सफ़ह़ात : 74)

(4) मआ़शी तरक़्क़ी का राज़ (ह़ाशिया व तशरीह़ तदबीरे फ़लाह़ो नजात व इस्लाह़) (कुल सफ़ह़ात : 41)

(5) शरीअ़त व त़रीक़त (मक़ालुल उ़-रफ़ाअ बि इ'ज़ाज़ि शर-इ़ व उ़-लमाअ) (कुल सफ़ह़ात : 57)

(6) सुबूते हिलाल के त़रीक़े (तु-रक़ि इस्बाति हिलाल)

(कुल सफ़ह़ात : 63)

(7) आ'ला ह़ज़रत से सुवाल जवाब (इ़ज़्हारिल ह़क़्क़िल जली)

(कुल सफ़ह़ात : 100)

(8) ईदैन में गले मिलना कैसा ? (विशाहुल जीद फ़ी तह़लीलि मुआ़नि-

www.dawateislami.net

क़तिल ईद) (कुल सफ़हात : 55)

(9) राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल (रद्दिल कहूति वल वबाअ बि दा'वतिल जीरानि व मुवासातिल फ़ु-क़राअ) (कुल सफ़हात : 40)

(10) वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के हुक़ूक़ (अल हुक़ूक़ लि तर्हिल उक़ूक़) (कुल सफ़हात : 125)

(11) दुआ के फ़ज़ाइल (अह्सनुल विआ़अ लि आदाबिद्दुआ़अ मअ़हू ज़ैलुल मुद्दआ़ लि अह्सनिल विआ़अ) (कुल सफ़हात : 140)

शाएअ़ होने वाली अ़-रबी कुतुब

अज़ इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُالرَّحْمٰن

(12) किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिम (कुल सफ़हात : 74)। (13) तम्हीदुल ईमान (कुल सफ़हात : 77)। (14) अल इजाज़ातुल मतीनह (कुल सफ़हात : 62)। (15) इक़ा-मतुल क़ियामह (कुल सफ़हात : 60)। (16) अल फ़ज़्लुल मौहबी (कुल सफ़हात : 46)। (17) अज्लल ए'लाम (कुल सफ़हात : 70)। (18) अज़्ज़म-ज़-मतुल क़-मरिय्यह (कुल सफ़हात : 93)। (19,20,21) जद्दुल मुम्तार अ़ला रद्दिल मुह़तार (अल मुजल्लद अल अव्वल वस्सानी) (कुल सफ़हात : 713,677,570)

(शो'बए इस्लाह़ी कुतुब)

(22) ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ (कुल सफ़ह़ात : 160)

(23) इन्फ़िरादी कोशिश (कुल सफ़ह़ात : 200)

(24) तंग दस्ती के अस्बाब (कुल सफ़ह़ात : 33)

(25) फ़िक्रे मदीना (कुल सफ़ह़ात : 164)

(26) इम्तिह़ान की तय्यारी कैसे करें ? (कुल सफ़ह़ात : 32)

(27) नमाज़ में लुक़्मा के मसाइल (कुल सफ़ह़ात : 39)

(28) जन्नत की दो चाबियां (कुल सफ़ह़ात : 152)

(29) काम्याब उस्ताज़ कौन ? (कुल सफ़ह़ात : 43)

www.dawateislami.net

(30) निसाबे म-दनी क़ाफ़िला (कुल सफ़ह़ात : 196)

(31) काम्याब त़ालिबे इल्म कौन ? (कुल सफ़ह़ात : तक़्रीबन 63)

(32) फ़ैज़ाने एह़याउल उ़लूम (कुल सफ़ह़ात : 325)

(33) मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी (कुल सफ़ह़ात : 96)

(34) ह़क़ व बात़िल का फ़र्क़ (कुल सफ़ह़ात : 50)

(35) तह़क़ीक़ात (कुल सफ़ह़ात : 142)

(36) अर-बईने ह़-नफ़िय्यह (कुल सफ़ह़ात : 112)

(37) अ़त्तारी जिन्न का ग़ुस्ले मय्यित (कुल सफ़ह़ात : 24)

(38) त़लाक़ के आसान मसाइल (कुल सफ़ह़ात : 30)

(39) तौबा की रिवायात व ह़िकायात (कुल सफ़ह़ात : 124)

(40) क़ब्र खुल गई (कुल सफ़ह़ात : 48)

(41) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच ह़िस्से) (कुल सफ़ह़ात : 275)

(42) टी वी और मूवी (कुल सफ़ह़ात : 32)

(43 ता 49) फ़तावा अहले सुन्नत (सात ह़िस्से)

(50) क़ब्रिस्तान की चुड़ैल (कुल सफ़ह़ात : 24)

(51) ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ह़ालात (कुल सफ़ह़ात :106)

(52) तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़ह़ात : 100)

(53) रहनुमाए जदवल बराए म-दनी क़ाफ़िला (कुल सफ़ह़ात : 255)

(54) दा'वते इस्लामी की जेलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़ह़ात : 24)

(55) म-दनी कामों की तक़्सीम (कुल सफ़ह़ात : 68)

(56) दा'वते इस्लामी की म-दनी बहारें (कुल सफ़ह़ात : 220)

(57) तरबिय्यते औलाद (कुल सफ़ह़ात : 187)

(58) आयाते क़ुरआनी के अन्वार (कुल सफ़ह़ात : 62)

(59) अह़ादीसे मुबा-रका के अन्वार (कुल सफ़ह़ात : 66)

(60) फ़ैज़ाने चह्ल अह़ादीस (कुल सफ़ह़ात : 120)

(61) बद गुमानी (कुल सफ़हात : 57)

शो'बए तराजिमे कुतुब

(62) जन्नत में ले जाने वाले आ'माल (अल मुत्जरुर्राबेह़ फ़ी सवाबिल अ़-मलिस्सालेह़)

(कुल सफ़हात : 743)

(63) शाहराहे औलिया (मिन्हाजुल आ़रिफ़ीन) (कुल सफ़हात : 36)

(64) हुस्ने अख़्लाक़ (मकारिमुल अख़्लाक़)(कुल सफ़हात : 74)

(65) राहे इ़ल्म (ता'लीमुल मु-तअ़ल्लिम त़रीकुत्तअ़ल्लुम)

(कुल सफ़हात : 102)

(66) बेटे को नसीहत (अय्युहल वलद)(कुल सफ़हात : 64)

(67) अद्दा'वति इल्ल फ़िक्र (कुल सफ़हात : 148)

(68) आंसूओं का दरिया (बह़रुद्दुमूअ़) (कुल सफ़हात : 300)

(69) नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं (क़ुर्रतुल उ़यून)

(कुल सफ़हात : 136)

(70) उ़यूनिल ह़िकायात (मुतर्जम) (कुल सफ़हात : 412)

शो'बए दर्सी कुतुब

(71) ता'रीफ़ाते नह़विय्यह (कुल सफ़हात : 45)

(72) किताबुल अ़क़ाइद (कुल सफ़हात : 64)

(73) नुज़्हतुन्नज़र शर्हे नख़्बतुल फ़िक्र (कुल सफ़ह़ात : 175)

(74) अर-बईनिन न-वविय्यह (कुल सफ़ह़ात : 121)

(75) निसाबुत्तज्वीद (कुल सफ़ह़ात : 79)

(76) गुलदस्तए अ़क़ाइदो आ'माल (कुल सफ़ह़ात : 180)

(77) वक़ा-यतिन्नहूव फ़ी शर्हे हिदा-यतुन्नहूव

(78) सर्फ़ बहाई मुतर्जम मअ़ ह़ाशिया सर्फ़ बनाई

शो'बए तख़रीज

(79) अ़जाइबुल क़ुर्आन मअ़ ग़राइबुल क़ुर्आन (कुल सफ़ह़ात : 422)

(80) जन्नती ज़ेवर (कुल सफ़ह़ात : 679)

www.dawateislami.net

(81 ता 85.86) बहारे शरीअ़त (पांच ह़िस्से, ह़िस्सा : 16)

(87) इस्लामी ज़िन्दगी (कुल सफ़ह़ात : 170)

(88) आईनए क़ियामत (कुल सफ़ह़ात : 108)

(89) उम्महातुल मुअमिनीन (कुल सफ़ह़ात : 59)

(90) सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का इ़श्क़े रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم (कुल सफ़ह़ात : 274)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आशिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आमात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हिफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये "म-दनी इन्आमात" पर अमल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये "म-दनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक-त-बतुल मदीना की शाख़ें

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560

नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621

अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385

हैदराबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदराबाद फ़ोन : 040-24572786

हुब्ली : A.J. मुधोल कोम्पलेक्स, A.J. मुधोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक फ़ोन : 08363244860

मक-त-बतुल मदीना®

दा'वते इस्लामी

फ़ैज़ाने मदीना, श्री कोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया

Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net